संपादक
गणेश खुगशाल 'गणी'

फिर बौड़ी ऐगे बग्वाळ

नरेन्द्र सिंह नेगी

झिलमिल झिलमिल दिवा जगी गैनी
भैला हो भैला चला खेल्योंला
नाचा दौड़ा मारा फाळ
फिर बौड़ी ऐगे बग्वाळ
औंसीकि रात दिवोंकी बरात
उज्याळो आज ब्योला बण्यूं चा
कख लुक्की होली हे जून ब्योली
औ भैर डोला सज्यूं चा
नाचा खेला मारा फाळ
फिर बौड़ी ऐगे बग्वाळ

धाद

साहित्य अर संस्कृति की मासिक पत्रिका

● वर्ष : 2 ● अंक : 4 ● नवम्बर, 2016 RNI No. UTTGAR/2015/63986 ● मोल ₹ : 20/-

संकल्पना : लोकेश नवानी
संस्थापक सम्पादक : सुशीला बडोला
सम्पादक : गणेश खुगशाल 'गणी'
संसाधन : विनोद घनशाला, जगदीश बडोला
जगदीश नेगी
अन्वार : दिनेश रावत
आकल्पन : चन्द्रविजय अरोड़ा
भितरा रेखांकन : लता शुक्ला
कार्टून : आशीष कुमार
सम्पादकीय कार्यालय : धाद
126, विकास मार्ग पौड़ी-246 001
दूरभाष : +91-9412079537
ई-मेल : dhad.garhwali@gmail.com
एक सालै सदस्यता : 220/- रुप्या
दिल्ली सम्पर्क : ए-162/UG-4, दिलशाद कॉलोनी,
दिल्ली-110 095
सम्पर्क :09013285624

पत्रिका मा छप्यां विचार लिख्वारु का अपणा विचार छन, यां खुणै सम्पादक मंडल को राजि होण जरूरी नी छ।
facebook : http ://www.facebook.com/dhaadpatrika

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक सुशीला बडोला द्वारा
प्रगति प्रिंटिंग प्रेस, एजेंसी चौक पौड़ी,
पौड़ी गढ़वाल से मुद्रित कराकर 'धाद' कार्यालय : 126
विकास मार्ग पौड़ी-246 001 से प्रकाशित.
संपादक : गणेश खुगशाल 'गणी'

जख खुशि तख बग्वाळ

हमारी रौंस अर हौंस को पर्व छ बग्वाळ। हमारी रौंस ही हमुतैं उत्सवधर्मी बणौंद जख उत्सव की बात होली तख द्यू जरूर बळेला। जख द्यूळ बळ्याया तख लोकोत्सव होया। गढ़वाळ मा त जख हंसी खुशी तखि बग्वाळ यां को अंदाज यां से बि लगये सकेंद, कि दिवाळी बेशक रावण वध का बाद मर्यादा पुरुषोत्तम राम की अयोध्या लौटणै खुशी का मनयेंदी। धनतेरस का दिन ज्यूंरा (यमराज) की पूजा कैरी अपघात मृत्यु से बचणौ उपाय का बारा मा बळ्यां द्यू होन, ज्यू ज्यान का उपचार विज्ञान का द्यो धन्वंतरि का जल्मणा द्यू होन, चौदस की ब्यखुन नरकासुर बध की खुशी का द्यो होन, समुद्रमंथन मा लक्ष्मी का प्रगट होण पर वींकी पूजा को बळ्यां द्यू होन, गोवर्धन पूजा को बळ्यो द्यू होन, भै बैण्यूं का स्नेह मा बळ्यां द्यू, चा केदारनाथ मा भत्वा का टैम की पूजा को द्यू हो चा गढ़वाळ का भड़ु को लाम जीती घर बौड़ु होणा टैम पर बळ्यां द्यू होन, ये द्यू अंधेरू छंट्यांदा अर मन की रौंस तैं आपस मा बंटदा मनख्यूं की खुशी का प्रमाण छन। अर जख खुशि तख बग्वाळ।

यूं द्यू को उज्याळो मनखि, बित्यूं बगत अर संस्कार की संस्कृति तैं जोड़णों काम करद। यो उज्याळो, मनखि का संघर्ष, इतिहास का बदलौ अर संस्कृति का विकास तैं चमकाणौं काम करद याने ज्योति मनख्यात को पैलो तीर्थ होंद।

गढ़वाळ मा बग्वाळ सिरफ द्यू बाळी की ही नि मनौदा यख साख्यूं बिटि कातिका मैना की औंसी की रात अर इगास की रात रांका बाळी भैला बि खेलदन। बगत का दगड़ ये उज्याळा मा बि भौत बदलौ ऐ अब त चौ छोड़ि चमच्याट रौंद होयूं अर ये चमच्याट की वजै से दिवळि, दिवळो ह्वेगे पर गढ़वाळ का घर गौं मा अज्यूं बि बग्वाळी को तैको जरूर चढ़द, बग्वाळ की ज्व रस्याण छ व जिकुड़ा मा बर्सी भावनौ की छ यानै पैणा पकाणौ, पौणा पौछाणौ अर पैणा खाणौ ज्यू ही बग्वाळ छ। यि पैणा यांकै पैणा छन कि जौंको अबाजु छ पैणा तख बि पौंछदन अर वो बि बग्वाळ मा शामिल होंदन। दगड़ै गौड़ि बाच्छ्यूं का सिंगु पर तेल लगैकि वूं माळा पैरै कि अर तब पींडु खलाणै परम्परा आज बि चलणी छ। इगास बग्वाळ तक गढ़वाळ मा खेती को काम बि पूरू ह्वे जांद यांलै बग्वाळ खुणि पशुधन तैं पुजणै अनूठी परम्परा छ। जो कबि हमारा जीवन को आधार छौ खेति बि अर गोर बाछरु बि।

गढ़वाळ मा जख आनन्द तख बग्वाळ। यख बग्वाळ एक मिथ ह्वेगे खुशी को। याने बग्वाळ आणा पखाणौ मा बि खूब औंद जखबि हैसण-खेलणा छ्वटा बड़ा मौका मिली तखि बग्वाळ मनौणु शुरू यख तक कि चार दगड़या मीला अर सि हैसण खेलण बैठा त बग्वाळ मनौणा छन। मतलब हंसि-खुशि अपणा आप मा बग्वाळ छ अर बग्वाळ ही हंसी खुशी।

• गणेश खुगशाल 'गणी'

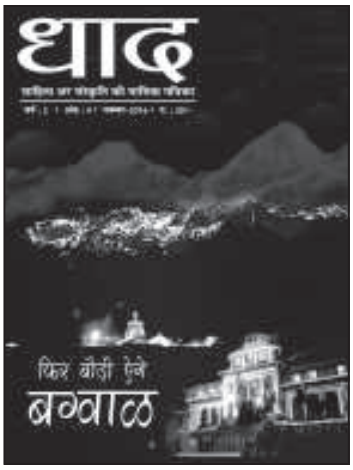

ये मैने धाद

- जख खुशि तख बग्वाळ 3

बग्वाळ

- गढ़वाळ मा खेलेंदन चार बग्वाळ – डॉ० अजीत पंवार 5
- बग्वाळी का दिन – ओम बधाणी 9
- इगास का भैलौं की धाद – गिरीश सुन्दरियाल 11
- मंगसीर की मैनै बग्वाळ – प्रेम पंचोली 13
- उत्तराखण्ड का बग्वाळ की परंपरा – राजेश जोशी 15

कविता

- छ्वीं–बत्त, घुघुती–मौसी, कागा–रैबार्‌या, घिंड्वा–ब्वाडा, घिंडुड़ि–बोडी, हिलाँसि–बौ, सुरड़ि–स्याळि, मैर–धवड्‌या – गिरीश सुन्दरियाल 17

इतिहास

- गुलेथ गौं कि व्यथा अर कथा – कमल रावत 23

विज्ञान

- सोलर कुकर यानि घामल पकाओ खाणो – डॉ० ईशान पुरोहित 28

श्रद्धांजलि

- छोटि उमर को बड़ो जीवन पै अश्वनी कोटनाळन – डॉ० सम्पूर्ण सिंह रावत 32
- साहित्य, संस्कृति, समाज, लैंसडौन अर अश्वनी – डॉ० सतीश कालेश्वरी 34

पुराणि कलम

- स्वाग–भाग – दुर्गा प्रसाद घिल्डियाल 38

खबरसार

- पौड़ी को गढ़ महोत्सव – वीरेन्द्र पंवार 44

इथै उथै कि

- लैनु मा य लैन 48

गढ़वाळ मा खेलेंदन चार बग्वाळ

डॉ० अजीत पंवार

'तमसो मा ज्योर्तिगमय' वेदवाक्य क सन्देश देण वाळी बग्वाळ पूरा देश मा कार्तिक कृष्ण अमावस्या क दिन बड़ा हर्षोल्लास क दगड़ी मनाये जांद। ये दिन भगवान राम चौदह वर्षों क वनवास पूरा करिक अर रावण को संहार करिक आयोध्या बोड़ी छा। वैका बाद राम जी को राज्यभिषेक कार्तिक की अमावस्या क दिन महर्षि वशिष्ठ का हाथ सि ह्वे छौ। अपड़ा माराज क राज्यभिषेक अवसर पर प्रजा न अपड़ा-अपड़ा घरों मा द्यू जगैन अर स्वादिष्ट व्यंजन बणैन। तख बिटी य परम्परा चलद-चलद आज यख तक पौछिगे। भारतवर्ष क दगड़ा-दगड़ि अन्य देश मा बि बग्वाळ बड़ा धूमधाम से मनौंदन गढ़वाल मा बग्वाल कि छ्वीं कुछ निराली छ। यख एक नि चार-चार बग्वाळ ख्यल्दन। कार्तिक बग्वाळ, राज बग्वाळ, इगास बग्वाळ अर मार्गशीर्ष बग्वाळ। यूं चार बग्वाळ को महत्व बि अपड़ी जगह बराबर छा। सब अपड़ा-अपड़ा स्थान पर अपड़ी-अपड़ी कथा क दगड़ी उपज्या छ। कथा जिन्दा छ, ये वास्ता बग्वाळ ख्यलण लग्यां। जै दिन कथा बिसरी जाला, समझा वै दिन हम बग्वाल बि बिसरी जाला।

राज बग्वाल

टिहरी जनपद मा कार्तिक बग्वाळ सि एक दिन पैली 'राजबग्वाळ' ख्यल्ण की अनोखी परिपाटी छा। यीं बग्वाळ साणी खल्याण कु अधिकार केवल डोभाल जाति तैं रजा सि मिली छौ। यीं बग्वाल मा राजपरिवार क लोग अर ऊंका खादानी दीवान शामिल होदा छ। कि याक डोभाल जाती क भड़ न रजा क आदेश पर अपड़ा सीमा की रक्षा खातिर लड़ै जितिक आई। रजा न जीत क खुशी मा वेतैं पांच गौं भेंट दिनी अर ऊंका जाति क लोगू तैं अलग बग्वाळ ख्यलण कु अधिकार दिनी। डोभाल जाति क लोग यीं दीवापली तैं कार्तिक दीपावली सि एक दिन पैली ख्यल्दन।

इगास बग्वाळ

कार्तिक बग्वाळ क ठीक ग्यारह दिन बाद आकाश बग्वाळ ख्यल्दन जै तैं आंचलिक भाषा मा 'इगास' बोल्दन। कार्तिक बग्वाल (अमावस्या) क ठीक ग्यारह दिन बाद बारवां दिन एकादसी पड़दन ये वास्ता यीं बग्वाळ तैं इगास बोल्दन। एकादसी तैं ग्यारस बि बोल्दन ये वास्ता ग्यारस को

जन्म : 18 जनवरी, 1981
कार्य : प्राध्यापक लोक कला एवं संस्कृति निष्पादन केन्द्र
सम्प्रति : हे०न०ब० गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल)
मो० : 09897706374, 757903707

अपभ्रस इगास ह्वे सकद। यीं बग्वाळ क पिछनै एक जनश्रुति छ कि अज्ञात वनवास क बाद पाण्डव मा चार भै घौर बौड़ीगी पर भीम कखि लड़ै-भिड़ै मा फंसगि। ग्यारह दिन बाद भीम घौर बौड़ी अर तबरि बटि आज तक इगास बग्वाळ ख्यले जांद। हैंकि मान्यता छ कि टिहरी माराज क सेनापति मधो सिंह भण्डारी एक बार हूणों क दगड़ी लड़ै करदि-करिद भौत अगनै चलि गै अर कार्तिक बग्वाळ तक घौर न बोड़ी। लोगुन यी घटना तैं अशुभ सोचिक बग्वाळ नि मनाई। कुछ दिन बाद जब मधो सिंह भण्डारी लड़ै जितिक आई त यीं खबर तैं टिहरी रियासत पौछदी-पौछदी ग्यारह लैगिन अर तबरि बिटि इगास बग्वाळ आज तक छ चलण लगी अर तबरि बिटी यीं घटना क दगड़ी यु लोक गीत जुड़िगी—

लगभग 15-20 फिट ऐंच पक्वड़ा तैं बंधे जांद अर ऊं छिल्ला पर आग लगये जांद फिर जैं मनखि पर द्यबता औंदू वू ढाऊ ऐंच चढ़िक पकोड़ा तैं प्रसाद क रूप मा लोगू तैं देंदन। यैका बाद चौक मा लोग तांदी अर गीत लगोदा। मार्गशीर्ष बग्वाल क पछनै एक और कथा छ जो इगास बग्वाळ क दगड़ी बि जुड़ी छ कि मधो सिंह भण्डारी अपड़ा सीमा की रक्षा कि खातर तिब्बत सीमा पर थै जायूं अर बग्वाळ क दिन घौर नि ऐ सकी। फिर लौगुन बग्वाळ नि खेली अर वैकीं औणा कि खबर एक माह पौंछी त लोगुन एक माह बाद बग्वाळ खैली। नागपुर पट्टी मा भैला अर आधौं खेलिक बग्वाळ मनोदन। पट्टी को क्षेत्र ऋषि अगस्त्य अर तुगंनाथ मन्दिर क द्यूका (अरक्षित क्षेत्र) मने जांद। युं द्यवता कि पुजा करिक बग्वाळ को आयोजन होंद। अगस्त्य मुनि सि जुड़ी मान्यता बर्त (समुद्र मंथन को प्रतीक) अर तुगंनाथ कि आधौं बोल्दन। यीं बग्वाळ द्यबता क शुभ स्थान कि सफै करिक वख पूजा शुरू होंदी।

बार ऐन बग्वाळी माधोसिंह, सोल ऐन सराध माधोसिंह।
सबी ऐन घर माधो सिंह, मेरो माधो नी आयो माधोसिंह।
दाळ दळीं रैगे माधोसिंह, चौंळ छड़यां ही रैन माधोसिंह।
त्वै जागी रैने माधोसिंह, तेरी राणी-बोराणी माधोसिंह।
तेरी ब्बै रोंदी रै माधोसिंह, मेरो माधो नी आयो माधोसिंह।

मार्गशीर्ष बग्वाळ

कार्तिक बग्वाळ क ठीक याक माह बाद मार्गशीर्ष बग्वाळ ख्यल्दन। यीं बग्वाळ तैं मार्गशीर्ष माह मा ख्यलण क वास्ता मार्गशीर्ष बग्वाळ बोल्दन। स्थानीय बोली मा यीं बग्वाळ तैं रिखबग्वाल बि बोल्दन। यीं बग्वाळ क बरामा हमारा बड़ा-बुजर्ग बोल्दन कि गढ़वाळ का सेनापति कि जीत खबर एक मैना बाद पौछी त तबरि बटि य बग्वाळ एक मैना बाद ख्यलण कि परिपाटी शुरू ह्वे। यी घटना क पछनै एक कथा छ। य बात सन 1800 कि छ जबरि गोरखाओं न गढ़वाळ पर धावा बोली छौ। गोरखाओं क अत्याचार सि जनता त्रस्त ह्वेगी छौ। जनता क दु:ख-पीड़ा दैखिक गढ़वाळ नरेश माराज प्रद्युम्न शाह न 1803 में गोरखाओं पर आक्रमण बोलि दिनी। कार्तिक बग्वाळ तक बि माराज घौर नि बोड़ी त टिहरी रियासत (अबरि उत्तरकाशी अर टिहरी) क लोगुन बग्वाळ नि ख्येली। एक मैना बाद जब माराज गोरखाओं तैं सीमा सि बैर खदेड़िक रियासत पौछी त लौगुन बग्वाळ मनाई। तबरि बटि य परिपाटी आंज तक लोग छन निभोण लग्यां।

यीं बग्वाळ मा आज बि विशेषकर रवांई, जौनपुर, जौनसार व बावर क्षेत्रों मा स्वाळा, आरसा, पूरी-पकोड़ा आदि पकवान बणौण अर चूड़ा कूटण कि बि परम्परा छ। यीं बग्वाळ मा से बनाल पट्टी क गैर गौं मा देवलांग को त्यार बड़ो धूम-धामहोदू। देवलांग त्यार साठी पासांई तोकों क द्वारा ढोल-नगाड़ों क दगड़ि एक दानू डाळो उखड़िक भगवान रघुनाथ मन्दिर क चौक मा रखदन। बामण वे कु टिकु-पिठाई करकि वेतैं चौक क मध्य स्थापित करै देंद। यां क बाद हरिबेल क छल्लों तैं वो ढाऊ क मथि चढ़िक बाधी दैना। अमावस्या बग्वाई क दिन आस-पास गौं क लोग देवदार क फांगा लैक वे ढाऊ कि परिक्रमा अर पुजा-अर्चना करदन। वैका बाद रात भर लोग चौक मा तांदी, रासों, पांडो और मंडाण लगौंदन। सबेर वे ढाऊ तैं अग्नि दी जांदी। जो बुराई पर अच्छाई को प्रतीक छ।

मार्गशीर्ष बग्वाळी क दिन उत्तरकाशी क डुण्डा ब्लाक क धनारी पट्टी क पुजार गौं मा स्थित सिद्धेश्वर मन्दिर क प्रांगण मा दिंलग त्यार हर्षोल्लास से मनोदा। ये मेळा मा

पुजार गौं, दड़माली, गवांणा मिलिक आयोजित करदान। ये त्यार कि पिछने जनश्रुति छ कि राजशाही क दौर मा दड़माली गौं कु निवासी कब्बू जैंतवाण तैं रजा न सजा दिनी कि ये तैं बांज क लखड़ा क भितर फसै द्या। फिर वैन भगवान को ध्यान करि अर वचन दिनी कि अगर मि यीं संकट सि मुक्ती मिली जाली त मा तेरी बग्वाळ मनोला और तबरि बटि या बग्वाळ छ होण लगी। मार्गशीर्ष क दिन गौं क लोग बण जांदा अर वख बटि एक ढाऊ कटिक ल्योदन अर फिर मन्दिर क चौक म रखिक रात भर कीर्तन करदान। रतब्यांणी वे ढाऊ तै चौक बीच खड़ा करदान वे लकड़ी क ऐच छिल्ला बांधी दैन अर छिल्ला पर पक्वड़ा रखदन। लगभग 15-20 फिट ऐंच पक्वड़ा तैं बंधे जांद अर ऊं छिल्ला पर आग लगये जांद फिर जैं मनखि पर द्यबता औंदू वू ढाऊ ऐंच चढ़िक पकोड़ा तैं प्रसाद क रूप मा लोगू तैं देंदन। यैका बाद चौक मा लोग तांदी अर गीत लगोदा। मार्गशीर्ष बग्वाल क पछनै एक और कथा छ जो इगास बग्वाळ क दगड़ी बि जुड़ी छ कि मधो सिंह भण्डारी अपड़ा सीमा की रक्षा कि खातर तिब्बत सीमा पर थै जायूं अर बग्वाळ क दिन घौर नि ऐ सकी। फिर लौगुन बग्वाळ नि खेली अर वैकी औणा कि खबर एक माह पौंछी त लोगुन एक माह बाद बग्वाळ खैली। नागपुर पट्टी मा भैला अर आधौं खेलिक बग्वाळ मनोदन। पट्टी को क्षेत्र ऋषि अगस्त्य अर तुगंनाथ मन्दिर क द्यूका (अरक्षित क्षेत्र) मने जांद। युं द्यवता कि पुजा करिक बग्वाळ को आयोजन होंद। अगस्त्य मुनि सि जुड़ी मान्यता बर्त (समुद्र मंथन को प्रतीक) अर तुगंनाथ कि आधौं बोल्दन। यीं बग्वाळ द्यबता क शुभ स्थान कि सफै करिक वख पूजा शुरू होंदी।

'बारा मैना छन बारा त्यार हमारा गढ़वाळ'। या ओखण हमारा बग्वाळ त्यार पर बि ठीक बैठदन। ये गढ़वाळ मा जब बि क्वे बौत दिन बाद घौर बोड़दू त वै क औणा को स्वागत मा दीपक जळौण सि करदान। वरनारैण जब ब्योली लैण ओन्दू त वैकु स्वागत बि दीपक लेक करे जांदू। हमारा गढ़वाळ मा जब बि क्वे भड़ रण जिति कि ओंदू त वैकि खुशी मा दीपक जलैक बग्वाळ मनोणा कि परम्परा छ वू चा मधो सिंह भण्डारी ह्वे, कप्फु चौहान ह्वे, हरि हिडवांण ह्वे लोदी रिखोळा और बि यना बीर छन जौन अपड़ा सीमा कि रक्षा कि खातर कई बार लड़ै लड़ी अर वींक जीत खुशी आज बि बग्वाळ मनोण कि रीति छ। ये वास्ता लोग दुनिया मा जखकखि काम बि करदन पर बग्वाळ मनोण अपड़ा घौर ओदनकिलै कि घौर बोड़ण कि रिति छ बग्वाळ। इगास (हरिबोधिनी) अर मार्गशीर्ष कि बग्वाळ मा पशुओं कि पूजा होंद। बग्वाळ क दिन लोग अपड़ा-अपड़ा पशुओं कि विशेष पूजा करदान। वूं क वास्ता कोदा, झगोरा, जौ अर गुड़ क पीडो बणैंक ऊं तैं खिलौदन। खासकर बैल क सींग पर तैल लगैक चांदी कि सिगौटी चढ़ोदन अर ऊंकी पूजा करदान। यीं रिवाज क पछनै मान्यता छ कि अब तक यूं पशुओं तैं हर्यू-भर्यू घास खाई पर अब तीन-चार महीना तक रूखु-सुखु मिलालू त हम तैं क्षमा करद्या।

भैला खैला भैला

बग्वाल मा शैद ही क्वे क्षेत्र या गौं होलू जख भैला न खेल्दा होला। भैला नृत्य शैली बि हमारी गढ़वाळ कि एक नृत्य शैली छ। भैला को एक अर्थ ढेला बि च। माटा को ढेला अर वैं ढेला फोण तैं ढिकरु होदूं, गुड़ को ढेला, ढेलु बांदर आदि कई शब्द हमारा रोज जिन्दगी मा बणदन अर हमारी बोली-भाषा तैं समृद्ध करदान। जब क्वेहें ढाऊ क छिल्ला फड़िक वे तैं कठ्ठा करिक बाबल क घास नै बाधन त वे तैं बोल्दन भैला। सबसि पैलू भैला अपड़ा इष्ट द्यब्यता क नौं सि बडोणादन। बग्वाळ मा प्रत्येक बच्चा क नौं सि भैला बणौण कि परम्परा छा, वु छोटू ह्वे च बड़ू। भैला लेक सबि गौं क लोग एक बड़ा पुगड़ा चली जांद अर भैला पर आग लगैकि वेतैं घुमांदन। भैला क दगड़ी कई लोग कलाबाजी करदन जो देखण मा काफी रोमांचकारी लगदन। कुछ छोटा निन्याल भैला कि डर सि कपड़ा को मुगरा बणोंदन अर वै पर आग लगैक घुमौंदन। यी पूरा दृश्य मा जनानी क शामिल होण कि परिपाटी नी छा अर सि दुरु बटि तमाशा देखिक नृत्य करदन, बोल्दन-

सुख करी भैलो-धर्म को द्वारी, भैलो।
धर्म क खोळी, भैलो-जै जस करी भैलो।
सूना को संगाड़ के, भैलो-रूपा को द्वारदे भैलो।
खरकदे गौड़ी भैस्यूं को, भैलो-खोड़ दे बाखरियों को भेलो।

घौर बोड़ा त बग्वाळ

'बारा मैना छन बारा त्यार हमारा गढ़वाळ'। या ओखण हमारा बग्वाळ त्यार पर बि ठीक बैठदन। ये गढ़वाळ मा जब बि क्वे बौत दिन बाद घौर बोड़दू त वै क औणा को स्वागत मा दीपक जळौण सि करदान। वरनारैण जब ब्योली लैण ओन्दू त वैकु स्वागत बि दीपक लेक करे जांदू। हमारा गढ़वाळ मा जब बि क्वे भड़ रण जिति कि ओंदू त वैकि खुशी मा दीपक जलैक बग्वाळ मनोणा कि परम्परा छ वू चा मधो सिंह भण्डारी ह्वे, कप्फु चौहान ह्वे, हरि हिडवांण ह्वे लोदी रिखोळा और बि यना बीर छन जौन अपड़ा सीमा कि रक्षा कि खातर कई बार लड़ै लड़ी अर वींक जीत खुशी आज बि बग्वाळ मनोण कि रीति छ। ये वास्ता लोग दुनिया मा जखकखि काम बि करदन पर बग्वाळ मनोण अपड़ा घौर ओदनकिलै कि घौर बोड़ण कि रिति छ बग्वाळ।

पशुओं कि पूजा

इगास (हरिबोधिनी) अर मार्गशीर्ष कि बग्वाळ मा पशुओं कि पूजा होंद। बग्वाळ क दिन लोग अपड़ा-अपड़ा पशुओं कि विशेष पूजा करदान। वूं क वास्ता कोदा, झगोरा, जौ अर गुड़ क पीडो बणैंक ऊं तैं खिलौदन। खासकर बैल क सींग पर तैल लगैक चांदी कि सिगौटी चढ़ोदन अर ऊंकी पूजा करदान। यीं रिवाज क पछनै मान्यता छ कि अब तक यूं पशुओं तैं हर्यू-भर्यू घास खाई पर अब तीन-चार महीना तक रूखु-सुखु मिलालू त हम तैं क्षमा करद्या।

बाबल घास

बाबल घास बटि ही बग्वाळ शब्द उत्पति ह्वे छौ। देखे जावा त बाबल घास को प्रयोग हमारा शीर्ष क काम मा होदू रोदू खासकर रस्सी की जगह काम ओदन। बग्वाळ मा भैला रिगुण अर रस्सा-कस्सी मा बाबल घास को प्रयोग होंद ये वास्ता बग्वाळ मा बाबल घास को बड़ु महत्व छ।

'तमसो मा ज्योर्तिगमय' वेदवाक्य क सन्देश देण वाळी बग्वाळ पूरा देश मा कार्तिक कृष्ण अमावस्या क दिन बड़ा हर्षोल्लास क दगड़ी मनाये जांद। ये दिन भगवान राम चौदह वर्षों क वनवास पूरा करिक अर रावण को संहार करिक आयोध्या बोड़ी छा। वैका बाद राम जी को राज्यभिषेक कार्तिक की अमावस्या क दिन महर्षि वशिष्ठ का हाथ सि ह्वे छौ। अपड़ा माराज क राज्यभिषेक अवसर पर प्रजा न अपड़ा-अपड़ा घरों मा द्यू जगैन अर स्वादिष्ट व्यंजन बणैन। तख बिटी य परम्परा चलद-चलद आज यख तक पौछिगे। भारतवर्ष क दगड़ा-दगड़ि अन्य देश मा बि बग्वाळ बड़ा धूमधाम से मनौंदन गढ़वाल मा बग्वाल कि छ्वीं कुछ निराली छ। यख एक नि चार-चार बग्वाळ ख्यल्दन। कार्तिक बग्वाळ, राज बग्वाळ, इगास बग्वाळ अर मार्गशीर्ष बग्वाळ। यूं चार बग्वाळ को महत्व बि अपड़ी जगह बराबर छा। सब अपड़ा-अपड़ा स्थान पर अपड़ी-अपड़ी कथा क दगड़ी उपज्या छ। कथा जिन्दा छ, ये वास्ता बग्वाळ ख्यलण लग्यां। जै दिन कथा बिसरी जाला, समझा वै दिन हम बग्वाल बि बिसरी जाला।

दिलंक त्यार

दिलंक कु त्यार बग्वाळ क दिन मनोदन। यु रिवाज खासकर उत्तरकाशी मा प्रसिद्ध छ अर टिहरी कुछ क्षेत्र मा मनोदन।

आज पलायन होड़ कि परम्परा बड़ि तेजी सि बढण लगी। गौं क सबि लोग अपड़ा विकास क खातर सैर पौंछि गैंन। गौं मा रिता कुड़ा अर बुड-बुड्या छन र्या जु कैकि ओणा आस मा छन जग्यां अर सोचण छन लग्या-यीं बग्वाळ मा को भैलू रिंगालू, को स्वाला-पक्वड़ा पकालो, कख दिलंक होलू, को बल्दा क सींग पर तैल लगालो अर चांदी कि सिगौटी पैरालो। ये बुड्या कि सोचणू आज हमारा सवाल बणीगि। यन सवाल आज हमारी बोली-भाषा अर संस्कृति क दगड़ि सबसि अगनै खड़ा छ। क्य औणा वाळी पीढ़ी हमारा यूं रंगीला त्यार तै अपणाली? क्य हमारा थौ-मंडाण मा नाचली? यन सावल क जवाब क खातर ही एक नै साहित्य अर संस्कृति को जन्म होदू। ❑❑

बग्वाळी का दिन

ओम बधाणी

चखुला पोथलों कि चार मनखी भि अपणा जीवन काल मा लम्बी यात्रा करदु, सुख-दु:ख जस-अपजस कि यात्रा, कुछ खोण कुछ पौण कि यात्रा, जीवन ज्यूण कि यात्रा अपणा चौतरफी होण वळा सामजिक, सांस्कृतिक परम्परों क बदलौ क साक्षी होण अर भोगण कि यात्रा। य सचै छ कि गति जीवन छ अर विराम मौत, अब यदि गति होली त बदलौ भि होला अर बदलौ तैं स्वीकार कर्नू ही जीवन छ पर यु सच छ कि हमारा काल मा होण वळा बदलौ केवल परम्पराओं क बदलौ नि छन बल्कि हम संक्रमण काल मा छौं जब हम अपणी आध्यात्मवादी विरासत छोड़िक पश्चिमी भौतिकवादी संस्कृति तैं अपनौणा छौं, जख भावना अर संवेदना क वास्ता क्वी जगा नी बस दिखावा महत्वपूर्ण छ। खैर आज यख बात करदौं हमारी एक पौराणिक परम्परा कि जो प्रतीक रूप से सामाजिक सहभागिता प्रेम अर आध्यात्म को अनूठु उदाहरण छ, उ छ "बग्वाळी को त्यौहार" उत्तरकाशी जिला का चिन्यालीसौड़ ब्लॉक अर ये क्षेत्र सि जुडयां टिहरी जिला मा बग्वाळी कि अपणी विशेष परम्परा छन, उन त गौं खाली ह्वे गिन पर जो लोग गौं मा छन वूंकि थोड़ी भौत मात्रा मा परम्परा आज भि ज्यूँदि छन। मै भि यखि को रैबासी छौं त मेरी भि खूब खेलीं छ गौं कि बगवाळ, हम बग्वाळी को भौत पैली बिटी जग्वाळ करदा छा वबारी ढुंगा पठाळी क कूड़ा होंदा त कूड़ौं कि रंगै पुतै काफी दिनु पैली बिटी सुरु ह्वे जांदी छै, बग्वाळी मा घर क बड़ा घर औंदा था मिठै पटाका लत्ती कपड़ि औंदि थै त इम सभ्भि बच्चों कि टक लगीं रंदि थै बग्वाळी पर, गौं का सभ्भी परिवारु क नौकरी पैसा, काम क वास्ता भैर देस जायां मणस्यारु घर औण लगदा, ध्याणी मैत ऐ जांदी पुरु परिवार कठ्ठु ह्वे जांदो त घरु मा चैल-पैल भि खूब ऐ जांदी, हम गौं फंडा क झुलाण्या मट्याण्य फट्याँ झुल्ड़ौं वळा बच्चों तैं साफ सुतरा सुन्दर नया-नया कपड़ौं वळा देसी (गौं से भैर रण वाळा गौं क लोग) दूसरा ग्रह क प्राणी लगदा था, सबि लोग मिळ्दा त गौं मा रौनक ऐ जांदी खोळा-खोळौं म कछ्ड़ी जम्दी, फिर सभ्भी मणस्यारू जंगळु बिटी कुळैं क छिल्का ल्यौंदा अर घर घरु मा भैला बणदा भैलू भि ठोकी बजैक देखे जांदू कि आसानी सि टूटो ना खूब मजबूत बणाये जांदो, बग्वाळी क दिन क वास्ता लाखड़ा कट्ठा करे जांदा। लिप्यां पुत्यां कूड़ा, साफ सुथरा बाटा घाटौं न गौं कि सकल ही बदळी जांदी गौं ब्योली

जन्म : 8 जुलाई, 1974
कृति : कुरमुरी (कविता)
सम्मान : गढ़ गायक सम्मान
लोक संस्कृति सम्मान
उत्तराखण्ड राज्य
आंदोलनकारी सम्मान,
उत्तरकाशी गौरव-2013,
यूफा सम्मान-2013
मो० : 9412420792.

कि चार सर्जी जांदू, बाजगी दिदा अपणा ढोल दमौं सल्योंण मा मिस्यै जांदा अर फेर ऐ जांदू बग्वाळी को दिन, बग्वाळी को त्यौहार तीन दिनु तक चळ्दु छोटी बगवाळ, बड़ी बगवाळ अर बलराज। बग्वाळी क दिन सुबेर बिटी ही तैका चढ़ी जांदा अर खाण पेण कि मौज रंदी, बाजगी लोग गौं क सब्बि घरु मा बढ़ै, बाळेश्वर देवता, देवी, भैरू आदि देवतौं को बाजू बजौन्दा बधै देंदा अर बदला मा ऊँ तैं पुड़ी प्रसाद, मिठै, बरु मिळ्दु, ब्याखुनी बेर मन्डाण मा बाजगी ढोल बजैक सब्यों तैं कठ्ठु करदू गौं क सभी मणस्यारू बच्चा अपड़ा-अपड़ा भैला लीक कठ्ठा ह्वे जान्दा फिर हौंन्डको जगौंदा हौंण्डका कि आग मा सभी अपड़ा-अपड़ा भैला जगौन्दा अर तब सुरु होंदु भैलौं को खेल भैलौं कि लडै, य भैलौं कि लड़ै दुरू बिटि यनि लगदि थै जनु तारौं को नाच चळ्नु हो आसमान मा, जैकू भैलू टूटी जांदू ऊ मंडाण मा नाचण लगदु अर धीरा-धीरा सभी भैला खेलिक मंडाण म लगी जान्दा, गजब को आनन्द छौ स्यु जब सुबेर चार बजी तक हम नाचदी रंदा, गौं कि जनानी अर नौनी अलग-अलग अपड़ा दगड़ा का हिसाब सि छोपती लांदा खूब नाचदा, बड़ी बग्वाळी को ढोल बाजणा क दगड़ा सभी घरु-घरु बिटी जग्याँ भैला लीक सारी म औंदा अर वख भैला खेले जांदा, काफी देर तक भैलौं को खेल चळ्दो फेर सभी एक चौक म कठ्ठा होंदा अर कसिक मंडाण लगदु, यो कार्यक्रम व्याण्सर तक चळ्दु, अब ऐ जांदू बलराज को दिन यो दिन सबसी जादा मजा को होंदु थौ, बलराज क दिन गौं क हर घर बिटी बाबलु कठ्ठु करे जांदू जु गौं कि घस्यारि बेटि ब्वर्यों को बग्वाळी क वास्ता पैली बिटी कठ्ठु कर्युं रंदु थौ अर ये बाबला को एक भौत बड़ू रस्सा तयार करे जांदू जैतैं बर्त बोले जांदू अर यो आयोजन बरत्यातोड़ु बोले जांदु, बरती तैं गौं क धारा मा लिजैक स्नान करैक पवेत्र करे जांदू फिर पूजा पिठैं कारिक वीं बरती लीक सब सारी म औंदा वख द्वी दल बणदा अर खैंचा ताणी (रस्सा-कस्सी) को खेल होंदो। देर साम तक यो खेल चळ्दु अर जब बर्त टूटी जांदी त टुट्यां टुकड़ौं लीक सभी चौक मा कठ्ठा होंदा जख बरती क टुकड़ौं कि मदद सि ऊँची कूद (हाई जम्प) आदि कई प्रकार का खेल होंदा पर यूँ खेलु मा सबसी जादा मजेदार होंदो बळ्द्या ताण याँमा द्वी लोग बळ्द बणदा था अर तब खैंचा-ताणी होंदी थै हमारी हंसी-हंसीक खारी पलटे जांदी थै बरती को थोड़ा-थोड़ा बाबलु सभी प्रसाद क रूप मा अपड़ा-अपड़ा घर ली जांदा, पूरी रात यो आयोजन चळ्दु थौ अर यांका साथ ही बग्वाळी को आयोजन पूर्ण ह्वे जांदू वबारी पटाखा आज कि तुलना मा भौत कम होंदा था त आज कि चार प्रदूसण भि नि होंदु छौ, जैकी बगवाळ नि होंदी वैका घर पैणु दिए जांदु, कुल मिलैक त्यौहार सामजिक सहभागिता प्रेम स्नेह को प्रतीक छौ। पुरु गौं मिलिक त्यौहार मनौंदो जो आज क समय मा नि दिखेंदु अब पलायन क कारण गौं खाली ह्वेगिन। गौं मा थोड़ी भौत लोग बच्यां छन, ढोली भि कखी-कखी ही बच्यां छन। इना मा परम्परा बस ठेळन वाळी बात हुईं छन। पर फिर बि गौं मा अज्यूं भि मिली जुलिक त्यौहार मनेणा छन, पर सैरु कस्बों कि बात करे जाओ त त्यौहार कब ऐक चली भि गी पता ही नि चळ्दु। कुड़्यों जजलौण्या पटाखौं कि भड़कताळ्यौं मा छोपति गीत हरचि गिन, भांति-भांति कि मिठै त मिळ्नी छन पर त्यौहार कि व मिठास नी बर्ची, मनखी अपड़ा घरू मा ग्वाड़यैक रैगे, य जादा सि जादा अपड़ा खास रिस्तादारू तक सीमित ह्वेगी, हम बस अफु तक ही सीमित ह्वेग्यौं समाज क साथ मिलि जुलि हैंसि खेलि त्यौहार मनौणु जनु सुपिनु ह्वेगि। पर बात फिर वै छ कि गति छ त बदलौ त होला हि।

❑❑

य सचै छ कि गति जीवन छ अर विराम मौत, अब यदि गति होली त बदलौ भि होला अर बदलौ तैं स्वीकार कर्नू ही जीवन छ पर यु सच छ कि हमारा काल मा होण वळा बदलौ केवल परम्पराओं क बदलौ नि छन बल्कि हम संक्रमण काल मा छौं जब हम अपणी आध्यात्मवादी विरासत छोड़िक पश्चिमी भौतिकवादी संस्कृति तैं अपनौणा छौं, जख भावना अर संवेदना क वास्ता क्वी जगा नी बस दिखावा महत्वपूर्ण छ। खैर आज यख बात करदौं हमारी एक पौराणिक परम्परा कि जो प्रतीक रूप से सामाजिक सहभागिता प्रेम अर आध्यात्म को अनूठु उदाहरण छ, उ छ "बग्वाळी को त्यौहार" उत्तरकाशी जिला का चिन्यालीसौड़ ब्लॉक अर ये क्षेत्र सि जुडयां टिहरी जिला मा बग्वाळी कि अपणी विशेष परम्परा छन, उन त गौं खाली ह्वे गिन पर जो लोग गैं मा छन वूंकि थोड़ी भौत मात्रा मा परम्परा आज भि ज्यूँदि छन।

इगास का भैलौं की धाद

गिरीश सुन्दरियाल

का तिगा मैना की बग्याळ धूम-धाम से मनाणा बाद बांका ठिक नौ दिन बाद पदनू चौका म बटी धाद मरेगे-भारे। इगास का दिन जैं-जैं मौ का भैला छ्न वो पदान जी मा या त प्रधान जी म बतै दियाँ अपणो-अपणौ नौ लिखै दियाँ, अज्यूं हमुम पाँच नौ पौंछिनी, भोळ व्यखुनि दौ तक जरूर बतै दियाँ, य धाद लगणी छै पौड़ी गढ़वाळ का चौन्दकोट परगना का रणस्वा गौ बटिन, रणस्वा गौं की ग्राम सभा काफी बड़ी छ जैको फैलास लगभग 20 किमी० का दायरा मा छ, जैमा कुछ छ्वट्टा-गौं अर काफी खोळा छन् जनकि चुरेड़गौं मेळूधार, बदोणी, नौखेतू, भुतभुदूधार खेत्रपाळ, गथ्वडौं, पित्रूधार, खड़कदन, बाटाडाँग, भन्दरखक, कांडे, सीला चुरिण्ड, चितरोली अर जगस्याखाल आदि। ये गौंकी कई विशेषता छन्। आदिकाल मा जब यख चौंदकोट जाति का ठकुरी राजा छया त रणस्वा का बलिष्ठ अर पराक्रमी ज्वानू तैं वून अपणो सेनापति अर सैनिक नियुक्त करे। आज भी हर परिवार बटी एक से ज्यादा व्यक्ति सेना मा रैकी देश सेवा मा तत्पर छन्। दुसरी विशेषता या छ कि कबि गौं के बि कारण से दुफंटु या दुधड़ो नि ह्वे, इनि एकता व भै-दुख मा गर्र सबि एक होंदा। जबकि यीं ग्राम सभा मा पट्ट सत्रा जात्यूं का लोग रंदन अब तुमन ब्वन कि सुद्दी फसगा छ मन्नू! त गैणि द्यूं तुमारा समिणि, यि छन सत्रा जाति-सुन्दरियाल, खन्तवाल, चन्द्रियाल (नेगी), मुंगोला नेगी, संगेला बिष्ट, सिलकोटी रौत, उजिला रौत कुण्डिला नेगी, पंग्वाल नेगी, काला भण्डरि, सूर्यवंशी राणा, पजै बिष्ट, इसै, औजी, लुहार, अर रूड़्या आदि, पर मजाल क्या जो कबि कै कि जात पांत पर कबि तुणामुणि ह्वे हो। भै गौं हो त इनु हो।

स्यो पिछा नौ दिनु बटि रामलीला चली छ आर वींकी भि बड़ि आणिकारी, उन्न त यख सन् 1967 बटी लगातार चल्नी छ, त्त्व कांडा लगि हो च्हा बजर पड़िहो पर रामलीला बन्द नि ह्वे ये साल लगातार 50 साल पूर्ण हूण पर स्वर्ण जयन्ती बड़ा धूम धाम से मनये छ। रामलीला का बीच मा फिर सैन सिंह पदान जीन मैक समाळे! भारे! सबि गौं क टक लगैकी सूणियाला जैं जैं मौं का भोळ भैला छन् वो अजि बि अपणा नौ लिखै द्या। अबि तक हमुम जो लिस्ट पौंछी छ वूंमा चुरेड़गौं चण्डी प्रसाद जी कि नातिणी को भैलो, चुरिन्द्र संग्राम सिंह जी की व्वारी को भैलो, नौखेतू आलम सिंह जी का नाती को भैलो, सीला संजय सिंह, खेत्रपाल चन्द्रसिंह लेकिन हमारा सुणना मा इनु आये कि कि ऐसू 12-13 मौन अपणा भैला

जन्म : 9 मई, 1969
कृतियाँ : मौल्यार (गीत संग्रह), अन्वार (कविता संग्रह), असगार अर कब खुलली रात (नाटक संग्रह)
सम्पर्क : ग्राम चुरेड़गांव, पत्रालय जगस्याखाल, बाया चौबट्टाखाल, पौड़ी गढ़वाल

दिणीन। पदान जी का इतगा ब्वनो कि तीन-चार ब्यटुला खड़ा ह्वेकि ब्वन बैठीनी कि जिवोरो हमारो नौ बि लेखी दियां। सुरमा बौन बोलि कि मिन त बग्वाळी कै दिन बोलि यलि छयो कि हमन अपणा नाती को भैलो देण, पर भै हमुम ब्वगट्या -वगट्या कुछ नी, हमुन त एक भ्यलि अर एक सिरफळु हि देण, बौ को इनु ब्वनु कि हैंसारत मचिगे।

एक दौ बाळपन मा मिन भैलो को सवाल अपणा बुबाजी से करि छौ, म्यारा बुबाजी ठारा बिर्त्वान बामण। सर्या रणस्वा हमारी बिर्ति। वून बोलि इगासी को त्वे रणस्वा लिजौंलू अर भैला दिखौंलू। स्यो साब बुबाजिन अपणो बोल निभै अर लीगेनी मी तैं रणस्वा। राति करीब आठ बजिकी टैम रै होलो, पदनू का चौका मा गौं का भुम्यां मा जोत जळये गे, जनि जोत जळे सुमतु दास अर ल्यस्ट्या दासन ढोल-दमौ की धमकताळ से सैरो अमेळी को डांडो गुजण बैठिगे। सुमतु दास सैरा त्यखड़ि को प्रसिद्ध ढोली अर साबरी छ वेका ताड़ौ ढोली नी इथैं कखि मेरी नजर मा। जब वेन पंवाड़ा अर पण्डौ का जागर लगैनी त मण्डाण मा द्यब्तौ अर पंडौं की कुर्चा मण्डली ह्वेगे। वेका बाद शुरू ह्वेगे भैलेरू को भैला ख्यलणौ कार्यक्रम। एक से बढ़िकै एक भैला अर भैलेर, भैला रिंगाण-घुमाण मा अपणो-अपणो कौशल, फुर्ति, तागत अर पराक्रम दिखाणा, लगभग चार-फुट लम्बा अर उतगै गोलाई की परिधि का कुळैं अर दिवारा का छिल्लौं (लीसायुक्त लकड़ी) का भैला, सल्लि बैखू का तारिल बन्ध्यां जगदा भैलौं तैं जब मुण्ड मथि घुमैकि खुटौं का मुड़ि, जघौं का बीच, कमर का वोर-पोर घुमै-घुमै की जब भैल ख्यलणा त द्यखदरा द्यखदै रै जाणा। कुछ देर बाद पंडौ नचणा अर भैला ख्यलणा बाद नारैण सिंह ब्वाडाजीन (पदान जीन) बोले सबसे पैलि पित्रूधार बलवीर सिंह का नौना को भैलो छ। वख बटी भैला शुरू होला अर तब..... वून करीब प्रंदा-सोळा मौ का नौ गैणिने। स्यो साब चले पित्रूधार। वूकां चौका मा बजण बैठिने बाजा, कूड़ी का पठळा भी हिलण बैठिनी, वूका चौका मा भैला ख्यलेने। पंडौ नचिने। स्यो सुमतुदासन बि मंगळाचार-कुलाचार गाये—

जै द्यो-जुहार, मंगळाचार
भूमि का भुम्याळ, नरसिंग नरंकार
बोला बदरी-केदार की जै-जैकार
ऊँचा हिवाळ कोंणैं उदंकार
जैपुनि घण्डियाळ बूढ़ो भरसार
लांदो बाबा जै द्यो-जुहार।
हे माराज, मंगलाचार बड़ा सरकार
दुर्वा लावे तुम्हारे द्वार, जुग-जुग जीवें भल करतार
चार खूटौं दशदिशौं में हो जैकार
अन्न-धन को भरें भण्डार।
बेटी बेटान को राज बढ़े, नाती पूतान को राज बढ़े।

बलवीर सिंह जी नौना तै भैर लैने, द्यब्तौन, बुर्जुगोन आशीष देन अर तब वेका ऐंच पराखी की भ्यलि अर एक सौ एक रुप्या दिने अर दगड़ग एक जबररंग खस्सी ब्वगट्या भी दिनै, हवलदार साब जो ठारा स्यो भैलेरू की दाड़ी रमसाण बैठिगेनी पर अज्यूं बतेरी मौ का डेरौमा ख्यलैणी भैला, तब भोळ खयालु सुर्रा अर भात। त साब य भैलों की परम्परा अज्यूं बि उन्नि चल्णी छ। हाँ ब्वगट्यो की जगा सिरफ कौन ले याले बाकी खिलड़ि नया छन पर खेल पुरणू ही छ। अज्यूं बि गौं का सल्लि बैख भैला बणांदिन।

आदिकाल मा जब यख चौंदकोट जाति का ठकुरी राजा छया त रणस्वा का बलिष्ठ अर पराक्रमी ज्वानू तैं वून अपणो सेनापति अर सैनिक नियुक्त करे। आज भी हर परिवार बटी एक से ज्यादा व्यक्ति सेना मा रैकी देश सेवा मा तत्पर छन्। दुसरी विशेषता या छ कि कबि गौं के बि कारण से दुफंटु या दुधड़ो नि ह्वे, इनि एकता व भै-दुख मा गर्र सबि एक होंदा। जबकि यीं ग्राम सभा मा पट्ट सत्रा जात्यूं का लोग रंदन अब तुमन ब्वन कि सुद्दी फसगा छ मन्नू!

सुमतुदास को नौनू प्रकाशदास अपणा बुबा की मैल्या काख मा छ याने यीं त्यखड़ि को जण्यू-मण्यूं ढोली, शायद पंडौ की पुजै इगास-बग्वाळ का भैला, नरंकारै पूजै, काळिंका की अठ्वाड़न ही यी विरासत तैं बचयूं छ। हमारा गौं से दूर हाइटेक शैरू मा रैण क बड़ा-बड़ा विद्वान खुणि च्हा गौं बॅजे गेनी हो, पर गौं म रौण वळौं तैं द्याखो अर पूछो गौं अज्यूं बि ज्यूंदा छन्। अर अजि बि उन्नि छन इगास बग्वाळ, मुण्ड-मुण्यात-भै-भयात, रणस्वा जन सैकड़ौ हजारौं गौं छन् जख अजि भी अपणी परम्परा, रीति रिवाज, वार-त्योहार मनयेणा छन् पूरा उत्साह अर उमंग का दगड़ी, रणस्वा गौं जब पंडौ की पुजै होंदत भीमसण अफुसे चौगुणा बड़ा कुळैं का डाळा तै स्यूं जलुडौं उपड़दु अर काँध मा धैरी गौं मा लांदु जखमा पंडौ की पुजै होंद।

❑❑

मंगसीर का मैनै बग्वाळ

प्रेम पंचोली

यमुनाघाटी मा ढीपसा, दियाई, बग्वाळ, भैलो अर देवलांग आदि भिन्न-भिन्न नामो से प्रचलित एक मैना का बाद दीपावली का लोक पर्व मनयेंद।

यमुना घाटी को भौगोलिक, सांस्कृतिक और सामाजिक तानू-बानू एकान्नारी च। पर कागजू मां यमुनाघाटी सणी लोक टिहरी, उत्तरकाशी अर देहरादून सी जाणदन्। याने उत्तरकाशी को नौगांव, पुरोला, मोरी त देहरादून को चकराता, कालसी, विकासनगर अर् टिहरी का थत्यूड़ विकास खण्ड यख मां सम्मलित छां। यतका भी निन बल हिमांचल प्रदेश को कूल्लू, शिमला, सिरमौर तलक यमुनाघाटी को जनी संस्कृति चा। बोलण अर्थ चा कि यख-यख मा बि मंगसीर क मैना की बग्वाळ (दीपावली) एकान्नारी ही चा।

यूं-यूं जगा पर लोक एक मैन क् बाद दीवाली किलै मनौण छा? यी लोक बोदन् की कार्तिक क् मैन मां बेज्या काम-धाम होणू च। बस एक मैन बाद काम-धाणी सी निपटी कैन बग्वाळ की रंगत ही बणी ज्यांदन्। अब देखा जी कि देहरादून क् जौनसार-बौर (कालसी, विकासनगर, चकराता विकास खण्ड) क् लोक या बग्वाळ सणी ढिपसा, दियांई अर् नौगांव, मोरी, पुरोला, थत्यूड़ क् लोक त बग्वाळ ही बोदन्। पर नौगांव विकास खण्ड की पट्टी बनाल क लोक यी दीवाली/बग्वाळ सणी "देवलांग" बोदन्। यत्का ही नि छा बल्कि नौगांव विकास खण्ड की मुगंरसन्ती, गोडर-खाटल पट्टीयों क लोक बग्वाळ त् बोदन् पर बग्वाळ क् तीसर दिन यख मा जू देखण वाली चीज छा वे की छुई ही कुछ हैंकी चा। किलै की यख बॉर्त तोड़न् कू रिवाज बल। ई बॉर्त जू छ एक बड़ू रस्सा क् अन्नारी होन्दन् अर रस्सा-कस्सी जनी ही करदा बी छन्।

देवलांग

यख क लोक या परम्परा सणी पुराणों सी जोड़दन्। बोदा चा कि शिवपुराण व लिंगपुराण मा श्रेष्ठता क खातीर प्रतिस्पर्धा होइन्। ई द्विया एक हैंक सणी मारन् तलक बिकराल होईग्या। याक वास्ता सृष्टि क देवी-देवता शिवजी सी शांती की प्रार्थना करणै बैठीग्या। तब जैकीन् शिवजी यूं दुईयूं क बीच मां ज्योतिर्लिंग क रूप म खड़ होई ग्यान् अर

जन्म : 18 अक्टूबर, 1978
सम्पादन : जलकुर घाटी सन्देश
सम्प्रति : स्वतन्त्र लेखन/पत्रकारिता (मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार) देहरादून

बोली कि तुम दुईयूं मां न् एक आदि अर अन्त कू पता लगै सकदू चा त वी श्रेष्ठ छा। दुईयूंन् ब्रह्मा जी ऐंच बटी उड़ी ग्या अर विष्णु जी नीचल तरफ बटी, पर अन्त मा यी देवता लोक वखी पहुंची ग्या जखमा ई पैली सी खड़ था। तब जैकी देवताओं न बी स्वीकार कैरी कि श्रेष्ठ कोई बी नी छ। तब सी ज्योतिर्मय स्तम्भ श्रेष्ठ होई गैनी। या सणी नौगांव विकासखण्ड की बनाल पट्टी क लोक "देवलांग बोदान्। "देवलांग" भी ई लोक एक बड़ देवदार क बूटा (पेड़) सी बणौद चा। अर बनाल क गैर गौं मा कट्ठा ह्वे कैन बग्वाळ की तीसर दिन देवलांग जलौण क जू दृश्य होन्दन अर वै क तमाशा लगौण क खातीर लोक दूर देश-प्रदेश बटी वै दिन कट्ठा ह्वे ज्यान्दन्।

ढीपसा अर दियाई

जौनसार-बौर जनजाति क्षेत्र म ढीपसा वी च जनू रात मा अलाव जलणू चा। पर यख या बात त्यौहार क दगड़ी जुड़ी गैन्। सबी लोक अपण-अपण घौर बटी हाथ मा होल्या (मशाल) ली कैन आन्दन् अर ईकी जगा पर ईं होल्या सणी कट्ठा कैरी कैन फूंकणा छन, त या ढीपसा ह्वे गैन्। ढीपसा जलौण तलक सबी लोक एक हैंक सी धान सी बणी चूड़ा बांटदन्। तब तलक बिनसरी ह्वे ज्यादन् त या दियाई ह्वेग्या।

बग्वाल अर बॉर्त

बॉर्त त उत्तरकाशी क नौगांव विकास खण्ड की मुंगरसन्ती, गोडर, खाटल पट्टीयों मा दिखैन्दी चा। बॉर्त लोक बबूल घास सी एक लम्बी अर मोटी रस्सी क रूप मा बणौंद च। रिवाज छा की गौं क अनुसूचित जाति क लोक या रस्सी बणौंद। एक कफनौल गांव क लोक या बॉर्त सी पुआल घास सी बणौंदा चा। बग्वाल क तीसरे दिन सैर गौं क छोटा-बड़ा बैख कट्ठा ह्वे कैन या रस्सी पर छोटा एक तरफ अर बड़ एक तरफ खैचम-खैचा करदा चा। रस्सा टूटण क बाद सबी गौंक लोक अर गौं ऐ मेहमान एक हैंक सी चूड़ा बांटद चा। वै क बाद त रातभर तांदी, हारूल, रासौं नृत्य की धूम ह्वे ज्यांदन्। या बॉर्त नौं क खेल सणी लोक कौंरवो व पाण्डवो की कथा सी जोड़दन्। बोदा चा कि बॉर्त तोड़न कू जू रूप चा वे मां समुन्द्र मन्थन जनू करतब ह्वे ज्यादन्। ❑❑

कार्यालय नगर पालिका परिषद, गौचर (चमोली)

66वें राजकीय औद्योगिक विकास एवं सांस्कृतिक मेले की सभी प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ

मुकेश नेगी

गुरुदीप आर्य
अधिशासी अधिकारी
नगर पालिका परिषद
गौचर, चमोली

राजीव चौहान
अवर अभियंता
नगर पालिका परिषद
गौचर, चमोली

मुकेश नेगी
अध्यक्ष
नगर पालिका परिषद
गौचर, चमोली

श्रीमती राजेश्वरी देवी, श्रीमती शिब्बी देवी, श्री उमेश चंद्र शैली, श्री मनोज नेगी, श्री अनिल नेगी, श्रीमती इन्दु पंवार, श्रीमती लक्ष्मी देवी थपलियाल

सभासद एवं समस्त नामित सदस्य मा० विधायक प्रतिनिधि, मा० सांसद प्रतिनिधि नगर पालिका परिषद, गौचर (चमोली)

उत्तराखण्ड मा बग्वाळ कि परंपरा

राजेश जोशी

जब बगवाळ को ख्याल मन मा औंदु त याद औंदु कि द्यू देवतों कि पुजा होली सैढ़ा गौं अर गुठ्यारु मा उज्याळू करे जालु दिवा जगाये जाला, अपड़ा देसु प्रदेसु बीटी घर आला स्वांक पकोड़ा पकला च्यूड़ा भुजणा बांटे जाला कुळैं क डाळौं क छुल्का ल्हैकी भैला बणाए जाला हौंडकु जगलु ढोल दमौं बजला देवतों कि पुजा का बाद सभी भैला रिंगाला रांसो तांदी लगाला अर मिळ्न जुळ्न वाळा अपड़ी खैरी विपदा लगाला, कखी क्वी हँसणा बच्याणा होला क्वी भैलों मा रंगमत होलू क्वी स्वांक पकोड़ा खाला,भांति-भांति का रंग आंख्यों मा रिंग्दा अर मन उलारे जांदु।

उत्तराखंड कि पावन धरती कखी ऊँची-ऊँची डाडी कांठी छन त कखी गैरी-गैरी घाटी कखी सफेद बरफ कि टाल्खी त कखी स्वाणा खाळा, झरना गाड गदरा बणु मा पसु पक्षियों कु सुर त डाळौं क बिच बिटिन बगदी हवा क गीत, कखी डोडिताल त कखी नैनीताल छन, सुन्दरता कि बात करे जाओ त सबसी पैली देश दुनिया मा हमारू उत्तराखंड छ, जनु सुन्दर हमारू मुल्क छ वनि हि सुन्दर हमारी परम्परा अर रस्म रिवाज छन, हमारा धारा पंदेरा हमारा बण बुग्याळ, यूँ हिंवाळी डांडी कांठी सबू मा अपड़ि एक अलग कथा छ एक रिवाज एक परम्परा छ अर हम सभ्भु तैं विश्वास अर लगन सि मनौन्दा, हमारू हर त्यार हमारी पछाण छ अर वे मनौण कु एक अलग ढ़ब छ साथ ही सभ्भु कि अलग-अलग कथा भि छ, हर त्यौहार मनौण सि पैली जु हमारी सबसी भली बात छ वछ हमारा अपड़ा औ-आब्लु कु कठ्ठु होणु दुरु-दुरु बिटी अपड़ा त्यौहार मनौण तैं अपड़ा घर औणु, यांसि पता च्दु कि हमारी जड़ कत्गा गैरी छन कि हम कख्खी भि रौं पर अपड़ी परम्परा अर संस्कार गैली रखदौं तभि त अजौं भि बदलौ कु असर उत्गा प्रभावी नि ह्वे सकी जत्गा और चीजू पर दिखेणु छ आज भि हमारू भूमिया देवता खोळी को गणेश अर मोरी को नारैण साक्षात छन अर परम्परा व रीति रिवाज निभौंण कि सुबुद्धि देणा छन बाजारू मा आयां लोग भि जब कै कारणु सि गौं नि जै सकणा त बाजारू मा ही त्यारु तैं अपडी गौं कि परम्परा क हिसाब सि मनौंणा छन, आज आधुनिकता कि दौड़ मा भि यदि हम कै न कै बाना सि अपड़ा त्यारु तैं जगा देणा छौं त य

जन्म : 30 जनवरी, 1973
वरिष्ठ रंगकर्मी एवं कवि
रंगमंच : वर्ष 1987 से रंगमच पर सतत सक्रिय राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पूर्णकालिक, नुक्कड़ नाटकों एवं लोक नाटकों मे अभिनय।
लेखन : नाटक-दास्ताने भूकम्प, यमपुरी में हंगामा, अनेकों पत्र पत्रिकाओं मे लेख व कवितायें प्रकाशित
सम्प्रति : अध्यापन
सम्पर्क : जोशी मोहल्ला, जोशियाड़ा, उत्तरकाशी
मो० : 9410197910

खुसी कि बात छ, परम्परा यदि नयु रूप लेणी छन त यांका साथ गौं सि दूर होणा कि पीड़ा भि छ कि हम यु न भुली जौं कि हम कु छौं अर हमारी नई पीढ़ी हमारा त्यौहार अर रीति रिवाजू न भूली जौ, तभी त आज क दौर मा बाजारू क बिच मा भि त्यार मनौणक लोग उलार सि जुड़ना छन जन गौं मा जुड़दा था, विकास कि दौड़ मा त हम सभी छौं पर हमारी परम्परा हमारी पछाण छ, हमारा सभी त्यौहारू मा जै त्यौहार कि सबसि ज्यादा मान्यता छ अर जै मनौणक सभ्भी उलारयाँ रंदा उ छ बगवाळ, वन त बगवाळ सारा देश मा मनाये जांदी पर हमारा उत्तराखंड मा कई प्रकार कि बगवक मनौण कि परम्परा छ बग्वाळी क दिन जब सभ्भी एक जगा कठ्ठा होंदा अर बगवाळ मनौन्दा।

ब बगवाळ को ख्याल मन मा औंदु त याद औंदु कि द्यू देवतों कि पुजा होली सैढ़ा गौं अर गुठ्यारु मा उज्याळू करे जालु दिवा जगाये जाला, अपड़ा देसु प्रदेसु बीटी घर आला स्वक्रां पकोड़ा पकला च्यूड़ा भुजणा बांटे जाला कुळैं क डाळौं क छुल्का ल्हैकी भैला बणाए जाला हौंडकु जगलु ढोल दमौं बजला देवतों कि पुजा का बाद सभी भैला रिंगाला रांसो तांदी लगाला अर मिळ्न जुळ्न वाळा अपड़ी खैरी विपदा लगाला, कखी क्वी हँसणा बच्याणा होला क्वी भैलों मा रंगमत होलू क्वी स्वक्रां पकोड़ा खाला,भांति-भांति का रंग आंख्यों मा रिंग्दा अर मन उलारे जांदु।

किलै छन खास उत्तराखंड कि बगवाळ? यांकी जानकारी सब्यौं तैं नि छ कातिक कि बगवाळ सारा देश मा मनाए जांदी पर वांका बाद गढ़वाळ मा 11 दिन बाद एक बग्वाळ इगास क नौ सि भि मनौन्दा लोग, कखी कातिक कि बगवाळ का ठीक 15 दिनु बाद आदि बगवाळ मनाये जांदी अर फिर ठीक कातिक कि बगवाळ क एक मैना बाद मंगसीर क मैना होंदी मंगसीर कि बगवाळ, ठीक ये समय पर उत्तरकाशी जिला कि रवैं घाटी क लोग देवलांग बगवक मनौन्दा अर कुमौ का अल्मोड़ा मा पौराणिक बगवाळ क नाम सि भि एक बगवाळ मनाये जांदी, मतबल कि मनौन्दा त सभ्भी बगवाळ ही छ पर अपड़ा-अपड़ा ढंग सि, कातिक कि बगवाळ को सम्बन्ध भगवान् राम सि छ पर उत्तराखण्ड कि और बग्वाळ्यौं कि बात करे जाओ त ज्यादातर लोगु कि जानकारी क आधार पर सभ्भी बग्वाळ्यों कु सम्बन्ध माधो सिंह भंडारी सि छ, पुराणा लोग बतौन्दा कि राज माहिपत शाह क समय पर श्रीनगर रियासत क एक गौं मलेथा गौं मा कालो भंडारी क घर माधो सिंह भंडारी कु जन्म ह्वे जु भवि य म राजा महिपत शाह का तीन सेनापति रिखोला लोधी अर बनवारी दास मन एक थौ अर सबसी ज्यादा जाण्यु माण्यु थौ माने जांदु कि 16वीं शताब्दी मा जब राजा महिपत शाह क समय मा तिब्बत क दगड़ा युद्ध जुड़े त राजा न माधो सिंह अर वैका भाई भादु सिंह क नेतृत्व मा सेना कि एक टुकड़ी तिब्बत भेजी दिनी, कार्तिक क बगवाळ क टैम सिपायों क घर वाळौं न राजा म औळाणु करी कि हमारा अपड़ा त युद्ध म जायां छन हमुन बगवक कनुकै मनौंण त राजा न डौंडी पिटैक ऐलान करवाई कि जै दिन हमारा वीर सिपाई जुद्ध जितिक आला वै दिन बगवाळ मनाये जाली ईं कथा क आधार पर कुछ मान्यताओं क अनुसार माधो सिंह कातिक कि बग्वाळ क ग्यारह दिनु बाद आयी त इगास बग्वाळ मनाये जांदी, कैका अनुसार 15 दिनु बाद आयी त आधी बगवाळ मनाए जांदी अर कैका अनुसार एक मैना बाद आयी त मंगसीर कि बग्वाळ अर देवलांग मनाये जांदी मूल बात या छ कि माधो सिंह भण्डारी कि तिब्बत पर जीत कि खुशी मा य बगवाळ मनाये जांदी आज भि श्रीनगर रियासत का ज्यादातर गौं कातिक कि बग्वाळ सि जादा मंगसीर कि बगवाळ मनौन्दा, अब रै बात कुमौ मा मनाये जाण वाळी पौराणिक बगवाळ मेळा कि त यनि मान्यता छ कि य बगवाळ पांडव कालीन परम्परा छ, मान्यता क अनुसार अज्ञातवास क दिनु मा पांडबु कु पिछु करदा-करदा कौरव बग्वाळी पोखर नौ कि जगा पर ऐन अर कुछ दिनु वख रैकी पाण्डबु कि खोज करी पर जब पांडव नि मिल्या त वापिस लौटग्या, पाण्डबु कि रक्षा कि खुशी मा वै दिन बिटी आज भि लोग वीं जगा पर जुड़दा अर सबसि पैली भंडर गौं क लोग नीसाणु का दगड़ा ओडू भेंटण कि परंपरा निभौंदा अर तब बगवाळ मेळा कि सुरुवात होंदी, लोग बीर रस अर शृंगार रस सि भर्यां देव गीत अर नृत्य का दगड़ा ये त्यौहार तैं मनौन्दा।

भगवान राम चन्द्र जी कि रावण पर जीत हो य माधो सिंह भण्डारी कि तिब्बत पर जीत बगवाळ बुरै पर भलै कि जीत को त्यौहार छ झूट पर सच्चाई कि जीत को त्यौहार छ।

❑❑

कविता

• गिरीश सुन्दरियाल

हमारा तीज त्योहार बिना धरती पूजा, गोर बछरू अर पौन पंछ्यूं न्यूंत्यां पुज्या बगैर पूरा नि होंदा। इगास बग्वाळ मा त गोरू का सिंगु पर तेल लगौणै अर पींडु खलौणै परम्परा पुराणी छ। अपणा मुल्क की चखुलि पोथळ्यूं दगड़ि हमारा रिस्ता इथगा मानवीय अर मयाळु छन कि कखि बिटि नि लगदो कि हम चखुला पोथळों की बात करणा छौं, तौं दगड़ि हमारा रिस्ता बि भै बैणा, काका-बोडा, बैण-भण्जौ जन छन। चखुलौ खुणै यनो भाव अर तौं खुणि यनि भावना पूरि दुन्या मा भौत कम जगा बचीं छ पर हमारा लोकमा अज्यूं बि पौधि छ। गढ़वाळि लोक का मयळु गीतकार अर गितांग गिरीश सुन्दरियाल की पोथि 'उड़ि जौं अगास' की छ्वीं-बत्त अर चखुल्यूं का दगड़ा रौ-रिस्तौं कि कुछ फोळि धाद का पढ़दरौ खुणि। • सम्पादक

छ्वीं-बत्त

उड़ि जौं अगास ऽ
ज्यू ब्वनू छ आज ऽ
तुम दगड़ि हैंसू-खेलू
बणी ऽ पंछि आज ऽ
हे दगड्यों आज ऽ
हे चखुल्यों आज ऽ

औ हे मनिखि हम्हरा गैल
सर्या दुन्या की करला सैल
निरदुन्द ह्वे उड़ला-फिरला
नचला अर च्वींच्याट करला
तू बि चखुलि बणिजा
हम्हरा दगड़ि उड़िजा
मी परैं पौंखुर लगावा
उडणु मी तैं बि सिखावा
फुर-फुर, सुर-सुर उडला
दूर देश घूमी औंला
गैल्यो मरला मौज ऽ
हे दगड्यो आज ऽ

हम त लाटा पंछि छवां
मनखि अकलबर तु छई
हम त सिरफ उडणै जण्दाऽ
अर तु क्या नि जण्दु छई
तिन बणैनि जाज ऽ
उडणा खुणि आज ऽ
बात सैहि छ य तुमारी
हमन भौत तरक्कि कारी
जगत जीति मनखिन पर
अपणा आप से वो हारी
त्वेमा ख्वलदु राज ऽ
ब्वे का सौंऊं आज ऽ

तुम्हरै सार रैंदा छया
तुम्हरै भ्वार खांदा छया
गौं म अब क्वी रै नि ग्याई
जीणू मुश्किल ह्वे ग्याई
कख जि जाण आज ऽ
प्वटगि प्वड़द बाँजा ऽ
मेलि-मालि टीपि-टापि
गुजरु तुम्हरु ह्वे हि जालु
हम छां बड़ा प्वटगा वळा
सोचा हम्हरु क्या जि ह्वालु
पाथा भोरी खांदां
कन्न कुछ नि चांदां

उरख्यळ्यूं म ब्यटि-ब्वारी
जब बि नाज कुटदि छई
वूंका धोरा आंदि चखुलि
ल्यटेंदि-भ्यटेंदि छई
देंदि छै वो नाज ऽ
गैन कख वो आज ऽ
कब तैं रुण तौंका बान
सुदि क्यों खूण यो पराण
कतगा जाला कब तैं जाला

एक दिन सि बौड़ि ऽ आला
अपणा गौंऊ माँज ऽ
सच ब्वनू छौं आज ऽ

चौकौं बिसगुणों बि नी छ
सगड़यूं निलपट हुईं छ
सार्‌यूं नी छ अन्नै-दाणी
रौल्यूं बिस्गि ग्याई पाणी
खाणू-पीणू क्या चा
ये मुलक आज ऽ
तुम बि चलि जा स्यकुंद
तौं दगड़ि रा तखुंद
मैति तुम्हरा सौब तख
तुम कु कमि क्या छ तख
कोठ्यूं माँज रैल्या
होटल्यूं मा खैल्या

हैरि धरति खुलु अगास ऽ
बिगरि हमन कनुक्वे रौण
बिगरि डाळि-बोट्यूं का स्यो
घोल हमन कख बणौण
कुमच्यरौं का बीचा
हम्हरा बसौ नीचा
भग्यनु तुम्हरा छन ठाट
काम फगत कन च्वींच्याट

पढ्न-ल्यखणै नी छ हाळ
कन-कमाणै नी अंदाळ
उडणा को छ काज ऽ
डाळ्यूं-डाळ्यूं माँज ऽ

ज्यूंदा रैण खुणि हमतैं
खण्ड कैइ ख्यलण प्वड़दीं
ह्यूंद रुड़ि अत्वणि-बत्वणि
झैड़ कन झ्यलण प्वड़दीं
कबि चिलांग खांदा
कबि शिकरि उडांदा
खैरि कि छ्वीं छ्वाड़ा अब
बात हौरि कारा अब
झिट घड़ि सब भूलि जौंला
नचला गीत बी लगौंला
हैंसला-ख्यलला आज ऽ
हम्हरा डंड्यळा मांज ऽ

दुरु-दुरु बै जुड़यां छवां
त्वे मिलणौ अयां छवां
रिस्ता कतगै त्वे दगड़ि
हम्हरि एक कुटुमदरि
इन त बोल बैजा
खदळ-बदळ खैजा

घुघुती-मौसी

घुघुती मौसी ऐजा
दूध-भाति खैजा
माँजी लगीं सासा त्यारा
खैरि-खुद बिसैजा
ओ हे मौसी ऐजा
माँ तईं भिटेजा

पैलि मि गौं मा जयांदु
रंत-रैबार दियांदु
तुम्हरा घौर बासा रौंलू
मैत ऽ की छ्वीं-बत्त लगौंलू
बस घड़ेक स्हैजा
हाँ रे लट्या स्हैजा

कागा-रैबार्या

कागा हलुवा पूड़ि खा
डांडा पार उड़ि जा
दूर परदेश स्वामी
तौंकि राजी-खुशि ला
जा बथौं बाणि जा
यीं समौण ल्हीजा

बोल वूंमा ब्वलणू क्या छ
नै-नवाण देणू क्या द
भोळ खबर-सार लौंलु
दगड़ि पारसल बि लौंलू
अब फस्सोरि सेजा
बस निझर्क ह्वेजा

घिंड्वा-ब्वाडा

घिंड्वा ब्वाडा आवा
तमखु पाणि प्यावा
स्यकुंद जयां छाया तुम
कुछ तखै सुणावा
रेल घुम्यां जाज ऽ
ब्वाला ब्वाड़ा आज ऽ

ब्यटा तखै क्या सुणौउ
पिंजड़ा प्याट ग्वड्यूं रौंउँ
अपणि डांडि बौण सारी
द्यखणा खुणि तरिसि ग्यउँ
हर्चि मेरी बाच ऽ
ब्वन क्या बुबा आज ऽ

घिंडुड़ि-बोडी

घिडुड़ि बडि दनकणी छै
बोडी बकछट बणी छै
बात क्या छ खुशि कि भैई
पैणु क्यांकु बँटणि छैई
बात यीं बतैजा
जरसि थौ त खैजा

नौनू मेरु घौर अयूं छ
बुबा नाति बि हुयूं छ
छैल ऽ खुणि डाळी ह्वेगे
घर-कूड़ी उज्याळी ह्वेगे
अब फिकर क्या चा
मोरी जौं भौं आज ऽ

हिलाँसि-बौ

समन्या बौ हिलांसि बौ
एक बात मी ऽ बतौउ
घुट-घुट बडुळि तुम तैं
बोला समळ्णू छ कोउ?
कन छ बौ मिजाजऽ
बोला बौजि आज ऽ
जिकुड़ि मा बस्यान जो
आँख्यूँ मा लुक्यान जो
वीइ समळाण छ्वारा
भैजि त्यारा हौरि को
बडुळि कबि पराज ऽ
मी तैं द्यूरा आज ऽ

सुरड़ि-स्याळि

सुरड़ि स्याळि मेळा जौंला
तख जलेबि छोला खौंला
डाळ्यूं छैल बैठ्यां रौंला
रांसौ नचला गीता गौंला
हथु मा धरि हाथ ऽ
चल हे स्याळि साथ ऽ

अबि त अण्डु पुटगौ छई
छ्वारा कतगा बिग्चि ग्यई
छ्वीं तु छंछड़ौं की लगांदी
जरसि ऐना हेरी आदी
जूँगा बी नि जामा
बिग्ड़ि किलै जामा

मैर-धवड्या

बाँस मैर ऽ मार धाद
बिन्सरि ह्वे खुलिगे रात
किलै झिंकणु-उँगणु छई
राति क्या तु स्याइ नि छई,
बाँक तिन नि द्याया
दुन्या बीजि ग्याया

दुन्या की न कैर बात
छिलम दिन न निंद रात
छौंदि छ सुख-चैन नी छ
टैम यख अब कैम नी छ
दौड़ा-दौड़ि हुईं चा
गंदराग्वळि मर्ची चा

❑❑

गुलेथ गौं कि व्यथा अर कथा

कमल रावत

इडवालस्यूँ, बाडा गौं क छोर पर, अपणी खोली तिबारी मा, मंत्र-पाठ मा रमयूं, जाति को मिस्त्री अर हुनर को धामी थेपडू दादा को ध्यान चौक मा छिबड़ाट होण अर कैका रोण क गुंगणाट न टूटी। कई मैनों बटि दादा कुटुम्ब से अलग यखि रांद-खांदू छौ। क्या कन? घौर-घौर माटा चूल्हा। "कू होलू आयूं ईं बिनसरी"—सोचिक किवाड़ हुगाड़िन त देखि—पाळन तींदा पठाळ चौक मा मल्या खोला, पदानु की ब्वारी अपणा बड़ा लड़िक दगड़ी खड़ी, आसूँ बगाणी अर हर भी ठंडन कंपड़ि च।

"क्य ह्वे ब्वारी ये बार त्यारा दिन, या रोणी-धोणी क्यांकी?" धामी क मन मा वींका रोणन कई कारण उपजिन। ब्वारी को रोण "हू हू" करी बढदु गै।

"नी रोवा—ब्वारी, इन क्य खौरी ऐइ? किलै छा रोणा? गौं की मान-मर्यादा मा राण वाळा, सल्ली, जिमदार, किसाण जनना छां, तुम। हैं।"

जब ब्वारी खूब करी रूवे-धुवे गी त धौं सकीन वा बोल सकी—"हे जी, मेरा मैत मसाण ढुक्यूं च, जिण्ड मसाण च वो, सैरू गौं खयेली वेन, गौं का हैकी जगा जै बसीन, पर वो फेर भी पिच्छा पोड़यूं च, खेती-बाड़ी चौपट ह्वेगे। हे जी मेरा मैतीयों बचावा, बड़ी आस लेकी तुमारा धोरा अय्यूं छौ।" ब्वारी का दणमण आसूँ पोडणा धरती पर।

"किलै, उपटण निस्तारण नी करवै वूंन कै मुं?"

"किलै ना, जी, पर वे मसाण क समणी कै धामी नी बसै। कई धामी वेंन जान से मारेलीन, धामीयूंन वख जाण छोड़ी ये ली।"

"कथगा दिन ह्वेगिन?"

"कई मैना, हे जी, कई मैना ह्वेगीन।"

"मै मु पैली किलै नी अयां?"

"हे जी मति मारेगी छै मेरी, मै मु भी बिजाम दिनों मा रैबार आई। मैतियोंन मै सी लुकाई। हे जी बल जबरदस्त करो जबरदस्ती, निहत्थो

जन्म : 1 जनवरी, 1975
शिक्षा : एम०ए० थिएटर
सम्पर्क : ग्राम व पत्रालय-खण्डाह, पट्टी कटूलस्यूं, पौड़ी गढ़वाल
सम्प्रति : कृषि एवं दुग्ध उत्पादन

श्रीनगर और खण्डाह घाटी।

जावो न्याय बस्ती। तुम तैं कै मुखन बोन छौ, तुम पर भी त ज्यु च, सबु तैं अपणा पराण प्यारा होन्दन, मसाण खौंपाक बणयूं च, पर अब पाणी मुखामुखी ऐगी।"

"हयराम गोंणीऽ खाल, न खाण कि, ना बजोण की। खबेश मैं खालु त खै ल्यो, मेरू अब क्या? पर हां ठीक बोल्यूं च, घौर को जोगी जोगटा, आन गौ को सिद्ध।"

"ना, ना हे जी, मैं तैं तुम पर विश्वास च, तुम मेरा बुबा जी बरोबर छां। हे जी मैं भारी दु:ख च, बल कुखडो खुब डाओं-अपणी तरफां, हमरी इमदाद करा, तुमारा खूटटा पकड़दुं।"

"ठीक च ब्वारी, कमर बाँदा, मी इमदाद करलो, पर तुमारा गौं बटि क्वी मैं लेणो आवो। मेरा आँखों की ज्योत कम च, आज ही अपड़ा मैत रैबार भेजा, आज ही वख जयोलु। आज कातिक की औंस अर करड़ो बार भी च।"

"ठीक च हे जी, मी आज अब्बी रैबार भेजदों।" बोलीक ब्वारी अपणा नौना दगड़ी घौर वापस बौड़ी, धामीन चितै कि ब्वारी पर आंदी दां हाय हाय छै अर अब जांदी दां जरा निराली छैं गी।

धामी भितिर गैई, किवाड़ ढाकिन, फेर पूजा मा रमगे, पर मन पूजा मा नी लगी, किलै लगण छौ? मन मा त रिंगण लगी छौ गुलेथ।

बाड़ा का ठीक पूरब दिशा, खण्डाह गाढ की द्वी तरफां उपजौ घाटी धरती पर छौ गुलेथ। चररी तरफां बगदो पाणी अर स्रोत। सेरा-उखड़ लपलपो सट्टी अर नाज, झुपकां-झुपकां आमों का बगवान। धैन-चैन, घास-लखड़ो अथाह।

पदानु की ब्वारियू मैत गुलेथ च, गुरु गौं, नौटियालों को गौं क सात गौंऊं मा एक गौं च गुलेथ। यी सत्ती गौं, पैली बाड़ा क बिटूं कि जागीर छै अर यूं बिट थोकदारूं का कारण हि पट्टीयूं नौं इडवालस्यूँ पड़ी। धामी मिस्त्री अर दास बि तौन ही अपड़ा यख बाड़ा बसै छा। राजा महिपत शाह तैं राजा बणौण मा मदद करण क इब्बजी मा राजगुरु नौटियाल तैं सात गौं गुरु गौं दान मा मिली छा। राजगुरु नौटियाल सात भै छा अर सत्ती गौं बाद का समय सत्ती भैयों क जुदा मा बंटिगेन। वों का कुटुम्ब मा बण-बण की लकड़ी ऐनी अर जब बिन्डी भांडा आपस मा बजिन, त यू समझे कि यीं किच-किच से जुदा ही भलो।

गुलेथ छोटा भै का हिस्सा ऐई।

दान की जागीरन सबि भईयों तैं जागीरदार बणै दिन। कई कारबारी, खैकर, सीरतानी अर हरिजन रखेगिन। खेती खैण्डों अर हम तैं भी खलावो। ठाठ को खाणू अर खुट्ठा पसारी सेंणु। खण्डाह घाटी क उखड़ अर सेरा सबि चलदा ह्वेन, वखा सट्ठी अर नाज ठेड बदरीनाथ अर देवलगढ़, देवता भोग का वास्ता जाण लगीन।

समय अर दुभार्ग्य को चक्कर यन घूमे कि खाण-पेण दिन जांदा रैन अर र्दुभागन सैरा गढ़देश पर गोरख्याणी लगी। राजा सैंणा श्रीनगर छोड़ी दुंण भागी अर वखी गोरख्यों दगड़ी जुद्ध मा मरेगी। गौं ख्वे पदानन अर राजा ख्वे घुडेरून। गोरख्यों दगड़ी कन-कनै नी बसै, त कनकटों की बसांदी। सब बड़ा-बड़ा मुण्डों का यथ-वथ भागीन। गोरख्यों का अत्याचारों न सबि गौं गौळा खाली ह्वेन अर लोग बोणों भागीन। बसागत बांजा पड़िन। राजधानी श्रीनगर कि नजिक वळि घाटी पर भी या आंच आई। खेती, व्योपार, धैन-चैन सब चौपट, चरि तरफां हाय-हाय अर भूख को राज ह्वे। गढ़देश मा गोरख्यों को बारह बरस राज रै। एक जुग बीति, पर सदानी रावणैं कख रै? बारह बरस मा रांडा छोरा भी दिन बौड़दन। काल को चक्र फिर घूमी। गढ़वाळ्योन अंग्रेजों को स्वागत करी, जौन गोरख्या यख बटि भगैन। गोरख्या गैन त इडावलस्यूँ अब 'ब्रिटिश गढ़वाल' ह्वे, परेशानी कुछ कम ह्वेन, जगा-जगा स्कूल खुलिन पर गोरख्या इन भंगलू

बूतिगे छा कि वान अंद-आस्था, अज्ञानता, गरीबी अभौ का दिन जाण सरल नी छा। गुलेथ लगा गिरगाँव को जागीरदार ब्रह्मानन्द नौटियाल भी उजड़ीगे छौ। खण्डाह की धरती बंजुड़ पोंड़ीं छै। जीमदरी राजा भी बणोन्दी अर भीख भी मगान्दी। ब्रह्मानन्द बदरीनाथ धाम को पुजारी छौ, कर्मकाण्ड को प्रकाण्ड पण्डत अर तंत्र-मंत्र अर भूत विद्या को ज्ञाता। उच्च कुल को 'सरोला' ब्राह्मण, जैकी इलाका मा सरोलाचारी छै। इन मा वु उबरीगे, पर गोरख्यों क घघरा तौळो जुवां बण्यूं रै। क्य कन? जैकु खाण वेकू गीत लगाण। गोरख्यों तैं वेन धनपाणि की सेवा करी, अफ बचगी, पर वेका कास्तकार लोप ह्वेन। गोरख्या गौ-गंगा-बामण की इज्जत करदा छा।

पढ़ सकी त पोथी वेकी अर तर सकी त खेती वेकी। ब्रह्मानन्द पोथी अर खेती को सल्ळी छौ। खेती चालू करण छै, तजबीज शुरू ह्वे। ब्रह्मानन्दैऽ स्वेण 'मैणा देवी' बडियारगढ़ गैरोला सरोळों की नौनी छै। वींको धर्मचरू 'केदार जयाड़ा' दगड़ी छौ, जु वीं तैं सैसुर ऐथवाणो आंद छौ। ब्रह्मानन्दन वे तैं गुलेथ बसणै सलाह दे अर भरोसु भी दे, कि वुंका बाद जयाड़ा तैं भूमि को बांठो मिललो। खेती अर बेटी नित निगा की। खेती त छैं छै, पर बेटी? ब्रह्मानन्द अर मैणा का बाल-बच्चा नी छा। निपुतू होण दुरभाग होन्द। निपुता चूलै सौतेलू भलो। कैन गोद लेणै सलाह दे, पर कैन अपणी कोळी को बाला किलै देण छौ? धौंसकी 'झांझड़' को एक जुयाल जाति को 'बाळा' दत्तक पुत्र धरीगे। यनि मा एक मौऊ राणो की कठुड़ पोखरी बटि, एक मौऊ मंजखोलों कि, दुर्गादत्त मंजखोला, द्वी मौऊ केसुन्दर क 'रौतों' की, द्वी-तीन मौऊ कोळी व एक मौऊ दास गुलेथ बसीन।

समय अगनै सरकी, मैणा देवी परलोक सिधारी। कुछ दिन बाद रूढ़ियों मा हैजा फैली अर ब्रह्मानन्द तैं हैजा ह्वेगी। जैं तैं क्वी नी मार सको, वेतैं व्याधि मारो। हैजा फैलण वाली बिमारी च, ये वास्ता कैन भी ब्रह्मानन्दै तिमारदारी नी करी। 'गोद पुत्र' बाला जुयाल तैं भी वेंमू नी जाण दीयेगी। भरी तीसन दाना बामाणै गौळी उबै, पर क्वी पाणी देणू खड़ू नी ह्वे, बुढ्या कोनी घीसड़े-घीसड़े कि ऐंच गुलेथ गौं बटि 'नरगढ़ी' धारा मु पाणि पेणो गै अर ह्वेन पेट भोरी पाणि पे, हैजा मा काचू पाणि जैर होन्द, बुढ्या तड़प-तड़फी वखी धारा मु मोरिगे। गौं वाळोंन देखी त नजीक एक खढढ़ा खौंणी अर लाठों धकेली बुढ्या वे उन्द फेंकिक, खढढ़ा माट्न भोर देनी। यन मा वे बदरीनाथ क प्रकाण्ड पण्डत, तंत्र-मंत्र अर भूत विद्या क जाणकुर विद्वान की सद्गति ह्वे।

कुछ दिन बाद, 'गुलेथ गौं' मा यन होण लगी कि कैन सोचि बी नी छौ। रात गोरू अफी खुल जौन। अर बोंण डकये जौंन। नौनियालों अर जननियों पर छौळ-छपेटा की वारदात होण लगीन। रात ढुंगा-ढौळों कि बरखा होण लगो। जगा-जगा गधरों ऐड़ाट सुणे जावो। कंडाली अर तिमलों पर भट्टा जन फल लगण लगीन। भितर सियां मनखी, सुबेर चौक मा नांगा मिलुन। नरगढ़ी गदरा बटि 'धैं' सुणेण लगीन—'गोरख्या ऐगिन, गोरख्या ऐगिन'। डौर अर दहशतन लोग परेशान ह्वेगेन। गौं का कै मु जाँच-पूछ करदा, जु ब्रह्मानन्द जाणकुर छौ, वु त खढढा पेट छौ धरयूं।

नजीक गौं को धामी बुलायेगी। रात घटीयालो लगी त, सामणी ऐकी खड़ु ह्वे, पन्द्रह फीट को जिन्ड मसाण, माटा-कछिलन भोरियूं, लार चूणी, आँखा बन्द, फुंफकारदो—"मेरी भूमि गुलेथ छोड़ दियावा, मैं कै सणी यख सुख-चैन से नी जींण देलो।" लोखूं तैं परचा मिलीगे कि या सैरी कारस्तानी ब्रह्मानन्द नौटियाल की च। वु अब 'बरमरागस' बणिगे। पूजा खतम ह्वे, त सुबेरी धामी अपणा ठिया, ओवरा मरयूं, कड़कड़ों मिली। इनी-इनी करी तीन धामी खता-खती मरगेन। बरमरागसै दहशत सैरा पट्टी अर वे का बाद गढ़वाळ जिला मा फैली। गुलेथ बरमरागस प्रसिद्ध ह्वेगी। धामीयुंन गुलेथ जाण बन्द करदे। गुलेथ गौं क लोग परेशान अर मजबूर वेकी अपणा टिन-टिपड़ा उठै की मल्या गौं लीगिन। झोपड़ा बणगिन, पर फिर वही कथा शुरू—'या भी मेरी भूमि च, छोड़ा मेरी जगा जागीर।' खबेश बणयूं बिकराल। गरीबी अभौ अर गोरख्यों का अत्याचारों उपटै गौं वाळों तैं ना चूल्हा खारो ना तौला पाणी। जब तलक राण-खाणै हक्की व्यवस्था होन्द, गौं वाळा सबी बाल-बच्चों, दानों-सयाणों दगड़ी एक तिबारी मा रैन। छोटी सी बगली, वखी बाबा को झमण्डळ-कमण्डळ। भीतिर जनाना बच्चा अर भैर ढिंढाळा लाठों लेकी बैख। हरीजन तिबारी का ओवरा रैन। जनना अर मर्द अलग-अलग झुण्टा मारी पाणी लेणो, नहेण-धुयेणो, अर भैर फुण्ड दगड़ी जान्दा। लोक अपणा गोरू, हौळ, कटियार, देवता सबी वखी लैगीन। सैरू गौं एक कूड़ा भीतर, तौळी-भात पको। चौक मा आग जळयीं रान्द छै अर गौं गौळा मा खबेश ढिमढियाट सुणेन्दू। गौं वाळोंन सलाह करी, पड़ोस असनोली गौं क, कोळी लोखु

बटि अस्सी नाळी भूमि खरीदी अर नया गौं कू बसागत होण बैठि। एक पुराणा पीफल क कारण नया गौं को नौ पड़ी 'पीपलकोटी'। गौं वाळा पीपलकोटी जाण बैठिन पर धैन-चैन, खेती-बाड़ी गुलेथ ही रै, जु करा दिन मा करा, ब्याखुनी क बाद त गुलेथ राण मुश्किल ह्वे जान्द छौ। ये चुलै गोरख्याणी भलि छै।

अंग्रेज हाकीमु मु भी गुलेथै खबर पौंछी, वोंन भी क्या करण छौ। पौड़ी बटि श्रीनगर डिस्ट्रीक बोर्ड की सड़क पर जाण दां करैंखाल धार मा, गुलेथ घस्यारियुन, अंग्रेज कलेक्टर मू आप बीती लगै। गोरा साबन कानूनगो खण्डूडी अर पटवारी गैरोला, जू नजिक गौं बछेली का छा। रिपोर्ट भेजणो अर समस्या निवारण को आदेश देनी। कई मौत होण इन जरूरी समझीगे। कागजी खानापूर्ति क अलावा कुछ नी ह्वे। सरकारी काम काज मा 'भूत-खबेश' को अस्तित्व नी होन्द।

गुलेथ 'केदार जयाड़ा' की धियांण इडवालस्यूं बाडा का बिटों मा छै बिवार्यी। बैणी त बैणी होन्दी। मैते पीड़ा ज्यादा बबराट करदी। जलम भूमि क कुहाल अर दु:ख देखी वीं की छत्ती फटिगे। सुबेर बिनसरी मा ये कारण वा धामी थेपड़ू का चौक रोन्द-रोन्द पौंछी।

अब गौं की ध्याणी को रैबार, वीं को बडु लड़ीक लेकि नया गौं पीपलकोटी पौंछी त सबी दाना-सयाणों सलाह करी अर निर्णय ले कि गौं को दास मंगलदास लुंका बाड़ा जाळो अर ब्युखनि तलक धामी ले आलु। कै खबर न हो, खबेश तैं त कतै ना।

घाम अछेयण से पैली मंगलदास बाड़ा पौंछी, पदानु की ब्वारी तैं मिली, सेवा सौंळी ह्वे, ब्वारी वे से भींटे। मैंतो पंछी भी प्यारू होन्दु। पर मंगलदास वीं तै बदल्यु-बदल्यु, डरयूं-सैम्यूं लगी। मसाणै डौर। मंगलदासन न त कुछ खै पे अर न ही अपरी पूफु भेटेणो गै, सीधा ब्वारी दगड़ी धामी दादा क चौक पौंछी, धामी झोळा कान्दा पर धरी अर चल पड़ी। अगनै-अगनै धामी कि लाठी, पिछैने फुण्ड मंगलदास। यकुला चुलै सौत भलि। ब्वारी वों द्वीयों तैं दूर तलक गदरा उतरदो, चढ़ै चढ़दो अर धार-धरी जान्द देखणी रै, जब तलक वु धार पलतीरफ नी ह्वेन। पीपलकोटी बाड़ा बटि पांच मील पर च। द्वी धामी अर दास बारैं गदरा ह्वेकी खोळी नौ गौं चली, गिरगौं पौंछीन। रस्ता फुनै धामी चिताणु रै कि जब भी वो अगेळु बाळि चिलम जगौन्दु त मंगलदास छिबड़ै कि इनै-उनै ह्वे जान्दो। यन कई दा ह्वे। धामी चितैगी कि वे दगड़ी आदमी उट-पटांग च अर मनख्यों जन नी, गड़बड़ च। गिरगौं की अगनै जैकी, खण्डाह गाढ़ का 'भटणी रौ' क ठीक ऐंच, खाणी क आम मु एक बड़ू-भारी पठाळया ढांग मा बुढया बैठि, अर वेन दास तैं पूछ ही दे—

"भै मंगलदास अपणो परिचय दे ही दी, इखमा डरण वाळी क्वी बात नी।"

"जब तू जाणही गैं धामी त मी त्वे बतौन्दु मी वु ही छौं जैका जुगति तू गुलेथ जाणी छैं। अब बोल बे नकटी देवी का गन्डा पुजारी, साध सकली मैं?" इतगा बोली खबेशन खट करी धामी को सांखू पकड़ी दे। पकड़ा-पकड़ी ह्वेगी। हबड़ाट मा धामी क्या करू? वेन मंत्र पड़ण शुरू करीन। खबेशै पकड़ ढीली पड़ी। अब द्वीयों मा मंत्र पड़णे कि होण मची। धामी अपणी किताब खोजण लगी त खबेश हैंसी—

"अबे झोळा यांकु त मेरू अफुमु रखयूं च। त्वे मिन अबि गाड फेंकण।" खण्डाह गाड वे ढांग से सीधा भेळ तौळ छै। तौळ देखि प्राण हाथ मा आणा छा। तुरन्त धामी न ऊखी पड्यां कुछ घंघतीर का टुकड़ा उठैन अर मंत्री तैं अपणा घौर जनै फेकिन, वेकि दूसरी पोथी हवा मा उणादी, घौर बटि वेका हाथ मा ऐगी। खबेश न भी झोळा बटि पोथी निकाळी, अब द्वी पोथी पढ़ण लगीन, मंत्र पर मंत्र अर काट पर काट, ले भिड़-भिड़-भिड़। एक दुसरै ताकत अजमायण जाण लगी, पूठ्ठ जोर लगीगे, एक को गुरु दुसरू, दुसरौ चेला पैलू। क्वी कै से कम न, द्वी समझगेन कि टक्कर बरोबर की च। इनी म कई घड़ी बीत गैन।

अब असली मंगलदास बाड़ा गौं पौछी त पदानों की ब्वारी अर धामी का घौरवाळा समझगैन खबेश धामी तै लि गे। गयो बुढ्या हाथ से। फटाफट कुटुम्ब गौं का कई भैख तैयार ह्वेन अर भागीन लाठीं-रांकौं लेकी गुलेथा रस्ता। हांफदु-हांफदु पौछीन त देखि वे पठळिया ढांग मा शास्त्रार्थ चलणू च, पर कै दगड़ी को च? कख च? पर हां समझेणु छै च। रूमक पोडिगे छै। काफी देर बाद धामी न आदातनुसार पोथी पड़दो-पड़दो अपड़ा खिस्सा पर हाथ डालिन त वे का हाथ द्वी-चार दांणी दाल-चौळ लग-गैन। बस फिर क्या छौ? धामी न मंत्रीन वू अर मार ताड़ा खबेशा मुख पर। खबेश अडगट अर बन्धे सी गे। भौत कोशिशा बाद वो हर मान वेकी धामी तैं गुरु बणौणो तैयार ह्वेगी—

"मी धामी त्वे गुरु बणौदो पर त्वे मैं बतौण पड़लो कि त्वेन मी कनमा बांधी, भूत विद्या को जाणकुर मैं से बडु क्वी नी।"

"दिखेणो च पर त्वे अपड़ी विद्या नी बर्तै सकदो, मी बेवकूफ नी छौं, त्वे आज अर अबि गुलेथ छोड़ी जाण पोडलो।" धामी गरजी।

"न मीन नी जाण, मेरू ही मरो अर मी ही डांड पडो।" भूत अडिगी।

"बाह्माण जोनी को विद्वान मनखि अर यी हाय-खायी, इन करम। अरे! पंदारी तीस अर घटवाळी भूख कख छै।" धामी को बोळ लुहार क घौंण बरोबर चोट मारिगे। गशै गशै की रूवे खबेश अर फिर वेन बोली—

"अपड़ी भूमि पर मेरा बसायां छन वु लोग अर मै ही दगड़ी वुं को यु व्यवहार? कण्डली लगै कि दान नी होन्द। अरे निरपाणी तीस मोरीयु मी। जीता जी दंगम-दंगा, मरणा-पाछम गंगम-गंगा। गुण न अहसान, गाढ़ तौरी लाठू नी छोणेदो। मैं किलै खडडे? अतिरपत आत्मा को गुस्सा आसमान पर छौ।

"हवन करी हाथ डम्येन्दू ही च, जो चाली वो होलो, बोळ क्या चैणो त्वे?" धामी पंच बणीगी।

"मेरू काटू-पितराडो गुरु, मेरू काटू-पितराडो करवा"। खबेश न दांत किटकिटैन।

"कनमा होण? काटु-पितराडो कि विधि बतौ"। धामी न आदेश देई।

"मैं खडडा बटि निकाली, बिलकेदार घाट पर अग्नि दिये जाव, पित्र लोडो गिरगाँव धरयेन, मेरी अस्ति गंगा सिरये जाऊन, मैं अग्नि मेरू धर्मपुत्र देलो। गाढ-धारो काम मैठाणा गौं को गंगाधर मैठाणी कि देख-रेख मा होलो। गुरु करवै दे मेरू यो काम"— खबेश उपाय बतायी।

"यनी होलो त फिर ली घोड़ा, खोल घोड़ी।" यु बोलण क दगड़ी धामी किल्लकी अर खबेशऽ भंयकर ऐडाट मची, वख खड़ा मंगलदास अर गौं कुटुम्ब का लोखून देखी कि धामी खबेश तैं वे पठाळीया ढांगा तौळ किलै कि रखेली।

देर राती बुढया पीपलकोटी पौछी, गौं वाळो सुणी त वु विश्वास नी ह्वे। कातिक औसी की वीं राज-बग्वाळ की रात मंगलदासन निकाली अपणो ढोल-दंमौ, अर वे क बाद ह्वे भैळो दगड़ी एक खुट्या नाच।

ब्रह्मरागस को बोल्यूं करेगी। ब्रह्मानन्द को माटू, खाड बटी निकाळी, एक लाठै सांग मा रखी बिलकेदार पैतृक घाट लिजायेगी। अग्नि 'बाळा जुयाळन' देई। सबी जातियुं क गुलेथ वाळो न मुण्ड मुडैन अर बेळ देई। जै को मरो, क्या नी करो। शुरू होणा का बाद पितृ कुड़ो धरीक, साल भर आवजो जगोळी।

गुलेथ बटि खबेशऽ पीछा छूटी, दुखणो फूटी, हाय गई। पर गौं वाळा पीपलकोटी बटी वापस गुलेथ बसणो नी गैन। काळ देखी, कर्ता डरो।

रात बिनसरी मा धामी थेप्पड़ू दादा अपणा तिबारी बौड़ी, चौक मा हुयां छिबड़ाट अर रोण को गुंगड़ाट सुणी धामीन किवाड़ उगाड़ीन त देखी, भैर पदानु की ब्वारी खड़ीं च, दगड़ा मा लड़िक सूरज।

"ब्वारी य रोणी-धोणी क्यां कि"

"हे जी यी खुशी का आँसू छन"।

"खबेश तुमरा गौं जनै ढुंगू फरकै कि चलिगे, अब निचन्त ह्वे जा।"

"हे जी तुमुन ही कर सकण छौ यू, पर मैं धनी होणी च, तुमुन वे दगड़ी कनमा सौकी?" ब्वारीयु पराण पंछी जन हलको हुयों अर मुख वीं को दप्प चमकणो। वीं न परात भोरी स्वाळा-पकोड़ा, धामीया अगनै सरकै दीन।

"ब्वारी छल-बल करण खबेशऽ काम होन्द, मिन त बस जरा सी हिम्मत बांधी रखी अर काम ह्वेगी। मैं बताऽ रणु क बागीन कब जाण काण्डा?"

"हे जी भोळ।"

"मीन भी जाण बागी दगड़ी काण्डा। जावा अब घौर जावा, जुग-जुग रा।" बुढ्या स्वाळी-पकौड़ियों पर मिस्स्ये गी।

आज बि पीपलकोटी गौं राजस्व का कागजातों मा कखी नी अर राजस्व गौं गुलेथ कागजों मा त च पर बांजा होण क कारण अस्तित्व मा नी। पीपलकोटी मा ओणी क उनियाल, भट्ट, मैठाणी अर नेगी जाति का लोग बाद मा बसीन। लेखक 'केदार जयाड़ा' को वंशज च।

धामी थेप्पड़ू दादा कि 'हाम' खूब फैली। पदानु की ब्वारी धामी क कुटुम्ब दगड़ी मिली, वे की आखिरी बगत तक सेवा करी। पाणी बौगीगे पर बात रैगे।

❑❑

सोलर कुकर यानि घामल पकाओ खाणो

डॉ० ईशान पुरोहित

जन्म : 5 सितम्बर, 1979
शिक्षा : एम०एस०सी० भौतिकी, पीएच-डी० सौर ऊर्जा
रुचि : स्वतन्त्र लेखन, राष्ट्रीय पत्रिकाओं में कई कहानियां और लेख प्रकाशित
उपलब्धि : देश के प्रतिष्ठित संस्थानों में अतिथि प्रवक्ता, उच्च शैक्षणिक संस्थानों में 50 से अधिक व्याख्यान, 150 से अधिक शोधपत्र प्रकाशित
सम्प्रति : विश्व बैंक में ऊर्जा विशेषज्ञ
सम्पर्क : सी-93, फेस-1, डी०डी०ए० फ्लेट, कटवारिया सराय, दिल्ली-16
मो० : 9899113184

पहाड़ी गौं मा रौण वाळा हमरा लोगों की जिंदगी बौत आसान नि होन्द बल्कि जितगा स्वाणी तखै तस्वीर रौंदी अर्यों वाथिगा वख जटिलता रौंदि जेथे वी महसूस करि सकुद जु वीं जिंदगी थै जीणूं ह्वो या फिर आज बि अपणी जड़ों से जुड्यूं ह्वो। लैट का बाद हमारा पहाड़ों मा जु समस्या चा वु यख खाणों बणोंणों थैं प्रयोग होण वाळा ईंधन की च। जु गौं डांडा पर छन बस्यां वख बौण जादा घौणा रौंदा जैसे वख रौण वाळा लोगुं थैं जगौणों थैं लाखड़ा मिल जांदा। लेकिन जु गौं जंगलों से दूर बस्यां छिन वख लाखड़ों का साथ-साथ प्यौणा पाणी बी भौत दिक्कत होंद। कति लोग लाखड़ों का बाना गोबर से बण्यां गोसों पर बी निर्भर रौंदा त छोटा-छोटा कस्बा पुन लोग मर्त्यौल वाला स्टोव बी बाल्दा। अब त हमारा पहाड़ों का कत्ति गौं मा बी गैस सिलिंडर की सुविधा ह्वयेगी पर गौं मा यौक गैस सिलिंडर भरौंण कितगा बड़ू काम च यीं बात वी समझि सकुद जैन कान्दि मा कै किलोमीटर गैसो सिलिंडर रे ह्वो बोक्यूं।

एक अच्छु वाळु (आई०एस०आई० मार्क) बक्सा टैप सोलर कुकर तकरीबन तीन हज़ार रुपया मा ओंद राज्य सरकार सब्सिडी बी द्यौन्दि। हमारा राज्य मा उत्तराखंड रिन्यूएबल इनर्जी डेवलपमेंट एजेंसी (उरेडा) विभाग की सब्सिडी द्यौन्दु जु हर साल घटदी या बढदी रौंदि। कुल मिलैथे हमारा राज्य मा यौक सोलर कुकर द्वी हज़ार से कम कीमत पर ऐ जांदू जैकि उम्र कम से कम दस साल तक होन्दि। हमारा राज्य मा साल भर मा कम से कम 250 दिन चटक घाम रोन्दु। अब अगर क्वे परिवार सिर्फ एक बक़्त साल भर कु खाणों सोलर कुकर मा बणो त एक साल मा तीन गैस का सिलिंडर बचि सकदा जैकु मतलब च कि लागत द्वी साल से कम बक्त मा वसूल ह्वे जालि। यनु नीच कि सोलर कुकर मा सिर्फ दिन मा ही खाणों पके सकदा। दिन मा कुकर खाली कना बाद वैमा ब्याखुनी बगतो खाणों धरि सकदा। यैमा रोटी पकोण सम्भव त नीच पर ब्याखुनी दों थें दाल भुज्जि उज्ये सकदा जैसे काफी गैस बचि सकदी। कैगा चुल्ला पर लगणों बी क्वे सवाल नी च। अगर घौर का खौला या फिर छत मा थोड़ा सा जगा छौ जख छैल नि आन्दु त सोलर कुकर लेण कु ईथिगा ही जरूरत होंद।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्टों का अनुसार हर साल दुनिया मा सबसे जादा महिलाओं की मृत्यु रसोई घरों मा लाखड़ा अर उपला जगौण से पैदा होण वाळा हानिकारक धुवाँ की वजह से होंद। आपथें या बात सुणी ताज्जुब होलु कि शरीर का फेफड़ों थैं खराब होणो जितगा ख़तरा बीड़ी सिगरेट का धुवाँ से होन्दु वैसे ज्यादा ख़तरा रसोई का धुवाँ से होन्दु। एक आदमी दिन मा आठ दस सिगरेट प्योणा बाद जितगा धुवाँ गटकदु वैसे ज्यादा धुवाँ चुल्ला पर बैठीथैं एक महिला का शरीर मा प्रवेश करि जान्दु। श्वास से लेकर दमा, क्षय रोग, अर फेफड़ों का कैंसर तक सारी घातक बीमारि धुवाँ का बाना ह्वे सकद। चुल्ला परा धुवाँ थे वैज्ञानिक भाषा मा 'साइलेंट किलर' बि बोल्दा किले कि यु भौत खतरनाक होंद। या बात बि सोचण वाळी च कि जु गैस (एल०पी०जी०) हमारा घरों मा प्रयोग मा औंदि यनु नी च कि येन प्रदूषण नि होंदु। जब बिटिन गैस निकल्दी च वीं गैस थे साफ़ करणा और उपयोग करणा का वास्ता भौत ऊर्जा की जरूरत होंद जु बिजली या अर के माध्यम से देण पड़दि जैसे भौत प्रकारा प्रदूषण होंदा। हमारा घौर तक मा यौक सिलिंडर से इथ्या प्रदूषण पैल्ये होयां रौंदा कि या तकनीक पर्यावरण थें जादा फ़ैदु निकरदी। हां या बात जरूर च कि चुल्ला मा लाखड़ा फूकण से जादा स्वास्थ्यकारी गैसो चुल्लु च।

द्वी तीन साल बिटिन देखुणु छौं कि गौं मा बिजली से चलण वाळा इंडक्शन कुकर काफी प्रसिद्ध छिन होयां। लेकिन योंकि समस्या या च कि एक त बिना बिजली कु यि काम नि करि सकदा। अर थोड़ा सा बि खराबी ह्वे जो ते यौं थे ठीक करोंण सम्भव नी च। फिर यि कुकर फुण्ड फरोंण पड़दा किले कि यि फिर कीं काम नि औंदा। जय दिन घाम नि रौन्दु ते दिन सोलर कुकर थैं बिजली से चले सकदा। किलै कि येमा खाणों भौत धीमि गति से बणदु जेका बाना येथें भौत कम बिजली की जरूरत पड़दि। झौळ कम या जादा कनों मुंडारु बी नी च किले कि येमा खाणों फुकयोंद बि नी च।

चार घंटा बि अगर तड़तुड़ु घाम मिल जौ त सोलर कुकर पर आराम से खाणों पाकि जादूं। बक्सों वाळा सोलर कुकर मा हम दाल, भात, भुज्जी, पिज्जा, केक, शिकार, सब्बि धणी पके सकदा। पकोंण आय फूकण मा अंतर होंद। चुल्ला पर खाणों फुक्यणे डौर रौंदी अर फुक्यणा बाद खाणों मा उपस्थित सब्बि पोषक तत्व ख़तम ह्वे जांद। तक्खि सोलर कुकर मा अगर खाणों द्वी घंटा जादा बि भितर रैगी तब बि सु फुक्योन्द नी च।

या बात त हम सब्युन थैं पता च कि क्वे बी चीज अगर घाम मा च, त कुछ टैम बाद स्या चीज गरम ह्वे जान्दि। दोफ़रा मा किलै कि घाम खूब चड़चड़ू रौंद त वीं बार सबसे ज़्यादा गर्मी महसूस होंदि। अब हम अपणी जगा पर क्वे सिल्बरो या तांबों भांडू घाम मा धरला त वैकु ताप भौत जादा बढ़ी सकुदु। चुल्ला उन्द बी हम लाखुड़ा जगैकि कै भंडा थे गरम ही रौंदा छन कना। बस अगर वी गर्मी लाखड़ों थैं जगौणा बजाय घाम से मिलि जौ त कनु ह्वे जौ। हमारा पहाड़ों पर साल भर मा कम से कम 250 दिन यनु रौंदा जब घाम खूब चड़चड़ु रोंदु। बस्क्याल अर ह्यूंद घाम ज़रा छलछलु रोंदु। किले कि हर घौर मा खाणौ बणोंण एक सतत प्रक्रिया च यांका बाना यनु तकनीक खोजणे जोरत च जु आरामदाय को, जैमा धुवाँ न ह्वो, अर जैसे पर्यावरण थे कम से कम नुक्सान ह्वो।

सोलर कुकर (घाम परो चुल्लु) यौक यनु तकनीक चा जैमा घाम (सौर विकिरण) थे ताप मा परिवर्तित करीथे वीं तापीय ऊर्जा कु उपयोग खाणों बणोंणों थे करदा। किले कि के बि जगा पर घाम सदा एक सामान नि रौंद वैका बाना यीं तकनीक मा घाम की तीव्रता कम जादा कना साधन उपलब्ध रौंदा। अब आप लोग सोचा, हमारी धनक्यौर बेटी-ब्वारी जब सुबेर मा धाण पर जांदि अगर तै वक़्त सि अपणा सोलर कुकर उन्द दिन कु खाणों बनोंणों थें धरि देंदा त तीन चार घंटा मा खाणों पकीथै तैयार ह्वे जालु। सबेर कल्यो कि रोटी खैथे जब पुंगडा जाणे त्यारी रोंदी होणी वीं बगत सोलर कुकर मा भात, दाल और भुज्जी जु बी दिन मंगो खाणों च वु चार-चार भंडयों मा धौर द्यौन। सोलर कुकर यनु जागा पर धनु जख पर खूब घाम औन्दु ह्वो। बस काम ख़तम। जब तक दोफ़रा मा पुंगड्यूं बीर्ती धाण पाण निबटै कु घौर औंदी तबार तक सोलर कुकर मा फसक्लास खाणों त्यार। बस वापस औणा बाद सोलर कुकर खोलि अर वैका भितरा भंडा भैर गाड़ी थे अपणा भितर लिजाण। न बल धुवाँ मा जिकुड़ी फूंफणे जोरत अर न चुल्ला परो मुंडारु। होर त होर बल भंडा बी काला नि होन्दा। भलो सुन्दर फरफरू भात त्यार।

या बात हमथैं समझण ही पड़ली कि हमारा शरीर का फेफड़ों अर आंखों का वास्ता सिर्फ बीड़ी सिगरेटों धुवाँ ही खतरनाक नि होन्दु बल्कि यों से कई गुना खतरनाक चुल्ला पर बैठी थे लाखड़ों अर गोबरा उपलों मा खाणों बणोंण होन्दु। वबरो धुवाँ त इथ्या खतरनाक होंदु कि दमा से लेकर श्वास तक की बीमारियों थे न्यौत देंद। इक्कीसवीं सदी मा बी हमारा देश मा होण वाळी सबसे जादा मौतों को कारण यु जैरीलू धुवाँ ही च। अब कत्ति लोग यु ह्वला सोचणा कि सोलर कुकर ल्यौणे क्या जोरत च जब गैस कनेक्शन मिलणा छन। होर तो होर बल सिलिंडर पर सब्सिडी बीच मिलणी। हमारा गोऊँ मा गैस सिलिंडर भरौंण माने यौक लड़े जीतणा बराबर च। दूर धारों बिटिन पूरा दिनों काम छोड़ी थैं लोक कन्धा मा या कंडा पर ख़ाली सिलिंडर ल्येथैं सड़क मा रौंदा अयां। कै बार त मैना द्वी मा गैसो ट्रक पोंछदे नीच त लुकारी छांस-छवाले रौन्दी हुईं। बरसात मा त होर बि समस्या ह्वे जान्दि गैस भरोणे।

सोलर कुकर एक छोटा चार आदिमूं का परिवार से लेकर हज़ारों लोगों थे एक ही टैम पर खाणों बणोंणा हिसाब से विकसित होयां छिन। किलै कि हमारा देश मा जितगा विविधता भाषा, पहनावे, संस्कृति और समाज की च वी विविधता यखा भोजन मा बी च। जलवायु का हिसाब से सबि क्षेत्रों का खान-पान बि विशेष छिन। जेका बाना खाणों बणोंणे ऊर्जा की जरूरत बि अलग-अलग होंदि। ज्यादातर भारतीय लोग बोइलिंग (उबाळयूँ) अर फ्राईंग (तौल्यु) तरीका से भोजन करदा। अलग-अलग टैपा सोलर कुकर के ढाबा पर से लेकर कीं स्कूल मा तक प्रयोग करेंदा। चार निम्नलिखित प्रकार का सोलर कुकर अबि तक दुनिया भर मा सबसे जादा प्रयोग किए जान्दन—

1. **ओवन टाइप सोलर कुकर (तकरीबन 60-70 डिग्री तक) :** ये टैपा सोलर कुकर सि लोग प्रयोग करदा जू 'बेकिंग' विधि से खाणों (जनु केक) बणोंदा।
2. **बक्सा टाइप सोलर कुकर (तकरीबन 100-130 डिग्री तक) :** ये टैपा सोलर कुकर सि लोग प्रयोग करदा जू 'बाइलिंग' विधि से खाणों (जनु भात, साग, भुज्जी आदि) बणोंदा।
3. **छतरी टाइप सोलर कुकर (तकरीबन 200-250 डिग्री तक) :** ये टैपा सोलर कुकर कि लोग प्रयोग करदा जू 'फ्राइंग अर रोस्टिंग' विधि से खाणों (जनु स्वांला, पकोड़ा, शिकार आदि) बणोंदा।
4. **स्टीम टाइप सोलर कुकर (तकरीबन 300-350 डिग्री तक) :** ये टैपा सोलर कुकर एक ही बार मा भौत लोगों थे खाणों बणोंणों थे प्रयोग करेंदा। ये वाळा कुकर मा पैला काम दबाव की भाप (लगभग 10 बार) बणोंदा फिर वे से बड़ी मात्रा मा खाणों बणोंदा।

सोलर कुकर जु घौंरों पुण्ड काम मा औंदा वु द्वी प्रकार होंदा। अगर परिवार छोटू च जैमा तीन चार सदस्य रौंदा त बक्सा वाळु (बॉक्स टाइप) कुकर ठीक च, अर अगर कुटुमदारी बड़ी चा तब छतरी चर्यों डिश वाळु कुकर प्रयोग करदा जैमा घाम थैं यौक जगा पर फ़ोकस करदा। फोकस वाळी जगा पर भौत जल्दी ताप बढ़ी जांदू जैमा क्वे प्रेशर कुकर या वै भंडा थैं धरदा जैमा खाणों पकौंण च।

चित्र : 1. बक्सा टैप सोलर कुकर

छतरी टैम वालु सोलर कुकर पांच छ हज़ार रुप्या मा ओंद जै पर सब्सिडी बि मिलदी। ये टैपा कुकर बड़ी कुटुम्बदारी थैं ठीक रौंदा। या फिर सरकारी स्कूलों मा 'मिड डे मील' कार्यक्रम मा खाणों बणोंणों थें ठीक रौंदा। ये टैपा कुकरों मा खाणों थैं फ्राई बि करि सकदा। अगर ये टैपा कूकर थें ठीक से प्रयोग किए जो त साल भर मा आठ दस गैसा सिलिंडर बचाए जै सकदा।

द्वी तीन साल बिटिन देखुणु छौं कि गौंऊँ मा बिजली से चलण वाळा इंडक्शन कुकर काफी प्रसिद्ध छिन होयां। लेकिन योंकि समस्या या च कि एक त बिना बिजली कु यि काम नि करि सकदा। अर थोड़ा सा बि खराबी ह्वे जो ते

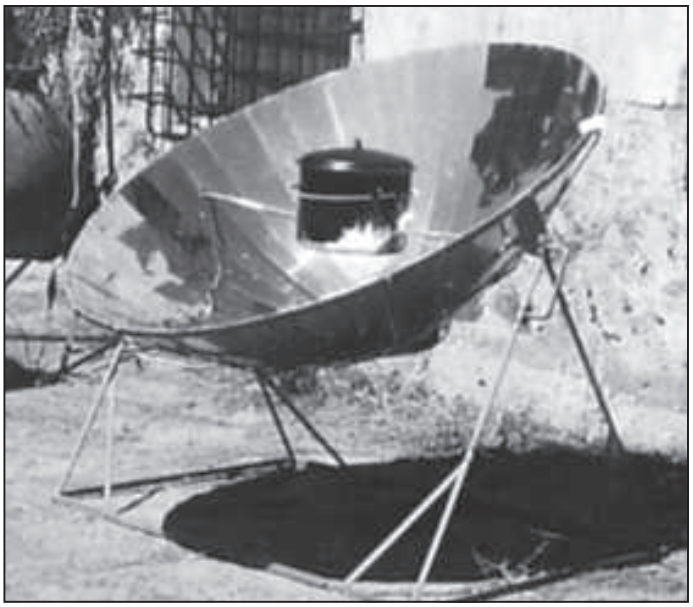

चित्र : 2. डिश टैप सोलर कुकर

यौं थे ठीक करोंण सम्भव नी च। फिर यि कुकर फुण्ड फरोंण पड़दा किले कि यि फिर कीं काम नि औंदा। जय दिन घाम नि रौन्दु ते दिन सोलर कुकर थैं बिजली से चले सकदा। किलै कि येमा खाणों भौत धीमि गति से बणदु जेका बाना येथें भौत कम बिजली की जरूरत पड़दि। झौळ कम या जादा कनों मुंडारु बी नी च किले कि येमा खाणों फुकयोंद बि नी च।

चार घंटा बि अगर तड़तुडु घाम मिल जौ त सोलर कुकर पर आराम से खाणों पाकि जादूं। बक्सों वाळा सोलर कुकर मा हम दाल, भात, भुज्जी, पिज्जा, केक, शिकार, सब्बि धणी पके सकदा। पकोंण आय फूकण मा अंतर होंद। चुल्ला पर खाणों फुक्यणे डौर रौंदी अर फुक्यणा बाद खाणों मा उपस्थित सब्बि पोषक तत्व ख़तम ह्वे जांद। तक्खि सोलर कुकर मा अगर खाणों द्वी घंटा जादा बि भितर रैगी तब बि सु फुक्योन्द नी च।

एक लोग यु बी पूछ सकदा कि बरखा पाणी मा क्या होलु। यैकु एक विकल्प या च कि सोलर कुकर पर बि बिजली से खाणों विकल्प रौंद। अर अगर बिजली बि नई च ते वे बग्त हम गैस कु चुल्लू प्रयोग करि सकदा। आप लोग खुद सोच सकदा कि अगर हम एक साल मा 200 दिन बि सोलर कुकर मा खाणों बणोंदा अर वे कि जगा पर लाखड़ों या क्वीलों वालु चुल्लू नई जगौंदा त हम पर्यावरण मा कत्ति हानिकारक प्रदूषण होण से रोकि सकदा। एक तरीका से सौर ऊर्जा तकनीकों कु निरन्तर रूप से प्रयोग कन्न बि कत्ति डाला लगोणा बराबर च।

उरेडा की सहायता से हरिद्वार शांति कुञ्ज मा बि सोलर कुकर संयंत्र स्थापित होयुं च जैमा प्रतिदिन करीब एक हजार लोगों थे खाणों बणे सकदा। ईथिगा बड़ी योजनाओं मा अगर कै दिन घाम नी च त बिजली या फिर डीजल से प्लांट थे चले सकदा। महाराष्ट्र राज्य की शिरडी साईं धाम मा त दुनिया को सबसे बड्डू सोलर कुकर संयंत्र च लगयूं जै कि कुल क्षमता प्रतिदिन पचास हज़ार लोगों थे खाणों बणोंणे च। ये प्रकार की परियोजनाओं पर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सब्सिडी मौजूद छिन जौं थे प्रयोग करीथे भौत अच्छि कमै की जै सक्दि और हम अपणी ऊर्जा और पर्यावरण की समस्याओं थे बि सुलझे सकदा।

मिन अपणा लद्दाख प्रवास का दौरान तखा लोगों थे सोलर कुकर कु सफलता से प्रयोग कनू देखि। लद्दाख (लेह और कारगिल जिला) का दूर दराज का छेत्रों मा जख आज तक बि सड़क अर पाणी नी च अर जखो तापमान जड्डों मा शून्य से बी तीस चालीस डिग्री मूड़ि रौंद वों जगहों पर सोलर ऊर्जा थे वख लोग एक वरदान माणदा। उड़ीसा, राजस्थान, गुजरात और उत्तर पूर्व का बि कत्ति राज्यों मा या तकनीक सरकार द्वारा भौत प्रभावी तरीका से लागू करयणी छिन।

हमारा पहाड़ी गौंऊँ मा कत्ति इलाकों मा भात बणोंण एक सामाजिक प्रतिष्ठा कु सवाल बि च। ह्वे सकुद कि लोग घौर से भैर खाणों बणोंण आसानी से स्वीकार नि करि सकूं लेकिन अगर हमारू शिक्षित समाज अग्ने ऐ थे सामाजिक वर्जनाओं थे तकनीक का सहारा तोड़ने कोशिश करू त लोग समझि सकदा। किले कि उत्तराखण्ड राज्य मा जंगलों को प्रतिशत देश का होर कई राज्यों की तुलना मा भौत जादा च जैकु वख रौण वाळा निवासियों थे फैदा मिलण चैन्द। ये एवज मा उत्तराखण्ड का लोगों थे सरकार से हरित पैकेज की मांग कन्न चैन्द जै का अन्तर्गत वख रौण वाळा लोगों थे सस्ती बिजली, सस्ती गैस अर जादा सब्सिडी वाला सोलर उपकरण दिए जों। पर्यावरण की शिक्षा का साथ-साथ अपारम्परिक ऊर्जा स्रोतों अर वों पर आधारित तकनीकों अर सरकार की सम्बद्ध नीतियों की सही-सही जानकारी समाज थे होण भौत आवश्यक च। ❑❑

छोटि उमर को बड़ो जीवन पै अश्वनी कोटनाळान

प्रो० सम्पूर्ण सिंह रावत

जन्म : 1 जुलाई, 1956
लेखन एवं सम्पादन
छह पोथि
शोध : 30 शोधपत्र अर आलेख, शोध जर्नल अर पत्रिकों मा प्रकाशित
50 क्षेत्रीय, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, कार्यशाला अर अधिवेशनों मा विषय विशेषज्ञ अर प्रतिभागी
सम्प्रति : विभागाध्यक्ष, प्रौढ़ सतत शिक्षा एवं प्रसार विभाग, हे०न०ब० गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल)
मो० : 09412356024
07351315423

कथगि मनखि अपरा बड़ा कामों की वजै से अपरी उम्र से भी ज्यादा बड़ा ह्वे जान्दिन, अर इन लगदू, जथगा वे मनखि उम्र च वे से कै गुणा जादा वु काम कर देंदिन। मनखि जोन मा औंदि सार वु बट्टि जन काम कन बैठि जान्दन अर धीरू-धीरू वु मनखि इन लगदू जनबुलै एक 'संस्था' हो, पर हर समाज मा इन मनख्यूं की संख्या कम होंदिन पर झणि किलै कथिगि मनख्यूं जन यू एक मनखि लगदु। इन्नी कथगै गुण छा वे अश्वनी पर।

मैं लैन्सीडौनक भुला अश्वनी की बात करणू छौं जु हे राँ आज हमारा बीच नि रै पर हर वक्त याद औंदिन वेका करया काम, वेकू त्याग, आज वेकी खाली समौण वणी रैगी हम सबमु। उन त ईं दुनियां मा जोनि की जौड़ कैकी नी खैर्यी। यख बटिन सब्बू तैं एक ना एक दिन जाण पड़दु। किलै कि यू शरीर नश्वर च, पर मनखि का करयां काम वेकू हर्तो-बर्तो ह्ववार-व्यवहार, आचार-विचार हमेशा हमारा बीच मा रौन्दिन।

अश्वनी 20 मई, 1970 कु पौड़ी गढ़वाल का छोटा सा गौं चमेठा मा पैदा ह्वे छौ, अर 5 नवम्बर 2016 कु मात्र 46 वर्ष की आयु मा भग्यान ह्वेगि। पर यीं छोटि सी उम्र मा वेन इना-इना सामाजिक कार्य कर दिनिन जु औण वली पीड़ी तै हमेशा याद रौला। वेका वूं कामों मा वेकी विलक्षण सोच, सरलता अर समर्पण की तस्वीर छपीं च। वेका काम हम सबु तै यु बतैगिन् कि मनखि की उम्र लम्बी होण का बजै वेका लोगु का भलै का बाना कर्यां काम ज्यादा लम्बा व स्थै होन्दिन। वु एक सौ साल सुदि पोड़ि-पोड़ी स्वार्थ मां बितायूं जीवन कै कामों।

भुला अश्वनी कु सैरू जीवन लैन्सीडौन मा बीति। लैन्सडौन का हर छोटा-बड़ा कामों मा अश्वनी कु योगदान जरूर रौन्दु छौ। वु चा लोगु की सार्वजनिक जीवन से जुड़ी समस्या होन या क्वी साहित्यिक, सांस्कृतिक काम रै होन, क्वी धार्मिक अनुष्ठान रै हो या पुस्तकालय-विद्यालय का सम्बन्ध मा, अश्वनी सबसे पैली परवाण बण जान्दु छौ, अर सुन्दर ढ़ंग से हथ मा ल्यूं काम तै निभांदू भि छौ।

मैं जबरि भी कै काम से लैन्सीडौन जै होलु त मेरू एक जरूरी काम अश्वनी तै मिलण भी रौन्दु छौ। उ हमेशा छ्वीं लगौन्दू-लगौन्दू कस्बा का विषै मा जरूर बात करदू। लोगू की परेशानी, अपणु इलाकु सांस्कृतिक अर साहित्य से कनमा ज्यूड़यू रौ, कनमा यु पहाड़ी कस्बा देश-विदेश का नक्सा मा अपरू स्थान बणै कि रखू, कनमा छावनी अर स्थानीय लोगु मा मेल-जोल अर घनिष्ठता रखीकि विकास करे जौ। लैन्सडौन मा बढ़दू पर्यटन तै कै तरीका से साफ सुथुरू रखे जौ। किलै कि अचक्याल पर्यटन का वजह से जु प्रकृति अर समाज मा प्रदूषण होणु च वेकि रोकथाम कनमा करै जौं। वेकि या चिन्ता क्वी व्यक्तिगत नी छै बल्कि आम जनता की वे तै हमेशा चिन्ता रै। इनु समर्पण छौ वेकू अपरा काम अर समाज का प्रति।

अश्वनी कोटनाला

इनी न झणि कथगै चिन्ता रैन वेतै अपरा इलाकै कि, वे कस्बै की सताणी। वे मनखिन लगातार सैरा समाज की चिन्ता करि कि कनमा यू समाज स्वस्थ रौ, पर रे मनखि तिन अपरा शरीर कु कबि ख्याल नि रखी। समाज का भितर क्या होणू, कनुकै बदलाव आलू यां कि चिन्ता वे तै हर घड़ी, हर पल रै, पर अपरा ञारीर का भितर क्य द्वन्द चलणूच, क्य विकार पैदा होणू च वे पर वेकू ध्यान कबि नि गै।

यु मनखि खालि चर्चा-परिचर्चा की गप्पु मा नि रै वु इनु कर्मठ साहित्य प्रेमी छौ, वेन झणि कथगै किताबू अर संग्रह कु सम्पादन करि जनकि लैन्सीडौन समाज संस्कृति और इतिहास, लैन्सीडौन की रामलीला एक शताब्दी की बिरासत, धरोहर, लैन्सीडौन-प्रकृति की सौगात, स्मृति के शिलालेख, वे की कथगि किताब अर संग्रह छनं। लैन्सीडौन का सम्बन्ध मा लिख्यूं अर छप्यूं ढेरों साहित्य का हर पेजुमा वेकु समर्पणकि छाप साफ दिखेद्।

वु लैन्सीडौन रामलीला समिति, व्यापार मण्डल, पुस्तकालय समिति, छावनी परिषद् कु सदस्य व पदाधिकारी भि रै। जब पहला साल राजकीय डिग्री कॉलेज जयहरीखाल छात्र संघ का चुनौ ह्वेन त वु पैलु अध्यक्ष चुनेगी छौ। अश्वनीन पत्रकारिता मा उच्च शिक्षा लीनि छै। वेका बाद वु दैनिक जागरण अर हिन्दुस्तान जन अख्बारू मा कै साल काम करदि रै। कै सालु तक वु रामलीला शरदोत्सव ग्रीष्मोत्सव, लोसा अर स्कूली कार्यक्रमों मा चुपचाप निस्वार्थ अपरि अमूल्य सेवा देणू रै। वेकु सभौ इन छौ कि कबि आम ज़िदगी मा कै दगड़ी कै बात पर विचार नि मीलि होन त तब भी वेन अपरा व्यवहार मा क्वी बदलाव नि औण दिन। वु हमेशा सौम्य और नम्र ही रै। जब कबि लैन्सीडौन का भला का वास्ता चुनिन्दा अर समर्पित लोगु तैं याद करे जौलू त उ भग्यान अश्वनी उं मां एक खास मनखि होलू जु सबसे ज्वान अर समर्पित समाज सेवी छौ।

एक इन मनखि जैन न झणि कथगै दु:ख सै होला, कथगै परेशानी झेली होली पर चुपचाप एक 'मौन तपस्वी' जन रै कि अपरू शरीर मिटै दिन पर जन कि बोल्दन आत्मा नि मोरदि वत अपरू रूप परिवर्तित कर देंन्दी। ठीक उनि जन एक खास ताप मा 'पाणी' अपणु रूप बदल्द। उन्नी भलु मनखि भुला अश्वनी ये मृत्यु-लोक बटिन अपरू शरीर बदलगी पर वेकू नौ, वे की प्रेरणा हमेशा हमारा बीच अपणी अमिट याद बणैकि रखली और औण वली पीड़ी तै सूरजै चार रस्तू बतौन्दी राली। ❑❑

साहित्य, संस्कृति, समाज, लैंसडौन अर अश्विनी

डॉ० सतीश कालेश्वरी

जन्म : 5 मार्च, 1956
कृतियां : प्रतिष्ठित पत्रिकों मा लेख अर कविता प्रकाशित
शोध : गढ़वाली लोक गीतों में पर्यावरणीय शिक्षा
सम्प्रति : उपमहाप्रबन्धक आई.एफ.सी.आई., नई दिल्ली.

कुछ मैनौं पैलि लैन्सडौन का जीवन काल मा यनु बि बग्त ऐ कि जुलाई मैना को आखिर हफ्ता अर अगस्त को पैलू हफ्ता लैन्सडौन मा लग्ण वलि कुएड़ी मा पांणि बूंद नि छै, बथौंमा ठंडक नि छै अर घाम बि स्वीलघु सि छौ। यो जानकारी मिथै लैंसडौन बटि पुराणा दग्ड़योंल् द्ये। क्य ह्वे होलु ? पैल त इन कबि नि दिख्ये, न मेसूस ह्वे। क्य यो, कुछ अप्रत्याशित, असामयिक, अटपटु व अप्रिय हूणाक् त संकेत नि छौ? कुछ त् छैं छौ, बदलळ्यूं-बदलळ्यूं सि।

आठ अगस्त, 2016 की सुबेर-सुबेर लैन्सडौन का डॉ० एस०पी० नैथाणी जी कू फोन ऐ कि सतीश बुरी खबर चा, भुला अश्वनी कोटनालघ हमथैं छोड़िकी जाणु च। वे थैं ब्लड कैंसर च अर या बेइलाज बिमारी चौथी स्टेज मा पौंचि ग्ये। देहरादून इलाज करवैकि वेथैं दिल्ली गंगाराम मा भर्ती कैरि छौ अर अब आल इन्डिया मेडिकल इन्सटिट्यूट (एम्स) ल्ही जाणा छौं, तू तुरन्त वखि पौंच।

पैल क्षण मा त् सैरी खबर अविश्वसनीय, असत्य व भ्रामक सि लगि, पर फिर रिवाइंड कैरीकि विश्लेषण करी अर यु पै कि खबर कू सोर्स एक जिम्मेदार सीनियर डाक्टर च, त् ज्यु धक्क सी रै ग्ये। यो मनहूस खबर, अपड़ा परिवार अर दगड़ियों थैं द्येकि जल्दी से पौंचि ग्यो एम्स। वख पौंचणा से पैलि सैरा रस्ता भर स्वचणु रौं कि अश्वनी भुला कू कनुक्वे सामना करुलु, कनुक्वे वे दगड़ि बात करुलु अर कनुक्वे वेकू हौसला बढौंलु।

एम्स मा, अश्वनी ला मिथैं द्यखदै हि अपड़ा स्वाभाविक सुभौ मा बोलि, भाईसाब प्रणाम। वेकि आंख्युंमा व्ई चमक, मुखड़िमा चित-परिचित मुस्कान व व्यवहारमा व्ई आदर भाव छौ। हाल चाल पूछिकि मीं वेका परिवार का सदस्यों दगड़ि बात कन बैठ ग्यों। एम्स मा पांच छै दिन धक्का खाणक बाद, परिवार वलघ अर दगड़ियौं ला, वेथैं मैक्स हास्पिटल, साकेत ल्ही जाणा कू फैसला करी।

मैक्स मा डाक्टर मा वेकू नम्बर आणम् टैम छौ। हम द्वी दगड़ि ही बैठि ग्यों, तबरि वैल मीमा सकुचांद-सकुचांद पूछी, भाईसाब ये प्रोब्लम

क्योरेबल तो है ना? मिन निखालिस झूट बोलि, क्योरेबल च भुला। पर सब कुछ त्येरि हिम्मत पर डिपेंड कर्द। तू हिम्मत कतै ना छोड़ी रे।

वैन बोलि, भाईसाब चिंता नही करो, मैं बहुत मजबूत हूं।

येका बाद ह्वे एक दर्दभ्वरयूं इलाज का दगड़ि, चार मैनौंकू, दिल्ली बटि देहरादून अर देहरादून बटि दिल्ली आण-जाण कू पीड़ादायक, कष्टप्रद व थका दीण वलु अविराम सिलसिला।

फिर ऐ पांच नवम्बर, 2016 की मनहूस तारीख। मीं लैन्सडौन बटि दिल्ली आणू छाय् अर कोटद्वार ही पौंचि छौ तभरि फिर डॉ० एस०पी० नैथाणी जी कू फोन ऐगि, कख पौंचि ग्ये रे भुला तू? मिन बोलि भाई साब, कोटद्वार। डॉ० साबन् रुंध्या गलघन् बोलि, वापस ऐ जा, अश्वनी हमथैं छोड़िकि चलि ग्ये। वेथैं लैन्सडौन ल्हिणा छन। वेकू दाह संस्कार फतेपुर, (दुगड्डा अर लैन्सडौन का बीच एक घाट) मा होण।

राजनीतिक दृष्टिकोण ला कै बि राजनीतिक दलन् लैंसडौन नगर थैं बिन्डी अहमियत नी द्ये। नगर अर गौं वळैंकि समस्याओं थैं उजागर कनौ वस्ता वेला पत्रकारिता कू रस्ता पकड़ि। गढ़वाल राइफल्स कू सेन्टर हूणा का अलाबा यो पूरो क्षेत्र बिकास का हिसाबन् भौत पिछड़युं चय न क्वी उद्योग, न क्वी व्यवसायिक संस्थान, न रुजगार की ब्यबस्था व जल आपूर्ति का प्रति सरकारू को नकारात्मक रवैय्या। यो हालात वेथै बड़ु परेसान करदा छया। राजनीतिक दल त् आणा जाणा रंदी, ऊं परैं अश्वनी कू बिन्डी भरोसु नि छौ, यांक्वी वेला कै बि राजनीतिक दल कू हात नि थामि। अपड़ु ब्यबसाय दगड़ि, ऊंला कलम से अपड़ि बात मन्वाणा कू बेबाक रस्ता चुनी। वो काफी बरसूं तलक दैनिक अमर उजाला समाचार पत्र दगड़ि जुड़युं राई अर बाद मा हिन्दुस्तान समाचार पत्र खुणि संवाददाता का रूप मा काम सुरू कैर द्ये। नगर अर आस-पास का क्षेत्रों की जन समस्याओं थैं सुलझाणा खुणि अपड़ि सशक्त लेखनी ला, बिंदास ढ़ग अपनैकि, जन सरोकारों का मुद्दो थैं उठै और जनता का समणि रखी।

कालघ्न् अपड़ि चाल चलि द्ये छै। अश्वनी 46 बरस की अल्पायु मा ही परलोकबासी ह्वे ग्ये। लोग ईं दुन्यामां औंदन अर क्वी कम त् क्वी बिन्डी उमर मा अपड़ि पारी ख्येलिकि वापस ह्वे जंदन। यई बिधाता कू शाश्वत अर अपरिवर्तनीय बिधान व दस्तूर च। अब सवाल उठ्द कि ये लेखै जरूवत किलै पड़ी? कु छौ अश्वनी कोटनालघ? क्य योगदान छाय् वेकू साहित्य, संस्कृति अर समाज खुणि?

चला यूं सवालूं पर ऐकि, मीं यूंको उत्तर दींणक् प्रयास करुलु।

अश्वनी कोटनाळा (बिल्लु) को जन्म 22 मई, 1970 मा श्री हरिबल्लभ अर श्रीमति भगवती कोटनाळा जी का परिवार मा ह्वै। चार बैणि साधना कुकरेती, अराधना चंदोलघ, वन्दना भारद्वाज व निशा अग्रवाल का यखुलि भै छौ अश्वनी। वेकू गौंको नौ चमेठा (लैन्सडौन का नजीक), पट्टी कौड़िया, जिला पौड़ी गढ़वाल। अश्वनी अपड़ा पिछनै अपड़ा परिवार मा छोड़िगे धर्मपत्नी ज्योतिष्मती, जो एक गृहिणी छन, अर द्वी स्कुल्या बालक वत्सल अर अक्षत।

लैन्सडौन केन्द्रीय विद्यालय बटि प्रारम्भिक शिक्षा पूरी कैकि वे ला जैहरीखाल डिग्री कालेज बटि बी०एस०सी० (पत्रकारिता) करी। अश्वनी थैं जैहरीखाल डिग्री कॉलेज छात्र संघ कू प्रथम अध्यक्ष (1990-91) बणणा को अवसर मिली। छात्र जीवन बटि ही वेला छात्र समस्याओं का दगड़ि लैंसडौन अर आस पास का क्षेत्रवासियों की समस्याओं का प्रति ध्यान दीणु सुरू कैर द्ये छौ। उत्तराखण्ड राज्य आंदोलन मा सामिल ह्वेकि वे ला छात्र एवं युवावर्ग कू सफल नेतृत्व बि करी छौ।

छात्र जीवन का बाद, हैंका रूप मा विद्यार्थियौं कि सेवा कना खूणि वेला एक स्टेशनरी की दुकान थैं अपड़ु रोजगार कु साधन बणैकि, नगर मा ही रैणाकू निर्णय करी जबकि ऊंका सब्बि दगड़या उत्तराखण्ड बटि भैर जैकि अच्छी नौकरियुं अर व्यवसायों मा लगगिं। अपड़ु परिवार दगड़ि उत्तराखण्ड बटि भैर जै कि वो पलायनवादियुं की, कब्बि ना खतम हूण वळि पंक्ति मा लगिकि उत्तराखण्ड कू

सबसे बड़ु अभिशाप थैं और मजबूत नि कन चाणु छाय। नगर अर उत्तराखण्ड दगड़ि ऊंको बेमिसाल प्रेम का वास्ता नगर का दाना-सयाणा अर ऊंकी मित्र मंडली ऊंकू बड़ु सम्मान बि करदी छै।

अश्वनी ला अन्तिम सांस जौलीग्रांट हास्पिटल मा ल्हे पर अंत समै मा वेकी लैंसडौन जाणा कि इच्छा पूरी नि ह्वे साक, येकू मलाल वेथैं त रैगे ही, हम थैं बि सदनि राल। वेकू दाह संस्कार का बगत फतेपुर की सड़क मा कारौं की संख्या अर उमड़्युं जन सैलाब देखिकी यन नि लगदु छौ कि अश्वनी एक छव्टु सि कद काठिकू, छव्टु सि पत्रकार, छव्टु सि पुस्तक बिक्रेता व छव्टु सि सामाजिक सरोकारों कू, छव्टु सि उत्तराखण्डी मन्खि चा। वेका अंतिम दरसनूं खुणि मुम्बई, दिल्ली, देहरादून, रामनगर, मुरादाबाद आदि जगौं बटि वेका प्रेमीजन फतेपुर घाट मा पौंच्या छा। गढ़वाल सेक्टर का ब्रिगेडियर तरपां बटि सेना की एक टुकड़ि ला ऊंका निर्जीव सरीर पर श्रद्धा सुमन चढैनी।

जनता से सीधू सवांद ह्वे सन् 2002 मा जब एक बगत इन ऐ ग्ये छौ कि रामलीला मंचन कू अस्तित्व मा प्रश्न लगण वळु च तब अश्वनी ला ही कुछ युवा दग्ड़यों थैं कठ्ठा कना का दगड़ि ही वरिष्ठौं कु सहयोग बि ल्ये अर एक नै सुरुवात करी, व दुबारा यो आयोजन थैं ऊर्जा व उत्साह का दगड़ि सफल रूप से चलणा मा कामयाबी प्राप्त करी जु कि आज जैला ऐंसु निर्विघ्न रूप मा अपड़ि निरन्तरता का 112 बरस पूरा करानी। वेला 2002 मा रामलीला आयोजन समिति का सचिव बणिकी रामलीला कू मंच संभालि। अपड़ा संबोधनों थैं, अपड़ा सटीक शब्द विन्यासूंला समलघेण्या व प्रभाबसाली बणैकि, जब दर्शकूं का मध्य छोड़ि त् एक क्षण मा ही अपड़ु लोहा मनवै द्ये। यो बात गौरतलब छै कि जै बि ब्यक्ति का बाराम् यो शब्द बोल्यै जांद छाय् तालघी त वेखूण बजदि छै, पर जै खुण यूं करतलघ बजदि छै वू जण्दू छौ कि यूं करतलघ ध्वनियुंकू अंसलि हकदार अश्वनी कोटनालघ च। येकि तसदीक उत्तराखण्ड राज्य आंदोलनकारी समिति का अध्यक्ष श्री धीरेन्द प्रताप जी ली भि करी जब 2016 रामलीला मंचन का उद्घाटन का टैम अश्वनी की तब्यत का बारा मा सूणि त सब्युं का भांति ऊंथैं बि बड़ु दुख पौंचि। तब ऊंला बोलि कि अश्वनी की क्षतिपूर्ति भौत ही मुश्किलूं ला ह्वेलिय यन बिलक्षण प्रतिभा का मन्खि कबि-कबि ही ईं धरति मां औंदन। अश्वनी लगभग 14 बरसूं तलक रामलीला कमेटी कु सचिव बणिकि रामजी की निस्वार्थ सेवा कनु राई। ये बरस बि, ऊन त वो अपड़ि बिमारी का भयानक दौर बटि गुजरणु छाय् पर रामलीला आयोजन समिति ला हर बैनर, पोस्टर अर निमंत्रण पत्र पर ऊंको नौं, बड़ा सम्मान दगड़ि सचिव का रूप मा, सुशोभित करयुं छा। प्रतिदिन मंच बटि ऊंका नौं कि उद्घोषणा हूणी राई। ये और कुछ ना वेका निस्वार्थ कर्मों कू प्रतिफल छौ। ये का अलाबा नगर कू क्वी बि सामाजिक व सांस्कृतिक कार्यक्रम वेका संचालन का बिगैर हूंद ही नि छौ।

अश्वनी कई बरस लैन्सडौन पुस्तकालय समिति का सचिव बि राई। वेला नगर मा डॉ० पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल लायब्रेरी खुणि एक भौत बड़ु सुपिन्या देखि छौ अर बरसूं तलक वेखुण काम बि करी। लायब्रेरी खुण लैंसडौन जन स्थान मा जगा कू बड़ू अभाव च। पैलि त छावनी परिषद लैंसडौन ल् जरा ठीक सी जगा मुहैया करवा द्ये छै पर बादम् छावनी परिषद ला वु जगा कम कैरी द्ये, ज्यान लायब्रेरी कू आकार छव्टु ह्वेगे। लायब्रेरी कू छव्टु हूण से वे थै भौत बुरू लगि अर बेहद पीड़ा बि ह्वे छै।

अश्वनी थै गढ़वाल मा शिक्षा का क्षेत्र मा प्रतिष्ठित चन्द्रबल्लभ मेमोरियल ट्रस्ट का पांच बरस तक सेक्रेटरी रैणा कू बि सम्मान मिली।

राजनीतिक दृष्टिकोण ला कै बि राजनीतिक दलन् लैंसडौन नगर थैं बिन्डी अहमियत नी द्ये। नगर अर गौं वळैंकि समस्याओं थैं उजागर कनौ वस्ता वेला पत्रकारिता कू रस्ता पकड़ि। गढ़वाल राइफल्स कू सेन्टर हूणा का अलाबा यो पूरो क्षेत्र बिकास का हिसाबन् भौत पिछड़्युं चय न क्वी उद्योग, न क्वी व्यवसायिक संस्थान, न रुजगार की ब्यबस्था व जल आपूर्ति का प्रति सरकारू को नकारात्मक रवैय्या। यो हालात वेथै बड़ु परेसान करदा छया। राजनीतिक दल त् आणा जाणा रंदी, ऊं परैं अश्वनी कू बिन्डी भरोसु नि छौ, यांक्वी वेला कै बि राजनीतिक दल कू हात नि थामि। अपड़ु ब्यबसाय दगड़ि, ऊंला कलम से अपड़ि बात मन्वाणा कू बेबाक रस्ता चुनी। वो काफी बरसूं तलक दैनिक अमर उजाला समाचार पत्र दगड़ि जुड़्युं राई अर बाद मा हिन्दुस्तान समाचार पत्र खुणि संवाददाता का रूप मा काम सुरू कैर

द्ये। नगर अर आस-पास का क्षेत्रों की जन समस्याओं थैं सुलझाणा खुणि अपड़ि सशक्त लेखनी ला, बिंदास ढ़ग अपनैकि, जन सरोकारों का मुद्दो थैं उठै और जनता का समणि रखी।

एक ब्योपारी हूणाक् नाता वेला ब्यापार मण्डल का प्रति बि अपड़ि जिम्मेदरी पूरी तरां निभै अर कई बरस ब्यापार मण्डल कू सचिव का पद पर रैकी अपड़ा ब्योपारी भै लोगुं की सेबा कनै पूरी कोसिस करी। अपड़ा सज्जन सुभौ का कारण वो हर काम मा ताल-मेल बिठाणाक् प्रयास करदु छौ यांका वजै से कुछ लोग वेकू बिरोथ बि करदा छा। पर वेल बाद-बिवाद थैं हमेसा टालि अर अपड़ु बेस्ट दीणाक् कोसिस करी।

एक साहित्यकार का रूप मा वेला अपड़ा यादगार लेखन का दगड़ि जौं पुस्तकूं को सम्पादन करी ऊंमा प्रमुख छनरू—

1. लैन्सडौन समाज संस्कृति और इतिहास-फरवरी 2004
2. लैन्सडौन की रामलीला एक शताब्दी की विरासत-अक्टूबर 2004
3. धरोहर-अक्टूबर 2008
4. लैन्सडौन - प्रकृति की सौगात /2011 (डॉ० एस०पी० नैथानी व देवेन्द्र नैथानी का दगड़ि)
5. स्मृति के शिलालेख-अक्टूबर 2015

लैंसडौन थैं एक साफ सुथरू अर पर्यटक नगरी का रूप मा और बि अधिक बिकसित कना खुण अश्वनी ला छावनी परिषद कू चुनौ लड़ी अर चुनौ जीतिकी 2008 बटि 2014 तलक नगर की भरपूर सेवा करी। ये का दगड़ि ही वो दस बरसूं तलक छावनी परिषद कर्मचारी संघ को सदस्य बि राई।

एक धरति दगड़ि प्रेम कन वळु उत्तराखण्डी, ईमानदारी व्योपारी, छात्र समस्याओं का प्रति जागरूक रैण वळु सिपै, समर्पित साहित्य अर संस्कृति प्रेमी, हथ्थ जोड़िकि नगर मा आण वळा अतिथियुंकु आदर पूर्वक सम्मान कन वळु अर निस्वार्थ भाव ला सब्बि भै बैण्युंकि छ्वटि-बड़ी सस्याओं थैं सुलझाण अर उचित सलाह-मशविरा दीण वळु अश्वनी आज हम्अरा बीच नी छ। ऊंकी बिमारी का दौरान लैंसडौन व नजीक का गौं-गौंका प्रेमी जन, चाहे दिल्ली हो या देहरादून, रोज गाड़ियुं मा भोर भोरिकि वेकू स्वास्थय कू हाल चाल पुछणा कू जाणा रै। अर सचि ब्वल्ये जाउ त मिन बि अपड़ा पूरा जीवन मा एक आम पत्रकार अर सामाजिक जन खुण इदगा बेमिसाल प्रेम नि द्येखि। पूरा क्षेत्र मा चार मैनों तलक ऊंका स्वास्थय कु एक-एक मिनट कु हाल कु बुलेटिन सी जारी हूणू रै। हजारौ हात कालेश्वर व ताड़केश्वर महादेब, सिद्धबलि बाबा अर भैरौंगढ़ी द्यवता मा, सब कुछ जण्णा का बाद बि, वेकी सलामति की गुहार लगाणा छाय। क्वी बुनु छौ कि मुम्बई ल्ही जावा, त क्वी जयपुर, क्वी धर्मशाला (हिमांचल प्रदेश) त् क्वी गुड़गांव, अर वो बि भलि भांति जण्णाक् बाद कि अश्वनी की बिमारी जैं जगा पौंचि ग्ये वख बटि स्वस्थ ह्वेकि वापस आण नामुमकिन च। तब बि न डाक्टरूंला हर मानि न परिवारला, ना वेका दगड़्योंला हार मानि न वेका प्रशंसकों ला। न नगरबासियोंला हार मानि न ऊंका समर्थकौंला। यन अद्वितीय व अजीम सख्शियत कू मालिक छौ अश्वनी। अश्वनी कि ये लोक बटि जाणाकि हानि क्वी बि बर्दाश्त कनौ तैयार नि छौ। पर बिधाता की लिखिं कैन मिटै साकि।

आज अश्वनी हम्अरा बीच नी च पर वेका एक आम आदिम का सा गुण, हम थैं यो सीख दीणा छन कि सच्चु, सीधु व कर्तब्यपरायण ब्यक्ति, कै बि बिचारक, राजनेता, कलाकार, साहित्यकार व समाजसेवक से कम नि होंद। अपड़ि यूं विशेषताओं का कारण अश्वनी सदनि अपड़ा समाज मा अबिस्मरणीय यादूं की तरां अमर रालू।

अश्वनी ला अन्तिम सांस जौलीग्रांट हास्पिटल मा ल्है पर अंत समै मा वेकी लैंसडौन जाणा कि इच्छा पूरी नि ह्वे साक, येकू मलाल वेथैं त रैगे ही, हम थैं बि सदनि राल। वेकू दाह संस्कार का बगत फतेपुर की सड़क मा कारौं की संख्या अर उमड़्युं जन सैलाब देखिकी यन नि लगदु छौ कि अश्वनी एक छ्वटु सि कद काठिकू, छ्वटु सि पत्रकार, छ्वटु सि पुस्तक बिक्रेता व छ्वटु सि सामाजिक सरोकारों कू, छ्वटु सि उत्तराखण्डी मन्खि चा। वेका अंतिम दरसनूं खुणि मुम्बई, दिल्ली, देहरादून, रामनगर, मुरादाबाद आदि जगौं बटि वेका प्रेमीजन फतेपुर घाट मा पौंच्या छा। गढ़वाल स्ेटर का ब्रिगेडियर तरपां बटि सेना की एक टुकड़ि ला ऊंका निर्जीव सरीर पर श्रद्धा सुमन चढैनी।

लैंसडौन बटि जब ऊंकी निर्जीव देह की अंतिम यात्रा फतेपुर खुणि पैटि त् जब तक सूरज चांद रहेगा, अश्वनी तेरा नाम रहेगा का नारा सूणिकी कालौं की एक-एक डांडी रूण बैठि, किलैकि वूं डांडौन अपड़ु सबसे योग्य पुत्र जु ख्वै द्ये छौ।

❑❑

स्वाग-भाग

• दुर्गा प्रसाद घिल्डियाल

जै दिन यि रामा अर श्यामा जौळ्या पैदा ह्वे छै त को ब्वळ्दो छौ कि सि बचली बि। पर चुचौं भाग तड़तड़ो छयो त सि नि खांदा नि पींदा घर कि बेटी सर्या गौं मा गैणि सि चमकणि रौंदी छै। चौदा वर्ष म्यरो ब्यो ह्वे छयो अर भोळा साल सि द्वीई ह्वे छै। म्यरि सासु न तौंका घर बटि ऐकी ब्वलि छयो 'हे राम तै भगतु का यख ब्यटुळी को दलेद्र बढ़ी गये। कना मा करलो स्यु तौंकी भरण पोषण। मिन सि चार बीसी पूरा करि यालिन अर स्यु छौं प्वड्यूं यक्खि नरक मा। सि द्वी ई दुन्या मा सुन्दर खै पेकी हैंसदो ख्यळ्दो अपणा लड़ीकु का सामणा निभि गैने। गौं की सबसे दानी सयाणी फत्ति कि ब्वे, तै धर्मा कि ब्वे मु लगौणी छै छ्वीं।

"भाग त होंदुइ छ पर दीदी, द्यखणा मा आये कि जै जैका खौरि का दिन देख्यां रैने अर द्वी झणों की कमर कर्सी रैने वूंका दिन सुन्दर जरूर ऐने। हळ की द्वी सिंग लगै कि जो बैख यो समझणा रैने कि बाक्कि काम जनान्यूं को छ वख दिन सुन्दर कना मा ऐ सकदा छाया। अब तौं रामा श्यामा कि बात लेल्या दी। कैन बतै तौं कि ब्यटळों को पढ़नु ल्यखणु भि जरूरी छ। मैत घर मो भगतु मु चार आना भर जमीन छै। लोक्खु को बौलौ-भुर्तो करिक अर अपणा हडगा मुडगा त्वड़ीक तैन अपणि द्वी बेट्यूं अर एक नौना को सुन्दर पालन पोषण करे अर तौं थोकदारू को नाक झुकै देय। पढ़नु-लिखणु त कख छौ तौन नखरि संगत पकड़े अर घुंड-घुडौ फुकेण पर भि तौं कुर्त्याण नि आई। लोक्खु का नौना ब्वारि अब्बि सियां हि रौंदा छया कि सि द्वी रामा श्यामा घास लखड़ कि गड़ोळि लै जांदि छै। कैका साट्टी कुटणा त कैका ग्यूं पिसणा। धाणि का बग्त पर सबसे पैलि पुंगड़ा मा सी हि दिखेंदो छई। परदेश बटि रूड्यूं कि छुट्टी मा स्यु भवान सिंह मय बाल बच्चों का द्वी मैनों को तैं घर ऐ छयो। वेकि नौनि उबारे चार मा पढ़दि छै। तौं ब्यट्लों न जन वा पढ़दो लिखदो देखे त वूंका मन मा उमाळ सि ऐ होलो कि लग गै छै वो अपणा बाबा का पैथर कि वो वूं तै भि स्कूल भेजो। भगतु न तौंकि बात सूणिक मुंजि-मुजि आंख्यूं न अपणि बेट्यूं देखि छौ अर मौण लटकै दे छै।

सातौं-आठौं वर्ष त रै होली तौं द्वियों को पर जब वो द्वी कमलु मिस्त्री मु गैने अर हात ज्वड़िक वे मु ब्वलन लगिन, "बोडा, हम द्वियों को तैं द्वी

पाटी अर बोळख्या बणै द्या। वांका बदला हम द्वी तुमारी झंगोरो कूट द्योला।" त कमलु मिस्त्री कि आंखि भीजि गै छै। वे वूंको मुंड मलासि छौ अर बैठणू ब्वलि छौ। सुन्दर द्वी पाटी अर बोळख्या बणैकि कमलु न ब्वलि छौ "दिसा मि समझि ग्यूं कि भगतु ठाकुर का दिन बौड़न वळा छन।" पाटी अर कमेड़ा माटा का बोळख्या कलम लेकि जाण लग गै छै सि तैं गौं कि स्कूल मा। उबारे स्या स्कूल चार तक छै। आज त वो स्कूल दस तक ह्वेगे। गौं का लोग हैंसदो हैंसदो ब्वळदा छया, "खाणु त तौमु चूनळि नी अर स्यु भगतु पढ़ोणू च नौन्यूं। पौढ़ि लेखिइ क्य लगलि सि हात।" हमारा गौं मा भगतु का ब्यट्ळो न हि पैलि-पैलि तैं स्कूल मा जाण शुरू कै छौ। बाद मा त जख द्यखदो द्यखदो तौं द्वियों न चार पास कर यालि छयो तब लोग भ्यजण लग गै छया अपणि बेट्यूं स्कूल। वांका बाद तौन त लोक्खु कि कुटै पिसै करीक अर भगतु न चार पैसों का बाना बेटी ब्वार्यूं लौण-पठौंण को काम शुरू करे अर तौंकी पढ़ै-लिखै को खर्चा पर्चा निकाळे। मजा मा तौ द्वियों न आठ पास कर लेय।

फत्ति कि ब्वे ब्वलन लगे "ठीक छै भै भुलि ब्वन्नी मी खूब याद च वे दिनै, कि जै दिन तै पल्या गौं को शेर सिंह अपणा द्वी नौनौं का वास्ता, रामा श्यामा तैं मांगणू तै भगतु मु ऐ छौ। भगतु न सर्गै तरफ हैरिक ब्वलि छौ" रौत जी आप जाणदा हि छन कि मि भौत गरीब आदमि छौं म्यरि ब्यट्टि आठ पास त जरूर छन पर यांको तै पढ़यु लिख्यूं थ्वड़ा ब्वलदन। तुमारा नौना पढ़्यां लिख्यां छन त मि गरीब तैं कना मा अपणाला। बाक्कि द्वीइ नौन्युं को कट्ठा ब्यो कन्ना मा मा जि कन्न मिन। लूण खाण को पैसा नी, अर तब्बि त नि कर सक्यूं तौं का पीला हात अब्बि तक।" शेर सिंह न म्यरा फत्ति का बाबा अर गौं का दाना सयाणा लोक्खु का सामणा भगतु मु ब्वलि छौ "बिष्ट जी मी जनि नौन्यु कि जरूरत अपणा नौनौं का वास्ता छ वो तुम्हारा ही यख छन। हम कुछ नी चायेणू। तुम सिरप हां ब्वल देवा, बाक्कि मि अफ्वि करलु सब्बि कुछ। अपणा द्वी भैबन्द जो मि बराति मा लौंलो, वांको प्रबन्ध मि अफ्वी करलो।" धर्मा का बाबा न शेर सिंह मु ब्वलि छयो "मानिग्यां भै रौत जी तुमतैं, खाणि कि ढुंगी पछांडनै जाणदां। इनि ब्यटुली हमारी युं द्वीइ पट्टियूं मा खोजीइ भि नि मिल सकदी।" बाद मा भगतु न हां ब्वलि छौ। बामणु मु जन्म पत्री जुड़ै छै अर मौ का मैना रामा को ब्यो शेर सिंह का जेठा नौना दर्शनु दग्ड़ अर बैसाखा मैना कणसा नौना कलमु दग्ड़ श्यामा को ब्यो ह्वे।

शेर सिंह जमादारि कि पिन्सन मा घर ऐ गे छौ पर वेकी नौकरी पर कब्बि मन नि लग्यो। वे तैं घर ज्यादा पसन्द छौ ये हि वास्ता जब वेका द्विइ नौनौ न हाईस्कूल पास करि छई त वेन हात ज्वड़िक अपणा नौनौं मु ब्वलि छयो "ब्यटो मिन पन्द्रा बीस साल नौकरि करे, पर म्यरो मन वख मा कब्बि नि लग्यो। मैना का पैला हफ्ता खतम होन्दो हि बाक्कि तीन हफ्ता जिकुड़ि झर्र कन्नि रौंदि छै कि कबि बिमार-सिमार सि पोड़ि ग्या त कर्ज गाड़नै नौबत आली। समाज का हौरि लोक्खु का सामणा नौकरि कन्न वाळों की इज्जत कम होन्द। मिन तुमतैं यख तक पढ़ै याले अर अगनै भि पढ़दो ल्यखदो रवा पर भैर जै कि नौकरि कन्न को विचार न लावा। तुम्हारा वास्ता घर मु सब कुछ छ। प्रेम से रै-खै सकल्या त इज्जत कि जिन्दगी बितै सकल्या। तै दिन बटि द्वीइ भै अर ब्वे बाबा मिस्यां रौंदा छया खेती पर। अन्न से कुठार भ्वर्यां रौंदा छया। बाग बगीचा मा बान्नी-बान्नी का फल खाणू मिलदा छया। घ्यू-दूद छकै खांदा पींदा छया। वूंका मन मा हाथौ काम सिखण की बड़ी इच्छा छई पर वख फुन्ने क्वी साधन नजर नि औंदो छौ। यख तक कि मोटर चलौणो सिखणा का बाना वूंन अपणा बाबा मु कतनै दफा ब्वले पर वो नि मान्या। ब्यो का द्वी साल बाद आखिर शेर सिंह तै वूं इजाजत देण पड़े मोटर डरैबरि सिखण की। दर्शनु न ब्वलि छयो कि मोटर चलौणी ऐ जाली त कुछ पैसा का जुगाड़ होण पर मोटर खरीद करला अर वां अफ्वि चलौला। यख मा नौकरी को सवाल कख छ। द्वीइ भैयों न मन लगैकि सीखी छै मैना मा मोटर चलौण को काम अर गढ़वाल मोटर यूनियन की गाड्युं मा छै-छै मैना क्लीनरि करनाअ बाद वक्खि डरैबर ह्वे गैने। कोटद्वार से श्रीनगर तक चलौंदा छया। हौळ अर धाण-धन्धा का मौका पर बारि-बारि घर मु रौंदा छया। मात्थे मूड़ी औंदो -जांदो घर की चीज कोटद्वार बेचणू भि ली जांदा छया अर घर का वास्ता लूण-गुड़ अर हौरि चीजि सीवो कोटद्वार से औंदी छई। घर बोण चलणू छयो। घर मु द्वीई ब्वारि कमर कसिक खेती पाती अर सास-ससुरा कि सेवा मा लगीं छई। हर मैना द्वीइ दर्शनु अर कलमु अपणि कमै धमै अपणा बुबा जी मु देन्दा छया। सब्बि तरफ गौं गौळौं मा हाम उड़ी छै कि शेर सिंह भारि भग्यान छ जै तैं नौना-ब्वारि भगवान न देने अर पढ़्यां लिख्यां नौना ब्वारि खेती पर जुट्यां छन।

हमेशा का वास्ता को रै सकि ईं दुन्या मा। सात आठ साल बाद शेर सिंह अपणि जीवन यात्रा खतम करीइ परलोकवासी ह्वे ग्ये। तबारे तक दर्शनु का द्वी नौना ह्वे गे

छया। एक छै वर्ष को अर हैंको चार वर्ष को। कलमु का बाना ब्वे की बड़ी चिन्ता मा रौंदी छई कि सात-आठ साल बटि वेका यख संतान दर्शन नि ह्वे सक्या। एक आध नौन्याळ वेको भि ह्वे जांदो त वा खुश ह्वेकि आंखा बूज लेंदि। कलमु ब्वे तैं समझौंदो छयो कि दर्शनु भै का द्वी रिंकु-टिंकु छै छन। एक वेका अर एक भै का हिस्सा मा समझा, पर बुढ़ड़ी का गौळा उन्दो जान्दि नि छै वेकि स्या बात। मन की मन मा धारीक वा भि एक दिन कूच करि ग्ये। साल भर का भितर-भितर द्वी बूड-बुड्या कूच कर गैने। धूम-धाम से द्वीइ भैयों न समय पर यूंका वनिस्वत सप्ताह करे। घर बोण उन्नी चलणू रये पर दुन्यां मा देख्या ग्ये कि गौं हो या कुटुम परिवार वख क्वी-क्वी इन मनखि होंदन कि जब तक वो बच्यां रौंदन तब तक वूं गौं अर परिवारू मा कैका खुट्टी कांडु तक नि बैठदो। दिन ब दिन उन्नति होणी रौन्द अर जन्नि वो गया त वख श्री हि लोप ह्वे जांद। जबारे तक शेर सिंह अर वेकी बुढ़ड़ी बच्यां रैने क्या श्री फर्बी छै तै परिवार मा अर जन्नि वो गैने त फैलण लगे दुर्मति।

सप्ताह होयां अब्बि छै मैना भि नि ह्वे छया कि एक दिन दर्शनु न कलमु मु ब्वले "भुला बाबा जी कि धरीं ढकी स्या सप्ताह कन्ना मा खतम ह्वेगे। उल्टां सि द्वी दूण साट्टी अर एक दूण ग्यूं तै पल्या खोळा भोपालु दादा की पैंच मुंड मा ह्वेगे। पैलि कलमु जो कुछ कमै कि लौंदो छयो अपणा बाबा मु देंदु छयो अर वूंका जाणअ बाद दर्शनु भै मु देंदु छयो। गौं का लोग तनि भै-भयात नि देख सक्या अर लग गैने घर-फोड़ कि तयारि मा। एक दिन भोपालु दादा न कणसा भै कलमु की कमजोर नाड़ि पर ध्यान धारिक ब्वले,''ब्यटा अब जरा सम्हळि चलि। त्यरि ब्वे त्यरि तरफै चिन्ता मन मा लेकि चल बसे। त्यरो भि एक आध नौनो बाळो ह्वे जांदो त ठीक छयो। बुढापा मा पैसा या लड़ीक हि काम औंद।" इथै श्यामा कि दगड्या बोण जान्दो ब्वलन लगीन, "यार दीदी, त्यरा जीजा भारि लोभी दिखेणा छन। द्वीइ भैयों कि तनख्वाह सफाचट कन्ना छन अर तुम द्वी झणा इना गैरहोस प्वड्यां छयां कि अगैन कि नि छयां स्वचणा।" श्यामा न गुस्सा मा ऐकी तौं का बांठा की धार अर ब्वले कि अगर तुमुन तन्नी बात हैंको कि कन्न त भोळ बटि वीन तुमारो दगड़ो नि करनो। वीं भारि नखरू लगि कि यूं गौं वाळों कि मति कै दैव न ख्वे जो हमारा अगनै कि चिन्ता तौं होण लगे। रातौं खान्दि दौं, सीधा मत्ता मा, तौं द्वी झणों न सि सुणी छुई अपणा भै-भौज मु बतैने अर ब्वले कि सि गौं का लोग वूं तैं होयूं-खायू नि देख सकणा छन अर वूंका घर-फोड़ कन्नै कोसिस मा लग गैने। स्यो सब्बि तौं से सम्हळि रहून। तौंकी सीधा मत्ता मा ब्वली बात को मतलब दर्शनु न हौर हि लगाय। दर्शनु ब्वन्न बैठे, "सूणा, पाणि हमेशा उंद्यारि को हि बगद। जब क्वी बात पैलि ह्वे होलि तब हि लोक्खु तैं लूण-मर्च लगैकि ब्वलन को मौका मिलि होलो। हमुम ब्वलण कि हिम्मत कैन किलै नि करि सके। तुम लोगों न क्वी इशारो देई होलो तब्बि वूंन तनो बोलि।" द्वी झणा सूणिक खोळै गैने। अपणा सयाणा लोक्खु का सामणा चुप्प रौणो ठीक समझे तौन।

हैंका मैना जनि कलमु घर आई क अपणि पगार दर्शनु मा देण बैठे त दर्शनु न बोले "भुला, अब अपणि कमै-धमै अफु मु हि रख। हम नि सूण सकदा आक्कि-बाक्कि।" कलमु का दिल पर चीरो सि लगे तैं बात से अर आज वेन समझे कि वेका ब्वे-बाबा अब सच्चिइ नि रया। मोण लटकै कि अपणा भितर ऐगे। श्यामा न अपणा जवै का डबळयां आंखा देखिने त समझि ग्ये कि जीजा न क्वी बात जरूर बोलि होलि। वा पल्या भित्तर अपणा जीजा अर दीदी मु जैकि ब्वलन लगे, "दीदी इनि क्य बात ह्वे जो तुम्हारा द्यूर हैंका भितर आंसू ढोळणा छन।" बिन्डी दिनु मा ऐने वो नौकरी परै घौर अर स्या लटकाई च वूंकी मोण। मिन वेकि तनख्वाह नि चीमे त क्या भारि बात करे। तुम लोक्खु तैं भि त दीन-दुन्यां को पता लगण चैंद"। श्यामा न ब्वले, "जीजाजी कनि बात कन्ना छयां तुम। या म्यरा-त्यरा कि बात समझा मा नि आई। हम द्वियों न कब्बि नि सोच्यो कि यख कैकि कमै-धमै छ। हमतैं भगवान न संतान नि देई त क्य होय। हम तौं रिंकु-टिंकु तैं ही अपणि संतान समझदां। यांसे पैलि कतना हि वक्त हमुन तैं रिंकु तैं हम तैं देण की बात ब्वले पर तुम लोखुन क्वी जवाब नि देयो। हमन समझे कि जब हम सब्बि कट्ठा छवां अर रिंकु-टिंकु अपणा छन त हमन अपणि कोख खालि नि समझि। इनि बात कब्बि अपणा मन मा नि लौणी। ससरा जी न अर म्यरा बाबा न ये वास्ता हि द्वी आखर हमतैं पढ़ै छा कि हम हौरि लोक्खु कि तरौं काम न करां। पल्या भितर जैकि अपणा भुला को मन थंवार करा, निथर ससरा जी कि आत्मा तैं दुख पौंछण वख। वींका तन ब्वलना पर दर्शन सिंह पल्या भितर गये अर वेन अपणो भुला समझाये कि वेको तना ब्वलन को मतलब गलत न समझो। वेन बुरो किलै माने। मिन क्वी अलगाव का भाव से नि बोल्यो इनो। अरे भै, जब हम कट्ठा छवां अर जब घर मु पैसों की जरूरत प्वड़लि त हम अप्वि त मांग्दा पैसा टक्का। दुनिया मा अपणा खुट्टौं पर खड़ू होण नि सिखिली त कना मा भिड़ेलो स्यु भारत।

बात आई गई ह्वेगे पर कलमु का मन मा जु गेड़ प्वड़ि छै व नि खुल सकी। रात सेंदी दो कलम सिंह न श्यामा मु ब्वले, 'सूण श्यामा, अब जख भैजि नौकरि करदन वख मिन नि करनीं। मि त्वेमु ब्वलनु छौं या बात जु कै पता नि चलो। मि भैर परदेस नौकरी ढूंढण का वास्ता जाणू छौं अर नौकरी लगण पर पांच-सात मैना बाद त्वे बि वखि बुलै ल्योलो। पता-सता अब्बि मिन नि देणो किलैकि भैजी ना थूकाअ आंसू लगैकि वाक्ख पौंछ जाण। यु त्वेमु मि ये वास्ता ब्वलनु छौं कि कखि तु म्यरा इना जाण पर फिकर करन न बैठ जाई।" श्यामा न ब्वले, "तुमन म्यरि बात मानणि त नी छ पर परदेस बासो कब्बि ठीक नि होंदो निथर ससरा जी तुम द्वीइ भैयों पढ़ैलिखै कि भि किलै नि जाण देंदा भैर नौकनि कन्नु। अब्बि सास-ससुरा जयां द्वी साल भि नि होया। यख मुक नौकरी न घर बोण सब चलणू छ अर अगनै बि चलदो रहलु। दुसरा हमारो स्यु टिंकु अंगेठ्यु छ। भलौ स्या दीदी वे तैं मि दग्ड़ औण देलि कि ना।" कलमु न ब्वले, "म्यरो मन त अपणा भै-भौज पर अर भतिजु का वास्ता सदानि उन्नी रालो जनो अब्बि तक छयो पर जब भैजी का मन मा तनि बात औण लगि गये त अलग-थलग रोण से प्रेम बण्यूं रालो अर ये वास्ता मिन इबारे जो स्वचे वख मा तु ना न बोल। म्यरि जब वख नौकरी लग जाली त भै-भौज अर त्वे बारि-बारि घरबोण करौंदो रौलो। हैंका दिन सबेर बिंसरि मा कलमु पैट गये परदेस का वास्ता। दर्शनु का पुछण जाचण पर श्यामा न बताय कि वो रात खुल्यां अपणि नौकरि पर जाण कु ब्वलि गैने। दर्शनु भि एक दिन बाद अपणि नौकरी पर चलि गये।

जब दर्शनु तैं पता चले कि वेका भुला न गढ़वाल मोटर यूनियन की नौकरी छोड़ याले अर डरैबरि का लैसन्स लेकि कखि परदेस चलि गये त वे तैं भारि नखरू लगे। वे तैं विश्वास नि छौ होणों कि वेको भुला वीं छ्वट्टि सि बात पर इनो कदम उठालो अर वे तैं बिना पुछ्यां गाछ्यां इनो भैर चलि जालो। छै मैना क्या साल भर निकळि गये पर न त कलमु न अपणो पता सता भेजे अर न खर्च पाणी। अब त श्यामा तैं बि फिकर होण बैठे। वींको न कै काम मा ज्यू लगदो छौ अर न भूख लग्दी छै। हैका मैना दर्शनु घर आय अर वेन श्यामा की हालत देखे त समझाये, "श्यामा, तु म्यरि स्याळि भि छै अर भुला कि ब्वारि भि। त्यरा तना भूख रौण पर अर तनि फिकर करिइ भुला न नि औणौ। मि अगल्या ऐत्वार को ढूंढणू जाणू छौं वे तैं। तु फिकर न कर अर तौं रिंकु-टिंकु कि सम्हाळ कर। बग्त पर तौं स्कूल भ्यजद रहि। वेन बोल त देय श्यामा मु पर स्वचणु छौ कि जावो त कख जाव वे ढुढण को। वो पैलि अपणि नौकरी पर गये कोटद्वार, अर वख बिटि अपणि गाड़ी लेय अर ब्याखनी दौं तक सतपुळि पौंछ गये। जो सतपुळि तक कि सवारि छै वख मा वा उतरि गैने। दर्शनु न गाड़ी सतपुळि गाड़ का किनारा हौरि गाड्यों दग्ड़ खड़ि करे अर अफु मात्थे होटल मा ऐगे। एक मेज पर द्वी आदमी बैठ्यां माछा-भात खाणा छया। वेन भि माछा-भात मंगाये अर खाण बैठे। वु द्वीइ आदिम छुई लगौणा छया अर हर बि खाणा छया। वूं मदे एक न ब्वले, 'यार जाणु त छै छौं बंबई पर म्यरा एक दगड्या कि चिट्ठि से पता चले कि म्यरा सेठ को बल कलम सिंह नाम का डरैबर म्यरि जगा धार्यु छ जो यख मोटर यूनियन मा कब्बि डरैबर छयो बल। पर वेन लेखे कि सेठ न एक हौर गाड़ी खरीद करे। अगर झट्ट ऐ जैली त शायद त्वे नौकरी मिल जाली। स्यु चौदा मैनो का बाद जाणू छौ। पता नि वो मुक्क लगौंदो च कि ना। वेका दगड्या न ब्वले "सूण भै, वखौ दाणो पाणी होलो त जरूर काम बणलो निथर ऐ जै दौं यखि मोटर यूनियन मा डरैबरि मिल जाली।" कलमु कु नौं सूणिकि दर्शनु इनो खुश ह्वे जनु वे अचणचक रूप्यों भ्वरीं थैली मिल गई होव। ब्वलन लगे भैजी! माफ कर्यां मिन आप लोक्खु कि बात सूणे। मि कलम सिंह को भै छौं जैको जिक्र अब्बि आपन करे। मि बि बंबई जाणू छौं वे लेण को। वो मि से नाराज ह्वे कि जायुं छ निथर क्यनमजाद घर का नजीक स्यूं डरैबरि कन्नू छयो। सेठ मान जालो त तुमारि जगा पर वो तुम तैं रख लेलो। हम द्वियों को काम बण जालो। तुमार दग्ड़ जाण पर मितैं ठीक ठिकाणा पर पौंछण मा दिक्कत नि होव निथर उतनी लम्बी चौड़ी बंबई मा मिन भटकदु रहण छायो। दर्शनु न अपणा दगड्या डरैबर मोहन सिंह मु छुट्टी की अर्जी लेखीइ दे देये अर बंबई का वास्ता रस्ता लगगे। चौथा दिन वो बंबई पौंछ गेने पर जब वो सेठ की कोठी पर पौंछीन त वख हैंका डरैबर से पता चले कि द्वी दिन पैली कलम सिंह छुट्टी लेकि घर चलि गये। वेको क्वी भाई गढ़वाल मोटर यूनियन मा डरैबर छ बल। छुट्टी लेण का एक दिन पैली वेन अखबार मा पढ़े कि पिछली रात सतपुळि कि सुखीं गाड़ मा अचणचख मात्थि बटी इतना पाणि आये कि वांका किनारा खड़ी यूनियन की गाड़ी अर वख मा बैठ्यां सिंया डरैबर क्लीनर सब्बि बौगी गेनी। लोग द्यखदो रहि गैने पर क्वीं वूं नि बचै सक्यो। जान-माल को भौत नुकसान ह्वे बल। स्यो वे रात भर निंद नि आई अर हैका दिन छुट्टी लेकि घर चलि गये। अपणा भै की राजी खुशी जाणना का वास्ता। सेठ बल वे पर भौत

बैकुण्ठ चतुर्दशी मेला एवं विकास प्रदर्शनी 2016 में नगर पालिका परिषद, श्रीनगर गढ़वाल आपका हार्दिक अभिनन्दन करती है।

12 नवम्बर से 21 नवम्बर, 2016 तक

मेले के मुख्य आकर्षण

- 12 नवम्बर को गोला पार्क में पूर्वाह्न 11.00 बजे मुख्य अतिथि द्वारा मेले का भव्य उद्घाटन।
- 12 नवम्बर को रात्रि सात बजे श्री कमलेश्वर महादेव मन्दिर मैदान, कमलेश्वर, श्रीनगर में जागर सम्राट प्रीतम भरतवाण एवं मुनवन्दना (पारम्परिक जागर, लोकगीत एवं लोकनृत्य संध्या) द्वारा भजन संध्या कार्यक्रम।
- 13 नवम्बर को सायं चार बजे समस्त स्कूली छात्र-छात्राओं के प्रतियोगितात्मक सांस्कृतिक कार्यक्रम।
- 14 नवम्बर को रात्रि सात बजे से श्रीनगर सांस्कृतिक संध्या (जी०आई० एण्ड टी०आई मैदान में)।
- 15 नवम्बर को रात्रि सात बजे से गढ़-कुमाउंनी (उत्तराखण्डी) कवि-सम्मेलन (जी०आई० एण्ट टी०आई० मैदान में)।
- 16 नवम्बर को रात्रि सात बजे से उत्तराखण्ड सांस्कृतिक संध्या (जी०आई० एण्ट टी०आई० मैदान में)।
- 17 नवम्बर को रात्रि सात बजे से अखिल भारतीय हास्य व्यंग्य कवि सम्मेलन (जी०आई० एण्ट टी०आई० मैदान में)।
- 18 नवम्बर को रात्रि सात बजे से श्रीनगर के सितारे कार्यक्रम (जी०आई० एण्ट टी०आई० मैदान में)।
- 19 नवम्बर को सायं गढ़वाली स्टार नाईट, मुख्य आकर्षण—"किशन महिपाल, गजेन्द्र राणा, अनिल बिष्ट, श्रीमती मीना राणा एवं श्रीमती संगीता ढौंडियाल" (जी०आई० एण्ट टी०आई० मैदान में)।
- 20 नवम्बर को रात्रि सात बजे से स्टार नाईट : विशेष आकर्षण—"सचिन वाल्मिकन (उपविजेता सा रे गा मा पर, 2016 गायक), रुपाली जग्गा (फाईनलिस्ट सा रे गा मा पा, 2016), हास्य कलाकार-जिम्मी मोजेस लीवर (फिल्मी कलाकार) एवं प्रोनीता (विनर डांस इण्डिया डांस-2015) (जी०आई० एण्ट टी०आई० मैदान में)।
- 21 नवम्बर को सायं छः बजे से कीर्तन प्रतियोगिता फाईनल, स्वर्णपदक पुरस्कार वितरण, सम्मान समारोह एवं मेला समापन।

इसके अतिरिक्त प्रतिदिन स्कूली छात्र-छात्राओं की क्विज प्रतियोगिता, शिशु प्रदर्शनी, डॉग शो, घुड़सवारी, बॉलीबॉल (महिला एवं पुरुष) प्रतियोगिता, रंगोली एवं मेहन्दी प्रतियोगिता, मिस्टर/मिस श्रीनगर प्रतियोगिता महिला एवं पुरुष रस्सा कस्सी सहित अन्य कई मेले के आकर्षण।

अधिशासी अधिकारी **समस्त सदस्यगण** **बिपिन चन्द्र नैथानी**
अध्यक्ष

नगर पालिका परिषद, श्रीनगर-गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

खुश ये वास्ता छ कि पढ्यु लिख्यूं डरैबर मिल्युं छ। सुणना मा त इनो भि आय कि जांदी दौं सेठ न वे तैं एक हजार रूप्या देने अर जल्दी वापस नौकरि पर औण को ब्वल्यूं छ। तनो सूणिक द्वियों न मोण लटकै देय।

उथैं कलम सिंह घबड़ायी सि हालत मा कोटद्वार यूनियन का दफ्तर मा पौंछै। वख वे तैं ज्वी मिले, वे अफसोस जाहिर करे अर धीरज रखणू ब्वले। वख का कागजातु से पता चले कि दर्शन सिंह अपणि गाड़ी लेकि वीं लोळि रात सतपुळि हि छयो। वेकी गाड़ी का टुट्यां हिस्सा उन्दो द्वी मील पर मिलीन पर वेकी लाश भौत ख्वजण पर बि नि मिली। कलमसिंह रोंदो बिंबलौंदो घर जाण वाळी बस मा बैठि गये। स्वचणु छौ कि कै मुख न जाण घर। भै तैं खोण का वास्ता गाड़ि छौ क्या वेन भैर को मुक्क ? सतपुळि पौछण पर देखे वेन प्रकृति को कोप। सतपुळि गाड़ का वल्या-पल्या छाला लोक्खु की भीड़ जमा छई। क्वी कपाळ फ्वड्ना छया, क्वी घबड़ायां वूं लोक्खु द्यखणा छया जो पाणि मा उतर्यां ख्वजणा को काम पर जुट्यां छया। भूखो प्यासो कलमसिंह कपाळ पकड़ीइ गाड़ का छाळा बैठ्यू छयो। समझ मा नि छौ वेका औणू कि क्य करे जाव। आखिर जाणु त घर हि छयो अर द्वी दिन सतपुळि रहण पर क्वी लाभ वेन नि देख्यो त पौड़ी जाण वळि गाड़ी मा बैठि गये।

अब्बि वो गाड़ी बटि पौड़ी मु उतरि हि छयो कि वेका पिछनाई दुसरी गाड़ी न प्वां-प्वां करे। वो घबड़ायूं सि किनारा ह्वे त क्य देखद कि वेको भै दर्शनसिंह गाड़ी किनारा लगौंणू छ। वो दौड़िक वख मु गये अर भट्ट करिक अपणा भै का खुट्टौं मा प्वड़ गये। न सांस न बाच। दर्शनु न वो उठाय अर गाड़ी कि पिछनै की सीट पर प्वड़ालै। हवा पाणि करिक वे तैं होश मा लाये। द्वी भै एक दुसरा तैं भेटणा छया। तबारे हैंका डरैबर न वख मु ऐकि ब्वले "हे दर्शनु भै तुमारि भगवती हि दैणी ह्वे जो तु बचि गई। जै मोहन सिंह मु तिन छुट्टी अर्जी दे छई बंबई जांदि दौं वु बिचारो स्यु भगवानाअ घौर चलि गये। त्यार छुट्ट भुल्ला न हि बचै तु।" कलमसिंह न बोले—"अगर भै तैं कुछ ह्वे सि जांदो त जिन्दगी भर को अपजस म्यरि खोपरी प्वड्न छौ। उबारे श्यामा कि बात मान लेंदू त हम द्वीयों को फजितो किलै होन्दो। दर्शनु न ब्वले, चल भुला अब घर। देश परदेश मा सतपुळि काण्ड कि चर्चा होणी छ। कखि रामा श्यामा न भि सूण यालि होलो त पता नि वख क्य होणू होलो। स्यो द्वीइ लग गैने गौं का बाठा। सच्चीइ वूं का घर पर सर्या गौं की बेटी-ब्वारी अर बैख जमा होयां छया। क्वी रामा समझौणू छयो अर क्वी श्यामा तैं। पर तबारे दर्शनु अर कलमु अपणा चौक मा पौंछीन। वूं देखी क्वी त खुश ह्वेकि अपणा अपणा घर चलि गैनि अर क्वी मोण लटकै कि। कलम सिंह न भौज का खुट्टौं मा हात धारे। द्वीइ रिंकु-टिंकु तैं खुखल्या मा उठैकि प्यार कन्न लगिगे। रामा न हैंसदो-हैंसदो पूछे कलमु तैं, द्यूर जी परदेश बासो कनो रये अर वख बटि क्य-क्या लायां तुम हम सब्यूं का वास्ता।

कलमु कुछ ब्वलदो कि वांसे पैलि दर्शनु न ब्वले "कनु कलमु न हौर क्य लौण छयो ? वो त्यरो स्वाग-भाग अर नौनौं कि छत्र छाया बौड़ै कि लैगे भगवाना घौर बटि।"

❑❑

एक धाद या बि....

पाठक धाद मा प्राण प्रतिष्ठा करदन, बिना क्वी सरकारी गैर सरकारि मदद का चलणी छ हमारी अपणि भाषा की पत्रिका। हमारो अपणा सामणि एक रुप्या को गढ़वाळि अखबार दम तोड़द देख्यो छ अर य बीस रुप्या कि पत्रिका तुमारा हाथु तक पौंछणी छ। तुमारि देयी शक्ति न, तुमारा सहयोग से तुमारी पढ़णैं म्यळाग से।

जौं पढ़दरौं कि एक सालै सदस्यता पूरि ह्वेगे वो अब नै सालै म्यळाग बि भेज्यां अर सौ सलाअ बि।

म्यळाग एक सालको 220/-रुप्या म्यळाग धाद का खाता मा भेजणा का वास्ता। **भारतीय स्टेट बैंक, पौड़ी शाखा**

धाद—खाता सं० : 35134541198, IFSC : SBIN 00697.

पौड़ी को गढ़ महोत्सव

• वीरेन्द्र पंवार

उत्तराखण्ड कौथिगों कि धर्ति छ अर उत्तराखण्डी कौथिगेर। उत्तराखण्ड का पहाड़ मा बनी-बनी का कौथीग उर्याये जान्दन। पहाड़ा मनखि यूँ कौथिगों थैं पूरा जोश-खरोश अर मन से मनौन्दा, जन घौर मूँ बार तिवार मनौन्दा।पैलि अर अबा कौथिगों मा फरक ऐगे। पैलि कौथिग वूँकथैं बोले जान्द छौ, जख बागि बखरा मर्ये जान्दा छा, पर जनि-जनि पहाड़ौ मनखि सभ्य होण बैठि, तनि-तनि कौथिगों का रंग-ढंग बी बदलेण बैठनि। इ नया बन्या कौथिग कुछ बर्सु बटी शैरू मा या शैर होन्दि चट्यूँ मा मनाए जान्दन। यूँ नया बन्या कौथिगों थैं बोले जान्द उत्सव या महोत्सव। शरदोत्सव अर ग्रीष्मोत्सव भि यूँ कौथिगों कि बिरादरि मा औन्दन। पैलि बन्या कौथिगों की धर्ति गौं छै। जनि जनि गौं शैरु कि तर्पा सरकण बैठनि, तनि-तनि इ कौथिग भी। अब पहाड़ा मनख्यूँ थैं यूँ कौथिगों को इतगा ढब ह्वेगि कि अगर कै बर्स इ कौथिग नि उर्याये जाला त इन लगदो कि झणि क्या ह्वे जालु। वे शैर वे गौं मा इन मैसूस होन्दु कि जन बोल्यों ये गौं या ये शैर मा अवाजो त नि ह्वयूँ हो ?

पौड़ि मा भि ये बर्स कुछ इनि सि मैसूस ह्वे, पर ईं कमि थैं पौड़ी मा गढ़ महोत्सव का रूप मा उर्यैकि पूरी करेगे। पौड़ी मा हर साल उर्याये जाण का शरदोत्सव से ऐंसु पौड़ि कि नगरपालिकन् जम्मू का मीर का उड़ी सेक्टर मा 18 अक्टूबर का आतंकवादी हमला मा शहीद ह्वयाँ ज्वानु का दुख मा शरदोत्सव नि मनौणौ फैसला करि। नगरपालिका हरेक शैरै कारबारी संस्था होन्दि। तख चुण्यां लोग भेजे जान्दन, त लगि कि तै हिसाब से तौंन ठीकी सोचि होलु, करि होलु! पर नगरपालिका कि ईं घोषणा कि खबर जब स्कुल्या नौन्याळु थैं पड़ि त वूँथैं भारि धक्का लगि, उ खौळये गेनि। शैर मा ग्रीष्मोत्सव होनु चा शरदोत्सव, यूँ कार्यक्रमूँ कि सबचुले जादा जग्वाळ स्कुल्या नौन्याळ हि कर्दन। नौन्याळु कि ईं भावना कि भणक पौड़ि का कुछ ज्यूँन्दा किस्मा अर रचनात्मक सोच रखण वळा मनख्यूँ तक पौंछि, त होण बैठि सगर-बगर शुरू। शरदोत्सव जना कौथीग उर्योण क्वे सौंगु काम नी। रुप्या चैंणांन छक्वे। पर बोल्दन कि क्वी काम कन्न पर अये जाउ त मुश्किल कुछ भी नी। कुछ इनि भावना से शुरू ह्वे बात अर ह्वेगि जंकजोड़ शुरु। ईं जंकजोड़ कि शुर्वात करि त्रिभुवन उनियाल जी कि अगल्यार मा शहर कि संस्था गढ़कला सांस्कृतिक संस्थान का कारबार्यून। संस्था का अध्यक्ष त्रिभुवन उनियाल जि अर कुछ लोगु कि अगल्यार मा जब कार्यक्रम कि रूपरेखा ऐथर बढ़दा गैनि त महोत्सव का नौं पर शहर का औरि लोग भी जुड़दा गैनि। देखदै-द्यखदा एक भब्य कौथीग कि तैयारी ह्वेगे।

मार्च पास्ट की सलामी लेंदा डॉ० विजय धस्माना.

कुछ लोगु का मन मा इ सवाल भी छा कि जब शहर मा नगरपालिकन शरदोत्सव कैन्सिल कर देनि त यु कौथीग केकु उर्याये? ये सवालौ जवाब संस्था का अध्यक्ष जीन इन बोली दे कि हम शहीदों का बलिदान से प्रेरणा ल्हेकि यु कार्यक्रम शहीदों थैं ही समर्पित कन्ना छां। कौथिग मंच पर जय जवान को प्रतीक

सांस्कृतिक कार्यक्रम देंदा कलाकार.

पूरा आयोजन का दौरान विराजमान रये। याद रखण वळि बात या भी छ कि कुछ इनि पहल संस्थन सन् 1999 का कारगिल शहीदों का बलिदान का बाद सन् 2000 मा पौड़ी आडिटोरियम मा श्री नरेन्द्रसिंह नेगी जी कि गीत संध्या को एक कार्यक्रम उर्याये। वे कार्यक्रम का जरिया कुछ म्यळाग भि भारत सरकार का वास्ता भेजे गै छै।

संस्था अर शहर का कुछ चिताळा लोग मुख्यमंत्री मिलणों अर कौथीग मा न्यूतणौं देरादूण गैनि। त मुख्यमंत्री का बोन्ना बाद भी कौथीग का वास्ता सरकारी मदद ल्हेण से मना कर दे। वूँन साफ बोलि कि हम आपौ समै ल्हेणौं अयाँ छां, पैसा मंगणौं नि छां अयां।

उद्घाटन समारोह कि ब्यखुनिदां उर्यायां कार्यक्रम मा मुख्यमंत्री हरीश रावतन कारबार्यूं कि बड़ैं करि। वूँन बोलि कि पौड़ि का ये उधारण से मि इख बटी इनि सीख ल्हेकि जाणूँ छौं कि इना बड़ा कार्यक्रम बिगर सरकारि मदद का जनता कि म्यळाग से भी ह्वे सकदन। इनि पहल अर कोशिश राज्य का हौरि लोगु थैं भी कन्न चैन्दि।

ये कौथीग मा ये बर्सो गढ़कला शिरोमणि सम्मान केदार त्रासदी का बाद तैस-नैस होयां बाबा केदार का थान थैं दुबारा से सजौण धजौण अर दुबारा यात्रा कन्न लैक बणौंण का उत्तराखण्डै माटी का सपूत अर देश मा अपणि अलग पछ्याण बणौण का कर्नल अजय कोठियाल थैं दियेगि।

कर्नल कोठियाळ कि पछ्याण केदार घाटी मा कर्यां काम का अलावा वूँका अपणि तनखा से चलाए जाण का फौजी ट्रेनिंग सेन्टर से छ। कर्नल स्साबै ईं कोशिश से 1202 ज्वानु थैं फौज मा भर्ती होणो मौका मिलगि अर कतगै फौज मा भर्ति होणों तैयार छन।

मार्च पास्ट की सलामी लेणा बाद मुख्य अतिथि स्वामी राम हिमालयन विश्वविद्यालय का कुलपति अर हिमालयन इंस्टीट्यूट हॉस्पिटल ट्रस्ट का अध्यक्षीय सदस्य डॉ० विजय धस्माना जीन बोलि कि हिमालयन अस्पताल जालीग्रांट की एक शाखा पौड़ी मा स्थापित करे जैली अर य स्थापना पौड़ी का लोगों का सहयोग से होली। वून बोलि कि हिमालय इंस्टीट्यूट तैं स्थापित करण वळा परम श्रद्धेय स्वामीराम जी

मुख्यमंत्रि तैं स्मृति चिह्न भेंट करदा त्रिभुवन उनियाल अर अनिल बिष्ट.

जौलीग्रांट का अस्पताल तैं पौड़ी मा ही स्थापित करण चांदा छ तब न सै अब बि पौड़ी चांदो छ त अस्पताल पौड़ी मा स्थापित करे जालो। डॉ० विजय धस्माना की बोलीं य बात पौड़ी का वास्ता कै बि राजनीतिक घोषणा से बड़ि घोषणा छ किलैकि पौड़ी मा स्वास्थ्य सेवाओं को अभाव छ।

एक खास पहल ये कौथीग मा दिखे। वूंका भग्यान होणां 24 साल बाद गढ़वाळि का श्रेष्ठ गीतकारु मद्दे का कार्यक्रमु मा द्वी दिन स्कुल्यों का वास्ता अर द्वी दिन लोक कलाकारु का वास्ता रखेगे छा। पौड़ी का रैबासी आशीष नेगी एक हुणत्यळा कलाकार छन, वूंकि चित्रकला प्रदर्शनी लोगु मा अपणु खास असर छोड़गि। ये गढ़ महोत्सव मा ज्वा छाप अलग दूर बटी दिखे वा छै स्कुल्या नौन्याळु का प्रस्तुत कर्यां कार्यक्रम। सब्बि कार्यक्रम एक से बढ़कर एक। वू भी पूरी तैयारी का दगड़ा। वूँका कार्यक्रमूं देखी द्वी

कर्नल अजय कोठियाल तैं गढ़कला शिरोमणि सम्मान भेंट करदा नरेन्द्र सिंह नेगी.

मथुराप्रसाद डोभाल जी थैं वूँकि रचनाधर्मिता का वास्ता सम्मानित करे। ये मौका पर स्व० डोभाल जी कि नतेण साक्षी डोभाळन वूँको लिख्यूँ गीत बद्री केदार का दर्शन कैकी, गाए। अब त भौत कम लोग जणदन, पर डोभाल जी का गीत 'गाड़ो गुलाबन्द गुलाबन्द को नगीना, त्वेथैं मेरी सासू ब्वार्यूं की अगीना' थैं आज भी गुमणौंदन। डोभाल जी का लिख्याँ अर लोकगायक नरेन्द्र सिंह नेगी जी का गयां गीत 'बदरीकेदार का दर्शन कैकी जनम सुफल कैर्याला हे।' थैं को भूल सकदो।

ये पैला गढ़महोत्सव मा जो कार्यक्रम उर्याये गेनि तौंमा चित्रकला प्रदर्शनी, गढ़वाळि भाषण प्रतियोगिता, फैन्सी ड्रेस शो, बेबी शो, गढ़वाळि कवि सम्मेलन का अलावा ब्यखुनिदां बात साफ दिखेणीं छै–पैलि त या कि स्कुल्या नौन्याळ अपणा कार्यक्रमु कि तैयारी भौत लम्बा समै बटी कन्ना छा। अर दुसरि बात या कि स्कुल्यौं का प्रस्तुत कर्यां सब्बि कार्यक्रमु इनी तैयारी का दगड़ा छा जन कि प्रोफेशनल्स कर्दन। क्या वूँकि कोंरियोग्राफी, क्या वूँको ड्रेस सेन्स अर वूँका कपड़ा, क्या प्रस्तुतिकरण कि स्टाइल, हरेक चीज गजब! ये गढ़ महोत्सव से इनि आस भी जगि कि अब पौड़ी मा सांस्कृतिक कार्यक्रम बिगर कै प्रोफेशनल टीम बुलायाँ यूँ टैलेन्टेड स्कुल्या नौन्याळु का बलबूता भी उर्याये सकेन्द।

सांस्कृतिक नजर से देखे जाउ त कौथीग मा प्रस्तुत सब्बि कार्यक्रमु मा रंवाईं घाटी, जौनसार भाबर का गीत जादा गुंजणां रैनि। ईं बात से मैसूस होन्दूं कि पहाड़ कि

बच्चौं दगड़ लोगु का बीच मुख्यमंत्री.

सांस्कृतिक पछ्याण का संरक्षण का वास्ता रंवाईं घाटी को कतगा बड़ु योगदान छ। बाकि अपणि स्थानिक पछ्याण खोन्दा अर भौत तेजि से शहर होन्दा इलाकों का वास्ता या बड़ि भारी चुनौती छ कि उ अपणां विकास का दगड़ा अपड़ी थाती से कतगा गैराइ से जुड़्यां छन?

ये महोत्सव का सफल आयोजन से खुश अर महोत्सव थैं उर्योणों ऐथर औण वाळि संस्था का खास कारबारी अर अध्यक्ष त्रिभुवन उनियाल जि बतौन्दा कि ये पैला गढ़ महोत्सव मा देखदरौं थैं हौरि कौथिगों से अलग कतगै चीज कन्नै कोशिश करेगे। ये महोत्सव कि तस्वीर कुछ बदलीं-बदलीं सि नजर ऐनि। ये महोत्सव कि खास बात छै जनसहभागिता। आम जनता अर सब्बु थैं इन लगि जन कि यु वूँको अपणो महोत्सव होलु। सबसे अलग ज्वा चीज दिखे कारबार्यूं को ड्रेस कोड। बन्द गौळा सफेद कोट, काळि पैन्ट, पहाड़ी काळि टोपलि अर काळा जुत्ता। या पौडि का स्मार्ट सिटि कि तर्फ ऐथर बढणां प्रतीक का रूप मा एक कोशिश छै। हम भी स्मार्ट छौं। इनि मार्च-पास्ट भी बहुत शार्ट अर सटीक रखेगे। महोत्सव मा एक नई चीज छै महिला कलाकारु कि रंगारंग गीत संध्या। ईं संध्या कि खासियत या रै कि ईं संध्या मा मंच संचालन से लेकि कार्यक्रम का प्रस्तुतिकरण सब्बि महिलौ का जिम्मा छौ अर वूँन ईं जिम्मेदारी थैं भौत अच्छा ढंग से निभै। एक खास बात ये महोत्सव मा या दिखे कि सब्बि कार्यक्रम लोकभाषा अर लोकसंस्कृति का वार-ध्वार रैनि। एक हौर खास बात या छै कि यु महोत्सव पूरी तरौं से जन-म्यळाग पर उर्यायेगे। ये महोत्सव मा मुख्यमंत्री हरीश रावत का बोन्ना बाद भी क्वी सरकारी मदद नि ल्हियेगि। ये कौथीग कि खास बात या भी रै कि ऐंसु ये कौथीग मा बच्चों थैं खास करीक स्कुल्या नौन्याळु थैं मंच जादा से जादा देणै कोशिश करेगे। ये महोत्सव मा खेल कि गतिविधि नि होण से खिलाड़ि निराश जरूर ह्वेनि। पर कौथिग उर्योन्दरि संस्था कि नजर से देखे जाउ त उ बोल्दन कि ये कौथीग उर्याणा वास्ता तदगा समै नि मिलि, पैलि दौं अबारी इन कोशिश करेगि कि कार्यक्रम अपणी भाषा अर संस्कृति का वार-ध्वार रौन, ऐथर मौका आलु त ये कौथिग मा विस्तार कि भौत गुंजैश छन।

ये कौथिग का दौरान कखि भी अर कबि बि इनि नौबत नि आए कि कार्यक्रमु मा बिवस्था बणाणौं थाणा-पुलिस को तजबीज कन्न पड़ि हो। यु कार्यक्रम जनता का पैसा अर सहयोग से उर्यायेगे, इलै नगर मा कुछ इनो सि रैबार गै कि यु कौथीग हमारो अपणो छ। नगर का हरेक मनखिन ये कौथीग से अपणो जुड़ाव मैसूस करि। संस्था का कारबारी बतौंदन कि झणि किलै स्थानीय संस्थौं का लोग ये कौथीग का धोरा नि ऐनि। ये आयोजन का जरिया समाज का हर वर्ग का लोगु थैं एकजुट-एकमुट्ट कन्नै कोशिश करेगे।

या कोशिश ऐथर कतगा कामयाब होन्दी इ त बग्त हि बतालो, पर फिलहाल पौडी का स्थानीय समाज थैं एकजुट-एकमुट्ट कन्ना वास्ता अर अपणि कुछ अलग सी छाप छोड़णां वास्ता ये गढ़ महोत्सव थैं याद करे जालो।

❑❑

लैनु मा य लैन

मिलिगे तुमारी चिट्ठी, अच्छे की जबारि तुमुन चिट्ठी लेखी होली तबारि सर्जिकल स्ट्राइक अर अजीत डोभाल जी की चौतरफि हाम होंयी छै अर इबारि जब मि चिट्ठी लेखणू छौ तबारि लोग इखि ना सर्या देश मा लैन पर लग्यां छन कथगौं तैई कौंप्याट होयूं छ। कथगै रिंग रिट्वाळि करणा छन होलु बि किलै ना मोदि जीन पांच सौ अर एक हजारा नोट खतम जो करि देनि।

आज से पैलि इन त कबि नि ह्वे अर जब ह्वे छ त लोग खुश होयां छन जो एक हैंको गाळु काटी रूप्या कट्ठा कना छा सि अब रूप्यों देख देखी की फबस्वेणा छन। गरीब गुरूबों तैं लगणों छ कि यो बि ठिकी छ अर याबि सचि बात छ कि इन पैलि दां ह्वे कि गरीब बि अर अमीर बि एक दगड़ि एक लैन पर खड़ा ह्वेनि, निथर अमीर त सर्र जांदा छा भितर बैंक वळौं कि चा घतोळी बि आंदा छा अर गरीब लैन पर लग्यों रैंदो छौ। पर इबारि सब बरोबर।

जो रुप्यों का थुपड़ा लगैकि रंगमत होयां छा अब तौउंद इन ज्वाप पोड्यूं छ कि इन बि नि बोल सकणा छन कि हमुम रूप्या छन सि कबि कैकि अड-बिड मा काम नि आंदा छा अपणां रूप्यों की धौंस मा अब कैन औण तौका काम?

जो लाला कबि उधार नि देंदा छा इबारि हैंसद-हैंसद देणा छन दवै दारू वळा बि क्वी बात नी-क्वी बात नी बोली बोली दगड़ै खड़ा होणा छन। हमारा समाज की भै भयात अर मेल जोल कि ज्व परम्परा छै भौत साल बाद यूं 500 अर 1000 का नोट कि जड़घाम लगाण पर देखणो मिलि।

सरकारा न त रूप्या दबाण वळौं तै दबौणौ यनु काम करि पर ये चक्कर मा कति जगा द्वी झणौ कि बि यन होयीं छ कि मैस मोदी बण्यूं छ अर सैण काळाधन वळि। वींको बैंक त साड़ी, बक्सा, ड्वारा अर नर्यळौं का पेट छौ स्यो अचणचक खुलिगे अर वो काळोधन भैर ऐगे। सि जनानि बि अर लौण्या देणी छन वूं काळाधन वळौं तै जौन ये देश को पैसा लुकै। बोलणी छन कि करोड़ौ लुकाण वळौं का चक्कर मा हमारा सौ हजार बि काळाधन मा गणेणो छ अर अपणै परिवारा गणणा छन जौंका बाना हम लुकाणा, रंवा कि खैरि बिपदा मा काम आलो। क्या जणणै इन बितण निथर खैई ल्हेंदा, सौ सिंगार करदा, चट्टि पट्टि खांदा पर जीतम बि मार अर हैंसिबि ह्वेगे। हमारि खैरि कैन सुणणै कि अपणा आदिमा कपड़ा धूणो कबि नि रिसाया कि कपड़ै धोंद बगत कीसाउंदा छूटा पूटा पांच दस रूप्या समाळी धैर देंदा छा अर तथगा मै खुश होंया रौंदा छ कि फुका एक पोळि बढ़िगे आज स्यो सर्या बढ़ूयू बुढ़यूं वूंकै सुपुर्द करेणो छ जौंका किसा बिटि निकळदा छा वूंथै की मूंण टोटगि कैरी दिएणू अर वो खकचट कैरी हैंसद-हैंसद पकड़णा छन।

मोदी जीन वु चोर त पकड़ देणन जौंकि वजै से इतनो बड़ो काम करि वून पर हम त अपणै भितर पकड़े ग्यवां यां को क्य करण पर हमतैं छपछपि पर्णी छ कि हम पकड़े गेंवा क्वी बात नी छ पर होणू यो बढ़िया छ। अब बिना घूस का कखिम बाल बच्चौं का लगणै की त बात ही नि क्य पता अब कुछ उल्टे जौ मामलो। अजकाल त बाल बच्चा बेवौणौं नी छ पैसा घूस देणो कख बिटि औणू अर फिर घूस खंदरौं को ही रूप्या त ह्वे स्वाहा जो वर्षु बिटि कट्ठा करण पर लग्यां छा अचानक कन पड़ि हटकताळ क्या पता यांनै अंकल ऐजा। पैलि बोलदा छा कि 'खाया पिया अंग लगे लिया दिया संग चले' पर अब लगणो छ कि भलै अधा मा ही यानि खाया पिया अंग लगे मा ही छ लिया दिया को त कै बगत बि हिसाब मंगे सकेंद यान बो त संग नि चल सकदो अर संग चललो त जेल पौंछे सकद।

मि अपणां गौ मा टीवी रेडु मा ही देखणो सुणणो रंदो त अफ्वी अफु छौ अंदाज लगौणू कि यु देश आज तक कबि यन लेन पर नि लगि जन इबारि लग्यूं छ जो कबि यो देश मा बोट की लैन पर बि नि लगा सी बि लैन पर लग्यां छन अर यीं लैन की वजै से कथगै लैनु कि छ्वी लगौणा छन लोग जन मंदिर की लैन, गुरू माराज का आश्रम की लैन, दारू कि दुकान की लैन अब सब लैनु मा य लैन सबसे अच्छी मनेणी छ अर लोग बोलणा छन कि य लैन छ ज्व अपणा देश का वास्ता लगणी छ हम कुछ नि करि सकदा पर इतना त करि ही सकदौं।

बाकि तुमारि चिट्ठी मिलण पर

तुमारि रुकमा